श्री वृहद् गणधरवलय

विधान

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य
अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री वृहद् गणधरवलय विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम
प्रसंग	:	गुरु पूर्णिमा २०२१
लागत राशि	:	७०/-
मूल्य	:	स्वाध्याय
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. पंकज भैयाजी, ईसरी 8329806232 निखिल, सुशील जैन करैरा, शिवपुरी 9806380757, 9407202065
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

अन्तर्भाव

प्रभु और गुरु का नाम स्मरण मात्र करने से पाप समूह नष्ट हो जाते हैं। इसी भावना से ओतप्रोत होकर **संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत परमपूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** से कई लोगों ने गणधरवलय विधान की रचना का निवेदन किया था किन्तु **बा. ब्र. पंकज भैयाजी ईसरी ने जब मुनिश्री के समक्ष १४५२ गणधरों की आराधना करने हेतु विधान की रचना की भावना रखी** तब मुनिश्री ने उनकी भावना को पूर्ण करते हुए प्रभु भक्ति में आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत कृति **''श्री वृहद् गणधर वलय विधान''** की रचना करके महान् उपकार किया है। प्रस्तुत कृति में मुनिश्री के द्वारा वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों की आराधना करके उनके गणधरों की वंदना करते हुए विधान की रचना की है जिसके माध्यम से गणधर परमेष्ठियों की भक्ति करने का सुन्दर सोपान प्रदान किया है जो कि श्रावकों को भक्ति करने में पूर्ण सहयोगी बनेगी।

इस विधान से इष्ट कार्य की सिद्धि के साथ आत्मकल्याण एवं विश्वशान्ति की भावना पूर्ण हो और सभी तरह के रोग-शोकादि दूर हों तथा परमार्थ सुख की प्राप्ति हो इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना- 9425128817

पुण्यार्जक-परिवार

१. सौ. सुनिता सुकुमार दोशी, सौ. स्नेहा अभिनन्दन श्लोक दोशी खटावकर परिवार, मु. बारामती।

२. स्व. अनन्तमती मोतीचंद शहा (वाडीकर) यांच्या स्मरणार्थ पुत्र और पुत्री समस्त वाडीकर परिवार, सोलापुर।

३. श्री व सौ. पद्मजा विश्वजीत गाँधी, अकलुज।

४. बा. ब्र. निकिता पद्मकुमार शहा (सराफ), बारामती।

५. श्रीमती आशा, पुत्र अमोल महावीर डुड्डू (दहिगावकर), बारामती।

६. डॉ. श्री व सौ. निलिमा वर्धमान दोशी, नातेपुते।

७. श्रीमती मंजुषा कांतीलाल मोदी चिंचवड पुणे।

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥

तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहन्त देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करनतें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः।(पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू
लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं
पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्याएत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
येसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होईमंगलम्॥४॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट (नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य जी विरचित भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥२॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक येव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥
कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥
अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥
सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधु स्त्रवंतो ऽप्य मृतं स्त्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

===

देख सामने
प्रभु के दर्शन हैं
भूत को भूल

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अरिहन्तों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य (लय–चौबीसीवत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥

प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नन्दीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।

सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्‌रत्नत्रयाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्‌भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अरिहन्त सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः।प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-

सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे-मध्यप्रदेशे......जिलान्तर्गत.....मासोत्तममासे.....मासे..... पक्षे.... तिथौ.... वासरे....मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अरिहन्त शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(जल धारा...)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

❑ ❑ ❑

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

श्री वृहद् गणधर विधान

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः।
ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः॥

(जोगीरासा)

जन्म मरण में सभी दिगम्बर, आडम्बर फिर क्यों हो।
पापों का क्यों भरो समन्दर, करो वबण्डर क्यों हो॥
इन बिन्दू पर अन्तस चिन्तन, सो वैरागी होके।
हुए दिगम्बर मुक्तिवधू में, आतम रागी होके॥ ओम्...
खोज आतमा की करने को, वैरागी जी निकले।
किस साधन से मिले आतमा, मनमयूर भी मचले॥
अतः दिगम्बर सम्यक् गुरु की, करने खोज चले हैं।
तीर्थंकर के समवसरण में, चरणा पूज चले हैं॥ ओम्...
चरण पूज आचरण भजे फिर, हुए दिगम्बर मुनिया।
गुरु शिष्य की जय से गूँजे, धरती अम्बर दुनियाँ॥
गणधर का संयोग देखकर, दिव्य देशना होती।
शुद्धातम को मुख्य बनाकर, तत्त्व देशना होती॥ ओम्...
तत्त्व देशना सुनकर प्राणी, भव के रोग नशाएँ।
गणधर ज्ञानी जिनवाणी सुन, श्रुत संयोग बनाएँ॥
ऐसे गणधर गुरु की सेवा, सांसारिक सुख देती।
संकट रोग शोक सब हर के, महामोक्ष सुख देती॥ ओम्...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
गणधर गुरु को करके नमोऽस्तु , जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री चौबीसी पूजन

(मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय - चौबीसी पूजनवत्)

हम लाए प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने॥
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चंदन सम प्रभु के धाम, चंदन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चंदन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जो दे दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिनको पुंज धरें॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो॥
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बन्ध, सारे द्वन्द्व करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को॥
हम फल लाए जिनद्वार, निज के रागी हो॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

वर्तमान में गर्भ के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाएँ मिलें निज मुक्ति सों॥
भव चक्र निवारी, परिग्रह हारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शम्भव सम्भव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतल प्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित बसंत, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ॥४॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्ति यान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥
जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय ऋद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो॥
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जाएँ।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गाएँ॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आगे बनूँगा
प्रभु पदों में अभी
बैठ तो जाऊँ

श्री गणधर पूजन

स्थापना (दोहा)

वृषभसेन को आदि ले, गणधर अंत प्रभास।
चौदह सौ बावन भजें, कर के नमोऽस्तु दास॥

(ज्ञानोदय)

वृषभनाथ से महावीर के, चौदह सौ बावन गणधर।
दिव्य देशना प्रभु से सुनकर, हमें सुनाएँ करुणा कर॥
गुरु तो इतना देते हमको, हम उनको क्या दान करें।
यथाशक्ति गुरु भक्ति करें हम, गुरु सान्निध्य प्रदान करें॥

(दोहा)

हृदय वेदिका पर वसें, ज्ञानी गुणी गणेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, करुणा करो जिनेश॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरा अत्र अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(अष्टपदी-आँचलीबद्ध चौपाई) (लय–चौबीसी पूजा वत्)

जल से कर शुद्ध शरीर, दुख मिथ्यात्व हरें।
सो लाए प्रासुक नीर, आतम शुद्ध करें॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चंदन की खिली बहार, जग में हो मंगल।
फिर पाएँ चेतन सार, ताप करें शीतल॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अक्षय जिनशासन तीर्थ सबको तार रहा।
दो शुद्धातम का तीर्थ, भक्त पुकार रहा॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का पुष्प पराग, तुम सम चाह रहे।
खिल जाए आतम बाग, पुष्प चढ़ाय रहे॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

षट्रस के लेकर स्वाद, निज रस भूल रहे।
अब चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य, निज रस खोज रहे॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

लेकर पुद्गल के दीप, हो दीपावलियाँ।
जा बैठे आत्म समीप, दो सुख की गलियाँ॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

खेकर यह धूप दशांग, धूम्र उड़ाएँ रे।
अब कर्म जलें अष्टांग, निज चमकाएँ रे॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

श्रद्धा के फल हों ज्ञान, ज्ञान वही साँचे।
जो दें संयम निर्वाण, पाने हम नाँचें॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

श्रद्धालु लाए अर्घ्य, भेंट कृपालु को।
दो मुक्तिवधू का पर्व, आप दयालु हो॥
चौबीसों के मुनिराज, गणधर हम पूजें।
हम करके नमोऽस्तु आज, शुद्धातम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धी सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य
(शंभु)

हे! ज्ञानमूर्ति गणधर ज्ञानी, तुम तीर्थंकर के पुत्र रहे।
हम अज्ञानी जन के स्वामी, तुम ही तो साँचे मित्र रहे॥
अज्ञान अँधेरे से तारो, दो समवसरण का धाम हमें।
हम आतम ज्ञानी ध्यानी हों, हो विश्वशान्ति निर्वाण हमें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधिनः सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभसेनादि प्रभासपर्यंत सकल गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थकरों की देशना, जो सुनकर दें ज्ञान।
गणधर गुरु निर्ग्रन्थ का, हम करते गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! जिनशासन की, जय हो! तीर्थंकर प्रभु की।
जय हो! जय हो! श्रमण धर्म की, जय हो! मुनि गणधर गुरु की॥
गुरु शिष्य की परम्परा का, अद्‌भुत यह सम्मेलन है।
जो जयवंत रखें जिनशासन, झलकाता निज चेतन है॥१॥
तीर्थंकर अरिहन्त बने ज्यों, समवसरण में शोभित हों।
भरे खचाखच भव्यजनों से, तीन लोक में पूजित हों॥
कोठों के सब जीव चाहते, जल्दी सुन लें दिव्य ध्वनि।
पर जब तक गणधर गुरु ना हो, खिर ना सकती दिव्यध्वनि॥२॥
ज्यों ही दीक्षित हों गणधर त्यों, दिव्यध्वनि खिरने लगती।
नभ भू में ओंकार ध्वनि की, दिव्यनाद होने लगती॥
सात तत्त्व षट् द्रव्य आदि के, प्रभु सम्यक् उद्‌गार कहें।
द्वादशांग जिन गंगा माँ के, गणधर गुरु विस्तार करें॥३॥
गणधर ज्ञानी गंधकुटी की, दूजी कटनी पर शोभें।
जिनशासन का राज बताकर, हम भक्तों के मन मोहें॥
प्रभु के तत्त्व भक्त को सीधे, ग्राह्य कभी ना हो सकते।
नग्न दिगम्बर गणधर गुरु बिन, मन का मैल न धो सकते॥४॥
अतः कहें जिसके जीवन में, यदि निर्ग्रन्थ गुरु ना हो।

उन्हें दिगम्बर जैन न समझो, उनके जीवन शुरु ना हों॥
सो 'सुव्रत' की यही प्रार्थना, हर पल गुरु का सुमरण हो।
गुरु 'विद्या' को रहें समर्पित, गुरु चरणों में सु-मरण हो॥५॥

(सोरठा)

गणधर गुरु के नाम, चौदह सौ बावन भजें।
करके नमोऽस्तु ध्यान, चेतन के आंगन सजें॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधिनः सकल गणधर ऋषिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ऋद्धिधारी मुनिवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

कृपया इस पर ध्यान दें

इसके बाद जिन भगवान के गणधरों के अर्घ्य चढ़ाने हों उन भगवान की अलग से पूजन करना अनिवार्य नहीं है। (करना चाहें तो कर सकते हैं) सीधे अर्घ्यावली करके सबसे अंत में दी हुई समुच्चय जयमाला पढ़कर पूजन सम्पन्न कर सकते हैं।

श्री वृषभनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

भूत भविष्यत् आज भी, आदिप्रभु का नाम।
खुशियाँ दे कमियाँ हरे, अतः नमन अविराम॥

(शुद्ध गीता)

जिन्हें सुर नर सभी पूजें, जिन्हें ऋषि संत ध्याते हैं।
जिन्हें मन में वसा करके, भगत भव पार जाते हैं॥
जिन्होंने एक झटके में, कथा संसार की त्यागी।
उन्हीं की अर्चना करने, विनत हम हैं चरण रागी॥
मरुदेवी के नन्दन वो, वही नाभि के लाला हैं।
प्रथम जिनका मिला दर्शन, जिन्होंने धर्म पाला है॥
पतित भव्यों के जो स्वामी, जिन्होंने कर्म तोड़े हैं।
उन्हीं की वन्दना करने, भगत ने हाथ जोड़े हैं॥

(दोहा)

आदि ब्रह्म आदीश हैं, आदिनाथ भगवान्।
हृदय हमारे आइए, हम पूजें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्ध गीता)

सभी मानव यहाँ रोगी, दुखी संसार के जल से।
करो नीरोग हम सबको, तुम्हें हम पूजते जल से॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जलाता ताप भव का फिर, नमक भी घाव पर छिड़के।
तुम्हारी भक्ति का चंदन, हरे भव ताप बढ़-चढ़ के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं...।

सभी संसार के पद तो, दिए आपद घुमाते हैं।
मिटें आपद बनें अक्षय, तुम्हें तंदुल चढ़ाते हैं॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

सुगंधी काम की पाके, भ्रमर बन मर रहे प्राणी।
तुम्हारे चरण का सौरभ, हरे दुर्वेदना-कामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सभी पापों की जड़ रसना, रिसाने की तमन्ना है।
तुम्हें नैवेद्य कर अर्पण, हमें तुमसा ही बनना है॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अँधेरा टिक नहीं सकता, तुम्हारा नाम सुनकर के।
करो रोशन हमारा मन, उतारें आरती झुक के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जलाएँ धूप कर्मों की, चढ़ाएँ धूप जो स्वामी।
वही चमकें वही महकें, वसो जिसके हृदय स्वामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

विषैले फल सभी जग के, सुधा कह खा रहे हम तो।
प्रभु! विष वेदना हर लो, चढ़ा हम फल रहे तुमको॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवीं भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ के ८४ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

वृषभनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

वृषभनाथ के पहले गणधर, वृषभसेन स्वामी।
ज्यों पहुँचे तो वृषभनाथ की, खिरी दिव्यवाणी॥
जिनशासन फिर हुआ प्रवर्तित, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं वृषभसेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसेन गणधराय अर्घ्यं...॥१॥

वृषभनाथके दूजे गणधर, पूज्य गंग स्वामी।
सूक्ष्म तत्त्व का सूक्ष्म विवेचन, पाए कल्याणी॥
आत्म तत्त्व फिर हुआ सुशोभित, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अर्हं गंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गंग गणधराय अर्घ्यं...॥२॥

वृषभनाथ के तीजे गणधर, श्री गोथम स्वामी।
प्रभु से पाकर ज्ञान बाँटते, आतम कल्याणी॥
विश्वशान्ति के भाव बनाकर, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गोथम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गोथम गणधराय अर्घ्यं...॥३॥

वृषभनाथ के चौथे गणधर, गुरुवर जिन स्वामी।
बने जितेन्द्रिय कर्म विजेता, श्री अन्तर्यामी॥
व्रत संयम दीक्षा संरक्षक, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिन गणधराय अर्घ्यं...॥४॥

वृषभनाथ के पंचम गणधर, गुरु ईशान रहे।
ज्ञान मनः पर्यय गुणधारी, गुरु भगवान रहे॥
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि दाता, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री ईशान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ईशान गणधराय अर्घ्यं...॥५॥

वृषभनाथ के छठवें गणधर, गुरु स्पृह स्वामी।
त्रेसठ ऋद्धि के धारी जो, सब को वरदानी॥
आतम ज्ञान ऋद्धि पाने को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्पृह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्पृह गणधराय अर्घ्यं...॥६॥

वृषभनाथ के सप्तम गणधर, गुरु अनन्त स्वामी।
अनन्तगुण के हैं भण्डारी, शुद्धातम ध्यानी॥
आतम गुण अपने प्रकटाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनन्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त गणधराय अर्घ्यं...॥७॥

वृषभनाथ के अष्टम गणधर, अंतर्मन स्वामी।
अंतर आतम में रमते हैं, प्रभु के अनुगामी॥
तीर्थंकर के अनुचर बनने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अंतर्मन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अंतर्मन गणधराय अर्घ्यं...॥८॥

वृषभनाथ के नौवें गणधर, गुरु शेखर स्वामी।
प्रभु चरणों मे नित रहते हैं, आगम के ज्ञानी॥
लोक शिखर के वासी बनने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शेखर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शेखर गणधराय अर्घ्यं...॥९॥

वृषभनाथ के साखिर गणधर, सर्वमान्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री साखिर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री साखिर गणधराय अर्घ्यं...॥१०॥

वृषभनाथ के यश फैलाते, यशोबाहु आहा।
ओम् ह्रीं श्री यशोबाहु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री यशोबाहु गणधराय अर्घ्यं...॥११॥

वृषभनाथ के शिष्य नलित जी, नहिं लिप्त आहा।
ओम् ह्रीं श्री नलित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नलित गणधराय अर्घ्यं...॥१२॥

वृषभनाथ के संघ शिष्य हैं, गुरु लोकेश आहा।
ओम् ह्रीं श्री लोकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लोकेश गणधराय अर्घ्यं...॥१३॥

वृषभनाथ के सिद्ध स्वरूपी, सिद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिद्ध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध गणधराय अर्घ्यं...॥१४॥

वृषभनाथ के नेमि सारथी, धर्मरथी आहा।
ओम् ह्रीं श्री नेमि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नेमि गणधराय अर्घ्यं...॥१५॥

वृषभनाथ के सूत्र-मंत्र दें, गुरु पंथा आहा।
ओम् ह्रीं श्री पंथा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पंथा गणधराय अर्घ्यं...॥१६॥

वृषभनाथ के शिष्य महीधर, महाव्रती आहा।
ओम् ह्रीं श्री महीधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महीधर गणधराय अर्घ्यं...॥१७॥

वृषभनाथ के मयासि गणधर, विश्वासी आहा।
ओम् ह्रीं श्री मयासि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मयासि गणधराय अर्घ्यं...॥१८॥

वृषभनाथ के तत्त्व प्रदाता, तायासि आहा।
ओम् ह्रीं श्री तायासि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तायासि गणधराय अर्घ्यं...॥१९॥

वृषभनाथ के गुरुदत्त हैं, अपने गुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुरुदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुरुदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥२०॥

वृषभनाथ के कुल-दीपक हैं, कुलगति गुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुलगति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुलगति गणधराय अर्घ्यं...॥२१॥

वृषभनाथ के केवल गणधर, केवल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री केवल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केवल गणधराय अर्घ्यं...॥२२॥

वृषभनाथ के कुन्दन जैसे, कनकप्रभा आहा।
ओम् ह्रीं श्री कनकप्रभा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कनकप्रभा गणधराय अर्घ्यं...॥२२

वृषभनाथ के शिष्य सुकेवल, गणधर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुकेवल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुकेवल गणधराय अर्घ्यं...॥२३॥

वृषभनाथ कृतमन्य नाम के, रखें शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृतमन्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृतमन्य गणधराय अर्घ्यं...॥२५॥

वृषभनाथ के सदेशि गणधर, दोष हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सदेशि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सदेशि गणधराय अर्घ्यं...॥२६॥

वृषभनाथ के सर्वगुणी हैं, सर्वप्रिय आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वप्रिय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वप्रिय गणधराय अर्घ्यं...॥२७॥

वृषभनाथ के शिष्य सकलप्रभ, सकलव्रती आहा।
ओम् ह्रीं श्री सकलप्रभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सकलप्रभ गणधराय अर्घ्यं...॥२८॥

वृषभनाथ के त्रिपुष्टि जी, देें तुष्टी आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्रिपुष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिपुष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥२९॥

वृषभनाथ के धरपुष्टि जी, दें दृष्टि आहा।
ओम् ह्रीं श्री धरपुष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धरपुष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥३०॥

वृषभनाथ के सरोजपुष्टि, दें पुष्टि आहा।
ओम् ह्लीं श्री सरोजपुष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सरोजपुष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥३१॥

वृषभनाथ के वत्यमुनि दें, वात्सल्य आहा।
ओम् ह्लीं श्री वत्यमुनि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वत्यमुनि गणधराय अर्घ्यं...॥३२॥

वृषभनाथ के धृतपुष्टि दें, धीरज गुण आहा।
ओम् ह्लीं श्री धृतपुष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धृतपुष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥३३॥

वृषभनाथ के पुष्पकान्त हैं, परमपूज्य आहा।
ओम् ह्लीं श्री पुष्पकान्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पकान्त गणधराय अर्घ्यं...॥३४॥

वृषभनाथ के हस्तगाम हैं, हास्यजयी आहा।
ओम् ह्लीं श्री हस्तगाम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री हस्तगाम गणधराय अर्घ्यं...॥३५॥

वृषभनाथ के सुरपूजित हैं, शिष्य सुरै आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुरै गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुरै गणधराय अर्घ्यं...॥३६॥

वृषभनाथ के यस्यो गणधर, यमजेता आहा।
ओम् ह्लीं श्री यस्यो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री यस्यो गणधराय अर्घ्यं...॥३७॥

वृषभनाथ के सुरेन्द्र गणधर, स्वस्थ करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुरेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुरेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥३८॥

वृषभनाथ के वर्धमान दें, बुद्धिमंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री वर्धमान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान गणधराय अर्घ्यं...॥३९॥

वृषभनाथ के शिष्य सुधिष्टर, स्थिर हैं, आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुधिष्टर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुधिष्टर गणधराय अर्घ्यं...॥४०॥

वृषभनाथ के केचिद्वर हैं, कुलधारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री केचिद्वर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केचिद्वर गणधराय अर्घ्यं...॥४१॥

वृषभनाथ के दीक्षित गणधर, दीक्षा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दीक्षित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दीक्षित गणधराय अर्घ्यं...॥४२॥

वृषभनाथ के शिष्य उपागत, हैं स्वागत आहा।
ओम् ह्रीं श्री उपागत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उपागत गणधराय अर्घ्यं...॥४३॥

वृषभनाथ के श्रुत्वानिर्वेद, श्रुतधारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रुत्वानिर्वेद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुत्वानिर्वेद गणधराय अर्घ्यं...॥४४॥

वृषभनाथ के सुरेन्द्र गणधर, सर्व सुखी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुरेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुरेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥४५॥

वृषभनाथ जिननाथ नाम के, शिष्य रखें आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिननाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिननाथ गणधराय अर्घ्यं...॥४६॥

वृषभनाथ के शिष्य विभूषण, जगभूषण आहा।
ओम् ह्रीं श्री विभूषण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विभूषण गणधराय अर्घ्यं...॥४७॥

वृषभनाथ के सुरास्तम्भ हैं, धर्मस्तम्भ आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुरास्तम्भ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुरास्तम्भ गणधराय अर्घ्यं...॥४८॥

वृषभनाथ के विचित्रकोट हैं, वैरागी आहा।
ओम् ह्रीं श्री विचित्रकोट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विचित्रकोट गणधराय अर्घ्यं...॥४९॥

वृषभनाथ के चंद्रप्रभ गणधर, चंद्रमणि आहा।
ओम् ह्रीं श्री चंद्रप्रभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ गणधराय अर्घ्यं...॥५०॥

वृषभनाथ के शिष्य कृष्ण जी, क्लेश हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृष्ण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कृष्ण गणधराय अर्घ्यं...॥५१॥

वृषभनाथ के प्राव्राजी हैं, ज्ञानी गुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्राव्राजी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्राव्राजी गणधराय अर्घ्यं...॥५२॥

वृषभनाथ के शिष्य अर्हमन, आगम दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अर्हमन गणधराय नमो नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्री अर्हमन गणधराय अर्घ्यं...॥५३॥

वृषभनाथ के विजयाखिल दें, विजय मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री विजयाखिल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विजयाखिल गणधराय अर्घ्यं...॥५४॥

वृषभनाथ के सवेग गणधर, सविनय हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सवेग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सवेग गणधराय अर्घ्यं...॥५५॥

वृषभनाथ के कुलकर गणधर, कुंदन हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री कुलकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुलकर गणधराय अर्घ्यं...॥५६॥

वृषभनाथ के सिंलाप गणधर, संस्कारी आहा।
ओम् ह्लीं श्री सिंलाप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिंलाप गणधराय अर्घ्यं...॥५७॥

वृषभनाथ के विशाल गणधर, विशाल करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री विशाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विशाल गणधराय अर्घ्यं...॥५८॥

वृषभनाथ के वरुण शिष्य दें, ब्रह्मज्ञान आहा।
ओम् ह्लीं श्री वरुण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वरुण गणधराय अर्घ्यं...॥५९॥

वृषभनाथ के भैरव गणधर, भय हर्त्ता आहा।
ओम् ह्लीं श्री भैरव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भैरव गणधराय अर्घ्यं...॥६०॥

वृषभनाथ के समकीर्ति हैं, साम्यधनी आहा।
ओम् ह्लीं श्री समकीर्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समकीर्ति गणधराय अर्घ्यं...॥६१॥

वृषभनाथ के सोमसेन जी, सौम्यरूप आहा।
ओम् ह्लीं श्री सोमसेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सोमसेन गणधराय अर्घ्यं...॥३२॥

वृषभनाथ के सुदृष्टि जी, समदृष्टि आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुदृष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥६३॥

वृषभनाथ के रजो शिष्य हैं, राजगुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री रजो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रजो गणधराय अर्घ्यं...॥६४॥

वृषभनाथ के विशालाक्ष जी, विशाल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विशालाक्ष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विशालाक्ष गणधराय अर्घ्यं...॥६५॥

वृषभनाथ के मागधदृढ़ जी, महागुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री मागधदृढ़ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मागधदृढ़ गणधराय अर्घ्यं...॥६६॥

वृषभनाथ के महाछेद जी, महामुनि आहा।
ओम् ह्रीं श्री महाछेद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महाछेद गणधराय अर्घ्यं...॥६७॥

वृषभनाथ के शिष्य वज्रतर, वज्रबली आहा।
ओम् ह्रीं श्री वज्रतर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वज्रतर गणधराय अर्घ्यं...॥६८॥

वृषभनाथ के वज्रसार जी, वज्रगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री वज्रसार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वज्रसार गणधराय अर्घ्यं...॥६९॥

वृषभनाथ के मारिच्छेद जी, मृत्युंजय आहा।
ओम् ह्रीं श्री मारिच्छेद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मारिच्छेद गणधराय अर्घ्यं...॥७०॥

वृषभनाथ के भगवन गणधर, भव्यातम आहा।
ओम् ह्रीं श्री भगवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भगवन गणधराय अर्घ्यं...॥७१॥

वृषभनाथ के शक्ति शिष्य जी, शक्ति दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री शक्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शक्ति गणधराय अर्घ्यं...॥७२॥

वृषभनाथ के चिद्रूप गणधर, चिन्मय हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिद्रूप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चिद्रूप गणधराय अर्घ्यं...॥७३॥

वृषभनाथ के निर्मल गणधर, निर्विकार आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्मल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मल गणधराय अर्घ्यं...॥७४॥

वृषभनाथ के अरूप गणधर, रूप हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरूप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अरूप गणधराय अर्घ्यं...॥७५॥

वृषभनाथ के त्वांस्तविमि जी, तत्त्वरूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्वांस्तविमि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री त्वांस्तविमि गणधराय अर्घ्यं...॥७६॥

वृषभनाथ के वाल्मीक हैं, बाल नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वाल्मीक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वाल्मीक गणधराय अर्घ्यं...॥७७॥

वृषभनाथ के अनन्तनाथ जी, अंनतगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनन्तनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥७८॥

वृषभनाथ के शिष्य नंदिता, नन्द दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री नंदिता गणधराय नमो नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री नंदिता गणधराय अर्घ्यं...॥७९॥

वृषभनाथ के परमपूज्य जी, परमपूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री परमपूज्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परमपूज्य गणधराय अर्घ्यं...॥८०॥

वृषभनाथ के श्रृत्वाधृत जी, श्रुतधारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रृत्वाधृत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रृत्वाधृत गणधराय अर्घ्यं...॥८१॥

वृषभनाथ के जल्लो गणधर, जल्लौषध आहा।
ओम् ह्रीं श्री जल्लो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जल्लो गणधराय अर्घ्यं...॥८२॥

वृषभनाथ के नोमद गणधर, नाम किए आहा।
ओम् ह्रीं श्री नोमद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नोमद गणधराय अर्घ्यं...॥८३॥

वृषभनाथ के चामर गणधर, चारुचन्द्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री चामर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चामर गणधराय अर्घ्यं...॥८४॥

पूर्णार्घ्य

(माता तू दया कर के)

प्रभु वृषभनाथ के हैं, श्री वृषभसेन पहले।
अंतिम हैं चामर जी, चौरासी शिष्य भले॥
अपनों को छोड़ दिए, अपने को पाने को।
हम कर नमोऽस्तु आए, यह अर्घ्य चढ़ाने को॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथस्य वृषभसेन-आदि चतुरशीति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथस्य वृषभसेनादि चतुरशीति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

वृषभनाथ भगवान् के, चौरासी गणराज।
पूजे जो धर ध्यान वह, पाए सुख साम्राज्य॥

(ज्ञानोदय)

वृषभदेव या आदिदेव जो, ब्रह्मदेव पुरुदेव रहे।
मरुदेवी या नाभिराय सुत, प्रथमदेव जिनदेव कहे॥
जिनके सहस्रनाम हुए जो, आदि प्रवर्तक कहलाए।
ऐसे पहले तीर्थंकर के, गुण गाने हम भी आए॥ १॥
तज सर्वार्थसिद्धि सुर आलय, नगर अयोध्या अवतारे।
नाभिराय मरुदेवी के घर, आदि ब्रह्म आए प्यारे॥
एक हजार वर्ष तप करके, हुए केवली श्री जिनवर।
चौरासी गणधर में पहले, वृषभसेन अंतिम चामर॥२॥
गुरु शिष्यों की अनुपम जोड़ी, दिव्यध्वनि फिर खिरी-खिरी।
धर्म तत्त्व उपदेश दिया सो, भक्तों की आतम निखरी॥
समवसरण तो मिला न हमको, मिले नहीं गणधर स्वामी।
फिर भी हम यह करें प्रार्थना, मिले शिष्यता कल्याणी॥३॥
हे स्वामी! बस नाम आपका, हरता संकट द्वन्द्व यहाँ।
हरे दुराग्रह संग्रह परिग्रह, दे चैतन्यानन्द महा॥
पर स्वार्थी तव नाम बाँधते, गुरु ग्रह के परिहारों से।
वे क्या जाने गुरु ग्रह टलता, बस तेरे जयकारों से॥४॥
गुण गाने का मात्र प्रयोजन, आपस में वात्सल्य फले।

तत्त्व स्वरूप विचारें सब जन, राग-द्वेष की शल्य टले॥
'विद्या-सुव्रत' सब स्वीकारें, रहे सभी का मन चंगा।
विश्व शान्ति हो, सभी मुक्त हों, बहती रहे धर्म गंगा॥५॥

(दोहा)

वृषभनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
वृषभसेन सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसेनादि चतुरशीति गणधर सहित श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य वृषभ प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

छोटा भले हो
दर्पण मिले साफ
खुद को देखो

श्री अजितनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अजितनाथ भगवान् को, मन मंदिर में धार।
करें भक्ति आराधना, सुखी बने संसार॥

(हरिगीतिका)

दूजे जिनेश्वर प्रभु अजितजी, नाथ! भक्तों के रहे।
काया सुनहरी सी चमकती, स्वर्ग के त्यागी रहे॥
हो मोह शत्रु के विजेता, धर्म के नेता रहे।
हम भी बनें रिपु कर्मजेता, मोक्ष पर ललचा रहे॥

(दोहा)

अजितनाथ तीर्थेश का, हाथी चिह्न महान्।
जिनकी अर्चा हम करें, हाथ जोड़ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं....)

मिथ्यात्व के विष नीर से तो, हम सदा मरते रहे।
फिर जन्म मृत्यु की व्यथाएँ, रोज हम सहते रहे॥
सम्यक्त्व श्रद्धा जल मिले भव, -रोग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्या मूल्य चंदन का रहा जब, चरण चंदन पा गए।
फिर भी करें हम अर्चना तो, शरण प्रभु की आ गए॥
हमको मिले निर्मल चिदातम, ताप का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पर्याय पुद्गल की विनश्वर, में फँसा अज्ञान है।

जिन भक्ति से शिव मुक्ति हो, इस भक्त का अरमान है॥
उज्ज्वल धवल अक्षत चढ़ा, भव चक्र का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कामांध से व्याकुल हमें तो, गालियाँ पल-पल मिलीं।
ना भक्ति की कलियाँ खिलीं ना, मुक्ति की गलियाँ मिलीं॥
चारित्र से चेतन सजे अब, काम का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

तन की तनिक सी भूख से हम, रात-दिन व्याकुल हुए।
कब भूख मन की दूर हो यह, सोच हम आकुल हुए॥
संयम मिले नैवेद्य अर्पण, से क्षुधा परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मिथ्या मोह तम से, रो रही है आतमा।
साँची क्रिया प्रभु अर्चना, खोयी कहाँ परमातमा॥
जिन-दीप से निज-दीप उजले, मोह का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

हम आज तक तो जल न पाए, किन्तु फिर भी जल रहे।
रत्नत्रयों के बिन तपस्या, ज्ञान तप निष्फल रहे॥
अब धूप खे जिन रूप पाएँ, कर्म का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

क्या राग के क्या द्वेष के क्या, मोह के फल मिल रहे।
भूले तुम्हें भूले हमें हम, हाय! किस काबिल रहे॥
जिन-भक्ति फल वैराग्य पाएँ, राग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ्य स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्णा ज्येष्ठ अमास को, छोड़ा विजय विमान।
विजया माँ के गर्भ में, वसे अजित भगवान्॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गए अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री अजितनाथ के ९० गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

अजितनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

अजितनाथ के पहले गणधर, सिंहसेन आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंहसेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहसेन गणधराय अर्घ्यं...॥१॥

अजितनाथ के दूजे गणधर, चक्री हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री चक्री गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चक्री गणधराय अर्घ्यं...॥२॥

अजितनाथ के तीजे गणधर, रथनो हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री रथनो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रथनो गणधराय अर्घ्यं...॥३॥

अजितनाथ के मंदिर-स्थित चौथे हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मंदिरस्थित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मंदिरस्थित गणधराय अर्घ्यं...॥४॥

अजितनाथ के पंचव्रती हैं, श्रुत गणधर आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रुत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुत गणधराय अर्घ्यं...॥५॥

अजितनाथ के शिष्य कृतकमल, गणधर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृतकमल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृतकमल गणधराय अर्घ्यं...॥६॥

अजितनाथ के गंगाखेट दें, ज्ञानामृत आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंगाखेट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गंगाखेट गणधराय अर्घ्यं...॥७॥

अजितनाथ के कच्छी शिष्य हैं, कुंदनसम आहा।
ओम् ह्रीं श्री कच्छी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कच्छी गणधराय अर्घ्यं...॥८॥

अजितनाथ के नटसी गणधर, तपसी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नटसी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नटसी गणधराय अर्घ्यं...॥९॥

अजितनाथ के ततपुर गणधर, तत्पर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ततपुर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ततपुर गणधराय अर्घ्यं...॥१०॥

अजितनाथ के करें पराक्रम, विक्रम गुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री विक्रम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विक्रम गणधराय अर्घ्यं...॥११॥

अजितनाथ के शिष्य समाधिश, समाधान आहा।
ओम् ह्रीं श्री समाधिश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समाधिश गणधराय अर्घ्यं...॥१२॥

अजितनाथ के उपाद गणधर, उपवासी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उपाद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उपाद गणधराय अर्घ्यं...॥१३॥

अजितनाथ के बलधर गणधर, बलदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री बलधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बलधर गणधराय अर्घ्यं...॥१४॥

अजितनाथ के विवेकसी जी, विवेक दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विवेकसी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विवेकसी गणधराय अर्घ्यं...॥१५॥

अजितनाथ के नामस्थित हैं, सोलहवें आहा।
ओम् ह्रीं श्री नामस्थित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नामस्थित गणधराय अर्घ्यं...॥१६॥

अजितनाथ के गौतम गणधर, गुप्ति धरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गौतम गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधराय अर्घ्यं...॥१७॥

अजितनाथ के गुणग्रण्या जी, गुणधारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणग्रण्या गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुणग्रण्या गणधराय अर्घ्यं...॥१८॥

अजितनाथ के राधिप गणधर, रोग हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री राधिप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री राधिप गणधराय अर्घ्यं...॥१९॥

अजितनाथ के शिष्य अलौकिक, अलोकांत आहा।
ओम् ह्रीं श्री अलोकांत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अलोकांत गणधराय अर्घ्यं...॥२०॥

अजितनाथ के अगम्य गणधर, ज्ञानगम्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री अगम्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अगम्य गणधराय अर्घ्यं...॥२१॥

अजितनाथ के बिन्दु नाम के, गुणी शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री बिन्दु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री बिन्दु गणधराय अर्घ्यं...॥२२॥
अजितनाथ के सर्वज्ञ गणधर, छात्र रखें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वज्ञ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञ गणधराय अर्घ्यं...॥२३॥
अजितनाथ के अशोक गणधर, शोक हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अशोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अशोक गणधराय अर्घ्यं...॥२४॥
अजितनाथ के महर्षि गणधर, महा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री महर्षि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री महर्षि गणधराय अर्घ्यं...॥२५॥
अजितनाथ के बीजबुद्धि दें, बुद्धि मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री बीजबुद्धि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री बीजबुद्धि गणधराय अर्घ्यं...॥२६॥
अजितनाथ के परमावधि हैं, परम गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री परमावधि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री परमावधि गणधराय अर्घ्यं...॥२७॥
अजितनाथ के गगनगामी हैं, गगन तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री गगनगामी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गगनगामी गणधराय अर्घ्यं...॥२८॥
अजितनाथ के सर्वावधि हैं, सदा सुखी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वावधि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वावधि गणधराय अर्घ्यं...॥२९॥

अजितनाथ के परसी गणधर, पारसमणि आहा।
ओम् ह्लीं श्री परसी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥१॥

ॐ ह्रीं श्री परसी गणधराय अर्घ्यं...॥३०॥

अजितनाथ के विहाय गणधर, विघ्न हरण आहा।
ओम् ह्लीं श्री विहाय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विहाय गणधराय अर्घ्यं...॥३१॥

अजितनाथ के जीववृंद दें, शुद्धजीव आहा।
ओम् ह्लीं श्री जीववृंद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जीववृंद गणधराय अर्घ्यं...॥३२॥

अजितनाथ के अक्षीण गणधर, अक्षीण हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अक्षीण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण गणधराय अर्घ्यं...॥३३॥

अजितनाथ के ऋजुमति गणधर, आर्जव हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री ऋजुमति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमति गणधराय अर्घ्यं...॥३४॥

अजितनाथ के सम्यक्त्व गणधर, समयसार आहा।
ओम् ह्लीं श्री सम्यक्त्व गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्त्व गणधराय अर्घ्यं...॥३५॥

अजितनाथ के सर्वज्ञपुत्र हैं, सर्वसुखी आहा।
ओम् ह्लीं श्री सर्वज्ञपुत्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञपुत्र गणधराय अर्घ्यं...॥३६॥

अजितनाथ के कृत्प्रदान हैं, कर्मजयी आहा।
ओम् ह्लीं श्री कृत्प्रदान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्प्रदान गणधराय अर्घ्यं...॥३७॥

अजितनाथ के परोपकार हैं, परमातम आहा।
ओम् ह्रीं श्री परोपकार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री परोपकार गणधराय अर्घ्यं...॥३८॥

अजितनाथ के परमोहि हैं, परम ऋषि हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री परमोहि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री परमोहि गणधराय अर्घ्यं...॥३९॥

अजितनाथ के शिष्य लोकवित, लोकजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री लोकवित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री लोकवित गणधराय अर्घ्यं...॥४०॥

अजितनाथ के दयांकुरू हैं, दयाधर्म आहा।
ओम् ह्रीं श्री दयांकुरू गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दयांकुरू गणधराय अर्घ्यं...॥४१॥

अजितनाथ के चारण गणधर, चिदानन्द आहा।
ओम् ह्रीं श्री चारण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चारण गणधराय अर्घ्यं...॥४२॥

अजितनाथ के शिष्य पथो हैं, पथ दर्शक आहा।
ओम् ह्रीं श्री पथो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पथो गणधराय अर्घ्यं...॥४३॥

अजितनाथ के शिष्य गुरु हैं, गुणज्ञाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुरु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गुरु गणधराय अर्घ्यं...॥४४॥

अजितनाथ के शिष्य नाथ हैं, नाथनाथ आहा।
ओम् ह्रीं श्री नाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नाथ गणधराय अर्घ्यं...॥४५॥

अजितनाथ के वर्णाभ गणधर, वैरागी आहा।
ओम् ह्रीं श्री वर्णाभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वर्णाभ गणधराय अर्घ्यं...॥४६॥

अजितनाथ के शुद्धार्थ गणधर, शुद्ध धर्म आहा।
ओम् ह्रीं श्री शुद्धार्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शुद्धार्थ गणधराय अर्घ्यं...॥४७॥

अजितनाथ के उपदेशी हैं, उपदेशक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उपदेशी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उपदेशी गणधराय अर्घ्यं...॥४८॥

अजितनाथ के रतिदान गणधर, रतिजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री रतिदान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री रतिदान गणधराय अर्घ्यं...॥४९॥

अजितनाथ के वबन्ध गणधर, बंधजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री वबन्ध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वबन्ध गणधराय अर्घ्यं...॥५०॥

अजितनाथ के शत्रव गणधर, शत्रुजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री शत्रव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रव गणधराय अर्घ्यं...॥५१॥

अजितनाथ के शिष्य गंग हैं, गुणगंगा आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गंग गणधराय अर्घ्यं...॥५२॥

अजितनाथ के दृष्टकोटि हैं, द्रव्यगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री दृष्टकोटि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दृष्टकोटि गणधराय अर्घ्यं...॥५३॥

अजितनाथ के अयागमन दें, अवसर सुख आहा।
ओम् ह्रीं श्री अयागमन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अयागमन गणधराय अर्घ्यं...॥५४॥

अजितनाथ के स्थिति गणधर, स्तुत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्थिति गणधराय अर्घ्यं...॥५५॥

अजितनाथ के जर्जित गणधर, जरा हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री जर्जित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जर्जित गणधराय अर्घ्यं...॥५६॥

अजितनाथ के पूर्णचन्द्र हैं, पूर्णचैत्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री पूर्णचन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्णचन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥५७॥

अजितनाथ के शिष्य विदारित, विधाता हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विदारित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विरादित गणधराय अर्घ्यं...॥५८॥

अजितनाथ के शिष्य मत्सदा, मत्सर-जय आहा।
ओम् ह्रीं श्री मत्सदा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मत्सदा गणधराय अर्घ्यं...॥५९॥

अजितनाथ के ख्यात शिष्य हैं, ख्यातिवान आहा।
ओम् ह्रीं श्री ख्यात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ख्यात गणधराय अर्घ्यं...॥६०॥

अजितनाथ के गंगादत्तजी, ज्ञानतत्त्व आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंगादत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गंगादत्त गणधराय अर्घ्यं...॥६१॥

अजितनाथ के द्रोणीन्द्र गणधर, देवपूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री द्रोणीन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणीन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥६२॥

अजितनाथ के कालेन्द्र गणधर, कालजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कालेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कालेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥६३॥

अजितनाथ के वसालधू हैं, वृषभधर्म आहा।
ओम् ह्रीं श्री वसालधू गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वसालधू गणधराय अर्घ्यं...॥६४॥

अजितनाथ के निषोध गणधर, निंद हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री निषोध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निषोध गणधराय अर्घ्यं...॥६५॥

अजितनाथ के सूतंब गणधर, संस्तुत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सूतंब गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सूतंब गणधराय अर्घ्यं...॥६६॥

अजितनाथ के वेदांग गणधर, वेदागी आहा।
ओम् ह्रीं श्री वेदांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वेदांग गणधराय अर्घ्यं...॥६७॥

अजितनाथ के जनकांति हैं, जैनकांति आहा।
ओम् ह्रीं श्री जनकांति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जनकांति गणधराय अर्घ्यं...॥६८॥

अजितनाथ के शांतयेन हैं, शान्ति करे आहा।
ओम् ह्रीं श्री शांतयेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शांतयेन गणधराय अर्घ्यं...॥६९॥

अजितनाथ के उपशान्ति हैं, उपकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उपशान्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उपशान्ति गणधराय अर्घ्यं...॥७०॥

अजितनाथ के सुवीर्य गणधर, सुवीर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुवीर्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुवीर्य गणधराय अर्घ्यं...॥७१॥

अजितनाथ के शिष्य सुताजय, सुतारक आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुताजय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुताजय गणधराय अर्घ्यं...॥७२॥

अजितनाथ के चित्रविरीच हैं, चित्रचैत्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री चित्रविरीच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चित्रविरीच गणधराय अर्घ्यं...॥७३॥

अजितनाथ के मृतेश गणधर, महाव्रती आहा।
ओम् ह्रीं श्री मृतेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मृतेश गणधराय अर्घ्यं...॥७४॥

अजितनाथ के स्वास्ति गणधर, स्वस्ति करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वास्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्वास्ति गणधराय अर्घ्यं...॥७५॥

अजितनाथ के राजस्थिर हैं, राजऋषि आहा।
ओम् ह्रीं श्री राजस्थिर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री राजस्थित गणधराय अर्घ्यं...॥७६॥

अजितनाथ के भाभृति गणधर, भानुतुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री भाभृति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भाभृति गणधराय अर्घ्यं...॥७७॥

अजितनाथ के स्तकंथ हैं, स्थाई आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्तकंथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्तकंथ गणधराय अर्घ्यं...॥७८॥

अजितनाथ के उदत शिष्य हैं, उदारगुण आहा।
ओम् ह्रीं श्री उदत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उदत गणधराय अर्घ्यं...॥७९॥

अजितनाथ के संजात गणधर, संधानी आहा।
ओम् ह्रीं श्री संजात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संजात गणधराय अर्घ्यं...॥८०॥

अजितनाथ के संयत गणधर, संयत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री संयत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संयत गणधराय अर्घ्यं...॥८१॥

अजितनाथ के अपूर्व गणधर, अतिशय हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अपूर्व गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अपूर्व गणधराय अर्घ्यं...॥८२॥

अजितनाथ के भास्कर गणधर, भाषाविद आहा।
ओम् ह्रीं श्री भास्कर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भास्कर गणधराय अर्घ्यं...॥८३॥

अजितनाथ के शिष्य जिनोत्तम, जग-उत्तम आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिनोत्तम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनोत्तम गणधराय अर्घ्यं...॥८४॥

अजितनाथ के चैत्यपुरुष हैं, चेतन धन आहा।
ओम् ह्रीं श्री चैत्यपुरुष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्यपुरुष गणधराय अर्घ्यं...॥८५॥

अजितनाथ के मन्यसि गणधर, मान्य रहे आहा।
ओम् ह्लीं श्री मन्यसि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मन्यसि गणधराय अर्घ्यं...॥८६॥

अजितनाथ के गौरांकिता जी, गुणज्ञ हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री गौरांकिता गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गौरांकिता गणधराय अर्घ्यं...॥८७॥

अजितनाथ के प्रसिद्धन्तु जी, प्रसन्न हो आहा।
ओम् ह्लीं श्री प्रसिद्धन्तु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रसिद्धन्तु गणधराय अर्घ्यं...॥८८॥

अजितनाथ के द्रुपद गणधर, दान तीर्थ आहा।
ओम् ह्लीं श्री द्रुपद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री द्रुपद गणधराय अर्घ्यं...॥८९॥

अजितनाथ के शिष्य मृनागत, महात्मा हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री मृनागत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मृनागत गणधराय अर्घ्यं...॥९०॥

पूर्णार्घ्य

(जोगीरासा)

अजितनाथ के सिंहसेन हैं, पहले गणधर ज्ञानी।
अंतिम रहे मृनागत गणधर, कुल नब्बे निजध्यानी॥
प्रभु के शिष्य गुरू भक्तों के, दुख अज्ञान नशाएँ।
'विद्या' के 'सुव्रत' नमोऽस्तु कर, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथस्य सिंहसेन-आदि नवति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथस्य सिंहसेनादि नवति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

अजितनाथ प्रभु के रहे नब्बे शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जो जीवन में सफल न होते, जिन्हें सफलता इष्ट रही।
यहाँ वहाँ वो कभी न भटकें, करें न आतम भ्रष्ट कहीं॥
केवल अजित प्रभु की पूजा, गणधर जैसी रच डालें।
मन चाहा वरदान मिलेगा, शीघ्र सफलता भी पा लें॥१॥
वैजयन्त विमान को तजकर, नगर अयोध्या अजित हुए।
जितशत्रु विजया देवी के, अजित केवली ईश हुए॥
शिष्य प्रथम थे सिंहसेन जी, अंतिम हुए अनागत जी।
गुरु शिष्यों की परम्परा का, हम भी कर लें स्वागत जी॥२॥
सुनो! एक सौ सत्तर पद जो, तीर्थंकर के बतलाए।
अजितनाथ के शासन में वो, भरे जिनागम गुण गाए॥
द्वितीय होकर अद्वितीय जो, अजितनाथ भगवान् हुए।
जिनका नाम अकेला सुनकर, शिष्यों के कल्याण हुए॥३॥
अजितनाथ के गणधर जैसे, हमको भी सौभाग्य मिले।
इसी भाव से भक्ति प्रार्थना, करके अपना भाग्य खिले॥
अतः पूजकर नब्बे गणधर, श्रेष्ठ शिष्य बनना चाहें।
गुरु आज्ञा में रहकर हमको, मिले मोक्ष सुख की राहें॥४॥
शक्ति भक्ति क्या?भुक्ति मुक्ति क्या?, हमको इसका ज्ञान नहीं।
राग द्वेष क्या, मोह पाप क्या, इसकी भी पहचान नहीं॥

पर शिष्यों सम चिदानन्द को, 'सुव्रत' पाने ललचाए।
अतः अर्चना की गंगा में, अवगाहन करने आए॥५॥

(दोहा)

अजितनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
सिंहसेन सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहसेनादि नवति गणधर सहित श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य अजित प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

उन्हें जिनके
तन-मन नग्न हैं
मेरा नमन!

श्री शम्भवनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तन से तो दूरी रही, मन से नहिं प्रभु दूर।
दूरी मजबूरी मिटे, यों हो कृपा जरूर॥

(ज्ञानोदय)

शम्भवप्रभु के पद पंकज में, हमने शीश झुकाया है।
भाग्योदय पुण्योदय अब हो, यही भाव मन आया है॥
काल अनन्त गंवाया हमने, शाम सबेरे नित टेरा।
विसराओ ना देर लगाओ, दो डेरा हर लो फेरा॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(अडिल्ल)

मिथ्यामल को सम्यग्दर्शन धार दो।
अर्पित नीर हमें भव तीर उतार दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

ताप तनावों वाला हमसे दूर हो।
अर्पित चंदन हमको छाँव जरूर दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

यहाँ आप सम शाश्वत अक्षय कौन हैं।
पुंज चढ़ाके भक्त आपके मौन हैं॥

शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

विषय चाह से आत्म दाह हो रोज ही।
पुष्प चढ़ाएँ निज का खिले सरोज भी॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भेद-ज्ञान बिन क्षुधा रोग का दुख बढ़े।
मिले दवा नैवेद्य चढ़ाने हम खड़े॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह घटा बस ज्ञान सूर्य से हारती।
मिले ज्ञान रवि अतः करें हम आरती॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

द्रव्य भाव नो कर्म हरें चिद्रूप को।
कर्म जलाने चढ़ा रहे हम धूप को॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

त्याग पाप-फल जिनवर की जय बोलिए।
फल अर्पण कर द्वार मोक्ष का खोलिए॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

(ज्ञानोदय)

अपनों ने तो बस ठुकराया, लेकिन सद्‌गुरु अपनाये।
सद्‌गुरु ने ज्यों अपनाया तो, शरण आपकी हम पाए॥
अर्घ्य चढ़ा विश्वास दिलाएँ, अगर हमें अपनाओगे।
शम्भवप्रभु अपने बाजू में, जल्दी हमको पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, तज ग्रैवेयक स्थान।
गर्भ सुसेना के वसे, प्रभु शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन-शुक्ल-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शम्भवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किए सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-शुक्ल-पूर्णिमायां जन्म-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रन्थ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल-पूर्णिमायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्ण-चतुर्थ्यां केवलज्ञान-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाए मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री शम्भवनाथ के १०५ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

शम्भवनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

शम्भवप्रभु के पहले गणधर, चारुदत्त आहा।
ओम् ह्रीं श्री चारुदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चारुदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥१॥

शम्भवप्रभु के तत्तकेश जी, तत्त्वगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री तत्तकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तत्तकेश गणधराय अर्घ्यं...॥२॥

शम्भवप्रभु के मृगिभूत हैं, महागुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री मृगिभूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मृगिभूत गणधराय अर्घ्यं...॥३॥

शम्भवप्रभु के जघान गणधर, जय-दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री जघान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जघान गणधराय अर्घ्यं...॥४॥

शम्भवप्रभु के मनुगति गणधर, महा मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री मनुगति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मनुगति गणधराय अर्घ्यं...॥५॥

शम्भवप्रभु के शिष्य पार्श्व हैं, परमेष्ठि आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्व गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्व गणधराय अर्घ्यं...॥६॥

शम्भवप्रभु के वाणवृष्टि हैं, बंध हरण आहा।
ओम् ह्रीं श्री वाणवृष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वाणवृष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥७॥

शम्भवप्रभु के पतउज्ज्वल जी, पतन हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पतउज्ज्वल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पतउज्ज्वल गणधराय अर्घ्यं...॥८॥

शम्भवप्रभु के शिष्य जिजन जी, जित-इन्द्रिय आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिजन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जिजन गणधराय अर्घ्यं...॥९॥

शम्भवप्रभु के सलब्च गणधर, सिद्धपथी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सलब्च गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सलब्च गणधराय अर्घ्यं...॥१०॥

शम्भवप्रभु के चारुषेण जी, चिद्रूपी आहा।
ओम् ह्रीं श्री चारुषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चारुषेण गणधराय अर्घ्यं...॥११॥

शम्भवप्रभु के किंसूर्य गणधर, कुंदन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री किंसूर्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री किंसूर्य गणधराय अर्घ्यं...॥१२॥

शम्भवप्रभु के भवनाथ गणधर, भवतारक आहा।
ओम् ह्रीं श्री भवनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भवनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥१३॥

शम्भवप्रभु के सुभूम गणधर, सुखकारक आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुभूम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुभूम गणधराय अर्घ्यं...॥१४॥

शम्भवप्रभु के शिष्य दशानन, दस धर्मी आहा।
ओम् ह्रीं श्री दशानन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दशानन गणधराय अर्घ्यं...॥१५॥

शम्भवप्रभु के गंगायन जी, ज्ञान ज्योति आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंगायन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गंगायन गणधराय अर्घ्यं...॥१६॥

शम्भवप्रभु के उत्पत्ति जी, उपकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्पत्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्पत्ति गणधराय अर्घ्यं...॥१७॥

शम्भवप्रभु के सर्वमुने जी, सर्वोत्तम आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वमुने गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वमुने गणधराय अर्घ्यं...॥१८॥

शम्भवप्रभु के शिष्य सलिल जी, शल्य हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सलिल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सलिल गणधराय अर्घ्यं...॥१९॥

शम्भवप्रभु के रोहन गणधर, रोग हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री रोहन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री रोहन गणधराय अर्घ्यं...॥२०॥

शम्भवप्रभु के अरिष्टनाथ जी, अनिष्ट हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अरिष्टनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अरिष्टनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥२१॥
शम्भवप्रभु के गांगेय गणधर, ज्ञान मूर्ति आहा।
ओम् ह्लीं श्री गांगेय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गांगेय गणधराय अर्घ्यं...॥२२॥
शम्भवप्रभु के द्रोणाचार्य जी, दिग्दर्शक आहा।
ओम् ह्लीं श्री द्रोणाचार्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणाचार्य गणधराय अर्घ्यं...॥२३॥
शम्भवप्रभु के शिष्य अहिन जी, अहिंसा दे आहा।
ओम् ह्लीं श्री अहिन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अहिन गणधराय अर्घ्यं...॥२४॥
शम्भवप्रभु के निर्वाण गणधर, निर्यापक आहा।
ओम् ह्लीं श्री निर्वाण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निर्वाण गणधराय अर्घ्यं...॥२५॥
शम्भवप्रभु के सर्वज्ञ गणधर, सर्वगुणीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सर्वज्ञ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञ गणधराय अर्घ्यं...॥२६॥
शम्भवप्रभु के प्रश्नोत्तर जी, प्रश्न हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री प्रश्नोत्तर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रश्नोत्तर गणधराय अर्घ्यं...॥२७॥
शम्भवप्रभु के श्रोतृ गणधर, श्रुत दाता आहा।
ओम् ह्लीं श्री श्रोतृ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री श्रोतृ गणधराय अर्घ्यं...॥२८॥

शम्भवप्रभु के चित्रांग गणधर, चित्त हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चित्रांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चित्रांग गणधराय अर्घ्यं...॥२९॥

शम्भवप्रभु के जृम्भ गणधर, जयदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री जृम्भ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जृम्भ गणधराय अर्घ्यं...॥३०॥

शम्भवप्रभु के सदन्त गणधर, सदाचार आहा।
ओम् ह्रीं श्री सदन्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सदन्त गणधराय अर्घ्यं...॥३१॥

शम्भवप्रभु के सचक्री गणधर, सच्चिदानंदआहा।
ओम् ह्रीं श्री सचक्री गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सचक्री गणधराय अर्घ्यं...॥३२॥

शम्भवप्रभु के तैजस गणधर, तेज नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री तैजस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री तैजस गणधराय अर्घ्यं...॥३३॥

शम्भवप्रभु के शिष्य अमूढ़न, अमूढ़ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अमूढ़न गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अमूढ़न गणधराय अर्घ्यं...॥३४॥

शम्भवप्रभु के शिष्य अमितगति, अमित रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री अमितगति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अमितगति गणधराय अर्घ्यं...॥३५॥

शम्भवप्रभु के हरिषेण गणधर, हर्षित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री हरिषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री हरिषेण गणधराय अर्घ्यं...॥३६॥

शम्भवप्रभु के ऋषि गणधर जी, ऋद्धिमंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री ऋषि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषि गणधराय अर्घ्यं...॥३७॥

शम्भवप्रभु के तत्पुराण हैं, तत्त्वगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री तत्पुराण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तत्पुराण गणधराय अर्घ्यं...॥३८॥

शम्भवप्रभु के त्रिपुष्टि गणधर, त्रस्त नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्रिपुष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिपुष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥३९॥

शम्भवप्रभु के सदृष्टी गणधर, सद्ज्ञानी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सदृष्टी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सदृष्टी गणधराय अर्घ्यं...॥४०॥

शम्भवप्रभु के पुन्याह गणधर, पुण्य रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुन्याह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुन्याह गणधराय अर्घ्यं...॥४१॥

शम्भवप्रभु के शिष्य अस्मधन, आस्था दे आहा।
ओम् ह्रीं श्री अस्मधन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अस्मधन गणधराय अर्घ्यं...॥४२॥

शम्भवप्रभु के श्रृति गणधर जी, श्रुतदेवा आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रृति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रृति गणधराय अर्घ्यं...॥४३॥

शम्भवप्रभु के मन्मध गणधर, मंद नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मन्मध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मन्मध गणधराय अर्घ्यं...॥४४॥

शम्भवप्रभु के गुणभद्र गणधर, गुणधारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणभद्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गुणभद्र गणधराय अर्घ्यं...॥४५॥
शम्भवप्रभु के प्रश्नोत्तर जी, प्रश्नजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रश्नोत्तर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रश्नोत्तर गणधराय अर्घ्यं...॥४६॥
शम्भवप्रभु के सदानन्द जी, सदानन्द आहा।
ओम् ह्रीं श्री सदानन्द गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सदानन्द गणधराय अर्घ्यं...॥४७॥
शम्भवप्रभु के अहमिन्द्र गणधर, आत्मजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री अहमिन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अहमिन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥४८॥
शम्भवप्रभु के त्रिशेन गणधर, तिलक तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्रिशेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिशेन गणधराय अर्घ्यं...॥४९॥
शम्भवप्रभु के चित्रघण गणधर, चिन्-रूपी आहा।
ओम् ह्रीं श्री चित्रघण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चित्रघण गणधराय अर्घ्यं...॥५०॥
शम्भवप्रभु के अवधि गणधर, आत्मगुणीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अवधि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अवधि गणधराय अर्घ्यं...॥५१॥
शम्भवप्रभु के सम्भवन हैं, साम्यधनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सम्भवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सम्भवन गणधराय अर्घ्यं...॥५२॥

शम्भवप्रभु के तीर्थनाथ हैं, तीर्थपुण्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री तीर्थनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥५३॥

शम्भवप्रभु के गदाग गणधर, गद्-जेता आहा।
ओम् ह्रीं श्री गदाग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गदाग गणधराय अर्घ्यं...॥५४॥

शम्भवप्रभु के अधास गणधर, अधम हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अधास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अधास गणधराय अर्घ्यं...॥५५॥

शम्भवप्रभु के शिष्य मदिस जी, मति दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मदिस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मदिस गणधराय अर्घ्यं...॥५६॥

शम्भवप्रभु के गुनग्रणी गणधर, गुण-ग्राहक आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुनग्रणी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुनग्रणी गणधराय अर्घ्यं...॥५७॥

शम्भवप्रभु के अगम्य गणधर, अगम्य हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अगम्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अगम्य गणधराय अर्घ्यं...॥५८॥

शम्भवप्रभु के विद्यत गणधर, विद्यमान आहा।
ओम् ह्रीं श्री विद्यत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यत गणधराय अर्घ्यं...॥५९॥

शम्भवप्रभु के शिष्य प्रखिल जी, प्रमुख रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रखिल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रखिल गणधराय अर्घ्यं...॥६०॥

शम्भवप्रभु के गुणोज्ञो गणधर, गुणधारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणोज्ञो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुणोज्ञो गणधराय अर्घ्यं...॥६१॥

शम्भवप्रभु के भूषेण गणधर, भूषेण हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भूषेण गणधराय अर्घ्यं...॥६२॥

शम्भवप्रभु के लघु गणधर जी, लघु नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री लघु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लघु गणधराय अर्घ्यं...॥६३॥

शम्भवप्रभु के शिष्य अभिर जी, अभय दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री अभिर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अभिर गणधराय अर्घ्यं...॥६४॥

शम्भवप्रभु के श्रेणी गणधर, श्रेष्ठ गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रेणी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेणी गणधराय अर्घ्यं...॥६५॥

शम्भवप्रभु के गतशोक गणधर, गतशोषक आहा।
ओम् ह्रीं श्री गतशोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गतशोक गणधराय अर्घ्यं...॥६६॥

शम्भवप्रभु के शिष्य दिगिस जी, दिग्दृष्टा आहा।
ओम् ह्रीं श्री दिगिस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दिगिस गणधराय अर्घ्यं...॥६७॥

शम्भवप्रभु के कुलकर गणधर, कुशाग्र हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुलकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुलकर गणधराय अर्घ्यं...॥६८॥

शम्भवप्रभु के शिष्य इन्द्र जी, इन्द्रपूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री इन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री इन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥६९॥
शम्भवप्रभु के योगीनाथ जी, योगी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री योगीनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री योगीनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥७०॥
शम्भवप्रभु के लोकेश गणधर, लोकजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री लोकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री लोकेश गणधराय अर्घ्यं...॥७१॥
शम्भवप्रभु के अजनन गणधर, आज्ञा दे आहा।
ओम् ह्रीं श्री अजनन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अजनन गणधराय अर्घ्यं...॥७२॥
शम्भवप्रभु के हर्षन गणधर, हर्ष दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री हर्षन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री हर्षन गणधराय अर्घ्यं...॥७३॥
शम्भवप्रभु के श्रीविहार जी, श्रीदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रीविहार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीविहार गणधराय अर्घ्यं...॥७४॥
शम्भवप्रभु के ग्रह गणधर जी, ग्रहण हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री ग्रह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ग्रह गणधराय अर्घ्यं...॥७५॥
शम्भवप्रभु के दर्शन गणधर, दर्शन दो आहा।
ओम् ह्रीं श्री दर्शन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शन गणधराय अर्घ्यं...॥७६॥

शम्भवप्रभु के मुक्तांग गणधर, मुक्त रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुक्तांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तांग गणधराय अर्घ्यं...॥७७॥
शम्भवप्रभु के मातन गणधर, मात.पिता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मातन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मातन गणधराय अर्घ्यं...॥७८॥
शम्भवप्रभु के शिष्य कुसुम जी, कुशल रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुसुम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कुसुम गणधराय अर्घ्यं...॥७९॥
शम्भवप्रभु के शिष्य दिवाकर , दिव्य रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री दिवाकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दिवाकर गणधराय अर्घ्यं...॥८०॥
शम्भवप्रभु के पारासुर जी, परम पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री पारासुर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पारासुर गणधराय अर्घ्यं...॥८१॥
शम्भवप्रभु के अतिशय गणधर, अतिशय दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अतिशय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अतिशय गणधराय अर्घ्यं...॥८२॥
शम्भवप्रभु के शिष्य सुलोचन, सुलभ रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुलोचन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुलोचन गणधराय अर्घ्यं...॥८३॥
शम्भवप्रभु के भास्कर गणधर, भास्कर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भास्कर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भास्कर गणधराय अर्घ्यं...॥८४॥

शम्भवप्रभु के शिष्य अकुप जी, अकुप करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अकुप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अकुप गणधराय अर्घ्यं...॥८५॥
शम्भवप्रभु के कामलता जी, काम हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कामलता गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कामलता गणधराय अर्घ्यं...॥८६॥
शम्भवप्रभु के पुलिंद गणधर, पुलकित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुलिंद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पुलिंद गणधराय अर्घ्यं...॥८७॥
शम्भवप्रभु के जातस गणधर, जात धर्म आहा।
ओम् ह्रीं श्री जातस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जातस गणधराय अर्घ्यं...॥८८॥
शम्भवप्रभु के गतरेष गणधर, गमक रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री गतरेष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गतरेष गणधराय अर्घ्यं...॥८९॥
शम्भवप्रभु के शीलगुप्त जी, शीलगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री शीलगुप्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शीलगुप्त गणधराय अर्घ्यं...॥९०॥
शम्भवप्रभु के धर्मस्थित जी, धर्म ईश आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मस्थित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मस्थित गणधराय अर्घ्यं...॥९१॥
शम्भवप्रभु के शिष्य विष्ण जी, विष हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री विष्ण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विष्ण गणधराय अर्घ्यं...॥९२॥

शम्भवप्रभु के प्रचण्ड गणधर, प्रचलित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रचण्ड गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रचण्ड गणधराय अर्घ्यं...॥९३॥
शम्भवप्रभु के नागोनाग जी, नग्न रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री नागोनाग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नागोनाग गणधराय अर्घ्यं...॥९४॥
शम्भवप्रभु के शिष्य अन्यदा, अन्य नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अन्यदा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अन्यदा गणधराय अर्घ्यं...॥९५॥
शम्भवप्रभु के धर्मराज हैं, धर्मराज आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मराज गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मराज गणधराय अर्घ्यं...॥९६॥
शम्भवप्रभु के कोपेश गणधर, कोपजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोपेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कोपेश गणधराय अर्घ्यं...॥९७॥
शम्भवप्रभु के जिगीश गणधर, जगत ईश आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिगीश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जिगीश गणधराय अर्घ्यं...॥९८॥
शम्भवप्रभु के शिष्य लोष्ट जी, लोकजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री लोष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री लोष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥९९॥
शम्भवप्रभु के दुष्चरित्त जी, दुष्टजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री दुष्चरित्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दुष्चरित्त गणधराय अर्घ्यं...॥१००॥

शम्भवप्रभु के नागस गणधर, नाग नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नागस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नागस गणधराय अर्घ्यं...॥१०१॥

शम्भवप्रभु के कालिति गणधर, काल नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कालिति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कालिति गणधराय अर्घ्यं...॥१०२॥

शम्भवप्रभु के धर्मनाथ हैं, धर्मनाथ आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥१०३॥

शम्भवप्रभु के प्रियभूत जी, प्रियधर्म आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रियभूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रियभूत गणधराय अर्घ्यं...॥१०४॥

शम्भवप्रभु के उपीन्द्र गणधर, उपदेशक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उपीन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उपीन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥१०५॥

पूर्णार्घ्य

(शम्भू)

गुरु शिष्यों के रिश्ते जग में, हैं सूर्य कमल जैसे चमकें।
हम भक्त अर्चना कर जिनकी, निज आत्म सुगंधी से महकें॥
बस इसी भावना से हम तो, श्री शम्भवनाथ प्रभु पूजें।
यदि कृपा आपकी हो जाए , तो हम भी शीघ्र मोक्ष घूमें॥
ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथस्य चारुदत्त-आदि पंचाधिकशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शंभवनाथस्य चारुदत्तादि पंचाधिकशत् गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

शम्भव प्रभु के एक सौ पाँचों शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी कृपा दया को पाकर, कार्य असम्भव सम्भव हो।
जिनके नाम मात्र माला से, शुद्ध भावमय आतम हो॥
जिनके चरणा-चरण प्राप्त कर, मिलती इच्छित वस्तु हो।
उन शम्भवप्रभु के गुण गाएँ, बारम्बार नमोऽस्तु हो ॥१॥
गैवेयिक से श्रावस्ती आ, जितारि सुषेणा पुत्र हुए।
राज भोग वैराग्य योग से, मुनि बनकर छद्मस्थ हुए॥
जब छद्मस्थ दशा गुजरी तो, केवलज्ञानी ईश हुए।
परमपूज्य अरहंत जिनेश्वर श्री सर्वज्ञ जिनेश हुए॥२॥
अनन्तचतुष्टय धारी प्रभु का, समवसरण जब खूब सजा।
शिष्य एक सौ पाँच विराजे, धर्म शंख फिर खूब बजा॥
चारुदत्त जी प्रथम शिष्य थे, अंतिम उपीन्द्र गणधर थे।
गुरु शिष्यों की देख जोड़ियाँ, विस्मित प्राणी घर-घर थे॥३॥
शम्भव प्रभु जैसे हों सम्भव, कार्य हमारे मुँह बोले।
अतः भजे गणधर गुरुओं को, भक्ति नयन हमने खोले॥
प्रभु से केवल यही प्रार्थना, यही निवेदन गुरुओं से।
हमको अपना शिष्य बनाके, मुक्त करो भव भ्रमणों से॥४॥
सभी समस्याओं को हमने, बड़ा अभी तक मान लिया।
अतः समस्याओं ने हमको, चैन छीन दुख दान दिया॥

लेकिन शम्भवनाथ बड़े हैं, 'सुव्रत' ने पहचान लिया।
बड़ी समस्या कभी न हो सो, जिनपद का सम्मान किया ॥५॥

(दोहा)

शम्भवनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
चारुदत्त सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री चारुदत्तादि पंचाधिकशत् गणधर सहित श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शम्भव के गणधर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

सीना तो तानो
पसीना तो बहा दो
सही दिशा में

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अभिनन्दन प्रभु की यहाँ, गूँजी जय-जयकार।
पूजन के पहले करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(सखी)

हे परम पूज्य प्रभुवर जी! श्री अभिनन्दन जिनवर जी!
तुम हो देवन के देवा, हो भक्तों के शिवपुर भी॥
तुमने गुण वन्दन करने, चंचल मन-बंदर छोड़ा।
फिर ले रत्नत्रय घोड़ा, जग का आक्रन्दन तोड़ा॥
हम हैं संसारी प्राणी, भव-आक्रन्दन में चीखें।
क्या वन्दन नन्दन होता, यह पाठ कभी न सीखें॥
फिर भी अब उमड़ी भक्ति, सो पुलकित-पुलकित होके।
हम आज रचाएँ पूजा, बस भक्त आपके होके॥
कर्मों के बन्धन सारे, जग-आक्रन्दन दुखियारे।
सब संकट विकट समस्या, हर विघ्न कष्ट के नारे॥
बस नाम आपका सुनके, निर्बन्ध बने सब साथी।
तब ही अभिनन्दन प्रभु के, हम भक्त बने बाराती॥

(दोहा)

मन वृन्दावन में वसो, अभिनन्दन भगवान्।
भक्ति छाँव में चेतना, पाए चित्-विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जिनसे हमको दुख होते, वो बीज रोग के बोते।
हम उनको अपना मानें, जिनसे तो चेतन रोते॥
यह मिथ्या बुद्धि हरण को, दो शुद्ध आत्म जल स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

हम राग-द्वेष ज्वाला से, संतप्त हुए पल-पल में।
फिर चाह दाह से जलकर, मिल बैठे भव दल-दल में॥
अब शीतल चंदन जैसा, ज्ञानामृत गुण दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अब तक हमने जो पाया, कर तू-तू मैं-मैं उसमें।
जग क्षणभंगुर ना समझा, सब क्षत-विक्षत है जिसमें॥
अब शाश्वत अक्षत बनने, जिन रूप मिले बस स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब काम शील धन लूटे, हम मौन खड़े शरमाएँ।
तब लुटे-पिटे निर्बल हो, जिन ब्रह्म देख खिल जाएँ॥
हैं भक्ति-पुष्प प्रभु अर्पित, संयम सौरभ दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर द्रव्यों के सब व्यंजन, चखकर बीमार हुए हम।
निज आत्म सौख्य क्या होता, यह चख न सकी ये आतम॥
नैवेद्य करें हम अर्पण, जिन वचन दवा दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मोह आँधी से, प्रभु भक्ति-दीप बुझ जाता।
फिर ज्ञान-ज्योति बिन आतम, परतत्त्व प्रशंसा गाता॥
जन तजने जिन बनने को, जिन भक्ति दीप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों से बँधकर चेतन, हा! बिलख-बिलख कर विसरे।
जिन-रूप सहारा लेकर, चारित्र धारकर निखरे॥
यह भक्ति धूप है अर्पण, शुभ ध्यान धूप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

हम अशुभ पाप दुख करके, शुभ पुण्य कर्म सुख चाहें।
सो सुख नहिं हो दुख हो फिर, नहिं मिले मोक्ष की राहें॥
हमें अपने पास बुलाकर, निज परिणति फल दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पर परिणति के लालच में, अनमोल रत्न ना समझे।
जिन दर्श आपके कर हम, अनमोल आत्म को समझे॥
गर कृपा आपकी हो तो, वह प्राप्त करें हम स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

शुक्ला छट वैशाख को, विजय स्वर्ग तज पाए।
सिद्धार्था के गर्भ में, अभिनन्दन प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

द्वादश शुक्ला माघ में, बन्धन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नन्दन जिन्हें, वन्दन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष शुक्ल चौदस मिली, निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठी शुक्ल वैशाख को, गए मोक्ष के धाम।
नन्दनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री अभिनन्दननाथ के १०३ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

अभिनन्दन तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

अभिनन्दन प्रभु के वज्रादि, प्रथम शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री वज्रादि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वज्रादि गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

अभिनन्दन प्रभु के श्रीमत जी, श्री धारे आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रीमत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमत गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

अभिनन्दन प्रभु के स्नानगत्य, साधक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री स्नानगत्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्नानगत्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

अभिनन्दन प्रभु के कुलगत जी, कुलगुरु हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री कुलगत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुलगत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

अभिनन्दन प्रभु के मानेशा, मानजयी आहा।
ओम् ह्लीं श्री मानेशा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मानेशा गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

अभिनन्दन प्रभु के कृतज्ञजी, कल्याणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री कृतज्ञ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृतज्ञ गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

अभिनन्दन प्रभु के गदायण, गमन हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री गदायण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गदायण गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

अभिनन्दन प्रभु के स्मकर्त, सम्यक् हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री स्मकर्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्मकर्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

अभिनन्दन प्रभु के चक्रजी, चक्र हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री चक्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चक्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

अभिनन्दन प्रभु के संयमी, संयम दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री संयमी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संयमी गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

अभिनन्दन प्रभु के सुकेसि, सुखराशी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुकेसि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुकेसि गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

अभिनन्दन प्रभु के सोपित जी, श्राप हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सोपित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सोपित गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

अभिनन्दन प्रभु के कृतांजलि, कृत-कृत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृतांजलि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृतांजलि गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

अभिनन्दन प्रभु के परीक्षा जी, परिपूर्ण आहा।
ओम् ह्रीं श्री परीक्षा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परीक्षा गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

अभिनन्दन प्रभु के गेनाति, ज्ञानज्योति आहा।
ओम् ह्रीं श्री गेनाति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गेनाति गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

अभिनन्दन प्रभु के विक्षात जी, विद्वान हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विक्षात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विक्षात गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

अभिनन्दन प्रभु के श्रुतसागर, श्रुतज्ञाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रुतसागर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतसागर गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

अभिनन्दन प्रभु के अहूत जी, आदर्श हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अहूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अहूत गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

अभिनन्दन प्रभु के पौरुष जी, पुरुषार्थी आहा।
ओम् ह्रीं श्री पौरुष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पौरुष गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥
अभिनन्दन प्रभु के पवन जी, पवित्र हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पवन गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥
अभिनन्दन प्रभु के तीर्थसिद्ध, तीरथ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री तीर्थसिद्ध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थसिद्ध गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥
अभिनन्दन प्रभु के यशकीर्ति, यशदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री यशकीर्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री यशकीर्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥
अभिनन्दन प्रभु के वचो जी, वचनबली आहा।
ओम् ह्रीं श्री वचो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वचो गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥
अभिनन्दन प्रभु के सम्बन्ध, स्वस्त करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सम्बन्ध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सम्बन्ध गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥
अभिनन्दन प्रभु के सुखावह, सुखशान्ति आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुखावह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुखावह गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥
अभिनन्दन प्रभु के ककोल जी, कर्म हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री ककोल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ककोल गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

अभिनन्दन प्रभु के हिमांच जी, हिंस्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री हिमांच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री हिमांच गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

अभिनन्दन प्रभु के मायास जी, माया हर आहा।
ओम् ह्रीं श्री मायास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मायास गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

अभिनन्दन प्रभु के विचित्रांग, विचित्र न आहा।
ओम् ह्रीं श्री विचित्रांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विचित्रांग गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

अभिनन्दन प्रभु के सौधर्म जी, सौख्य दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री सौधर्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सौधर्म गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

अभिनन्दन प्रभु के तूंग जी, तुष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री तूंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तूंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

अभिनन्दन प्रभु के ब्रह्म जी, ब्रह्म ज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं श्री ब्रह्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्म गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

अभिनन्दन प्रभु के प्राग्मुख, प्राण हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्राग्मुख गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राग्मुख गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

अभिनन्दन प्रभु के पुष्टर जी, पुष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुष्टर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्टर गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

अभिनन्दन प्रभु के भूदानि, भुवन तिलक आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूदानि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भूदानि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

अभिनन्दन प्रभु के भूतकेश, भूत हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूतकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भूतकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

अभिनन्दन प्रभु के मल्लेषण, मलहर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मल्लेषण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लेषण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

अभिनन्दन प्रभु के दयापाल, दया करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दयापाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दयापाल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

अभिनन्दन प्रभु के साधु जी, साधु करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री साधु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री साधु गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

अभिनन्दन प्रभु के अरध जी, आराध्य हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अरध गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

अभिनन्दन प्रभु के दानादि, दानगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री दानादि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दानादि गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

अभिनन्दन प्रभु के पुलाक जी, पुलकित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुलाक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुलाक गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

अभिनन्दन प्रभु के वलीक जी, बलशाली आहा।
ओम् ह्रीं श्री वलीक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वलीक गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

अभिनन्दन प्रभु के मषात जी, मसाल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मषात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मषात गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

अभिनन्दन प्रभु के यशो जी, यशोगान आहा।
ओम् ह्रीं श्री यशो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री यशो गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

अभिनन्दन प्रभु के समै जी, समयसार आहा।
ओम् ह्रीं श्री समै गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समै गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

अभिनन्दन प्रभु के गंगदत्त, ज्ञानधनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंगदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गंगदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

अभिनन्दन प्रभु के गुणसागर, गुणज्ञ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणसागर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुणसागर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

अभिनन्दन प्रभु के धर्मसागर, धर्मगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मसागर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मसागर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

अभिनन्दन प्रभु के सद्वेषन, सज्जन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सद्वेषन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सद्वेषन गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

अभिनन्दन प्रभु के भूतकेश, भूतजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूतकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भूतकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥
अभिनन्दन प्रभु के चक्रेश जी, चिदानन्द आहा।
ओम् ह्रीं श्री चक्रेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चक्रेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥
अभिनन्दन प्रभु के समारूह्य, समाधान आहा।
ओम् ह्रीं श्री समारूह्य गणधराय नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री समारूह्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥
अभिनन्दन प्रभु के पुष्पवृक्ष, पुष्पगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुष्पवृक्ष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पवृक्ष गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥
अभिनन्दन प्रभु के चिन्तागति, चिन्ताहर आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिन्तागति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चिन्तागति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥
अभिनन्दन प्रभु के रसऋद्धि, रास्ता दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री रसऋद्धि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री रसऋद्धि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥
अभिनन्दन प्रभु के कलि जी, कालजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कलि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कलि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥
अभिनन्दन प्रभु के जगगुरु, जगतगुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री जगगुरु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जगगुरु गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

अभिनन्दन प्रभु के तटस्थित, तार रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री तटस्थित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तटस्थित गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

अभिनन्दन प्रभु के सुलोचन, सुलोचन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुलोचन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुलोचन गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

अभिनन्दन प्रभु के समाषण, समता दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री समाषण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समाषण गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

अभिनन्दन प्रभु के वाहिदत्त, व्याधि हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री वाहिदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वाहिदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

अभिनन्दन प्रभु के नागदत्त, नायक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नागदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नागदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

अभिनन्दन प्रभु के ज्ञात्वा जी, ज्ञाता हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ज्ञात्वा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञात्वा गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

अभिनन्दन प्रभु के अवऋद्धि, अवसर दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अवऋद्धि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अवऋद्धि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

अभिनन्दन प्रभु के तवऋद्धि, तपस्वी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री तवऋद्धि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तवऋद्धि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

अभिनन्दन प्रभु के प्रियांग जी, सर्व प्रिय आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रियांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रियांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥

अभिनन्दन प्रभु के जयस्त जी, जयदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री जयस्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जयस्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥

अभिनन्दन प्रभु के प्रीतिंदव, प्रीति करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रीतिंदव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रीतिंदव गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥

अभिनन्दन प्रभु के मनीषजी, मनोविजय आहा।
ओम् ह्रीं श्री मनीष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मनीष गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥

अभिनन्दन प्रभु के सकेत जी, समकित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥

अभिनन्दन प्रभु के नमस्कार, नमन योग्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमस्कार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नमस्कार गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥

अभिनन्दन प्रभु के जातनन्द, जातरूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री जातनन्द गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जातनन्द गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

अभिनन्दन प्रभु के निशांत जी, निशा हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री निशांत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निशांत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

अभिनन्दन प्रभु के कामांकित, काम हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कामांकित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कामांकित गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

अभिनन्दन प्रभु के कापोत जी, कुपित नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कापोत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कापोत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

अभिनन्दन प्रभु के दावान जी, दंश हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दावान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दावान गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

अभिनन्दन प्रभु के उपागत जी, उपयोगी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उपागत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उपागत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७८॥

अभिनन्दन प्रभु के भवदेव जी, भवविजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री भवदेव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भवदेव गणधराय अर्घ्यं...॥ ७९॥

अभिनन्दन प्रभु के मार्जार जी, मार्जन दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मार्जार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मार्जार गणधराय अर्घ्यं...॥ ८०॥

अभिनन्दन प्रभु के तद्वेष जी, तारक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री तद्वेष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तद्वेष गणधराय अर्घ्यं...॥ ८१॥

अभिनन्दन प्रभु के गंधार जी, गर्व हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंधार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गंधार गणधराय अर्घ्यं...॥ ८२॥

अभिनन्दन प्रभु के शशिकर जी, शिष्यगुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री शशिकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शशिकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८३॥

अभिनन्दन प्रभु के नारद जी, नाविक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नारद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नारद गणधराय अर्घ्यं...॥ ८४॥

अभिनन्दन प्रभु के श्रेणित जी, श्रेयश हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रेणित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेणित गणधराय अर्घ्यं...॥ ८५॥

अभिनन्दन प्रभु के प्राज्र्य जी, प्रांजल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्राज्र्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राज्र्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ८६॥

अभिनन्दन प्रभु के वर्मन जी, वरदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री वर्मन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वर्मन गणधराय अर्घ्यं...॥ ८७॥

अभिनन्दन प्रभु के श्रीपूर जी, श्री पूजित आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रीपूर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीपूर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८८॥

अभिनन्दन प्रभु के श्रीपाल जी, श्रीपालक आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रीपाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीपाल गणधराय अर्घ्यं...॥ ८९॥

अभिनन्दन प्रभु के दीक्षांग जी, दीक्षाधर आहा।
ओम् ह्रीं श्री दीक्षांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दीक्षांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ९०॥

अभिनन्दन प्रभु के तापस जी, ताप हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री तापस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तापस गणधराय अर्घ्यं...॥ ९१॥

अभिनन्दन प्रभु के पूरिच जी, पूर्ण रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पूरिच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पूरिच गणधराय अर्घ्यं...॥ ९२॥

अभिनन्दन प्रभु के प्रभास जी, प्रभास हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रभास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभास गणधराय अर्घ्यं...॥ ९३॥

अभिनन्दन प्रभु के रविषेण जी, राग हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री रविषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रविषेण गणधराय अर्घ्यं...॥ ९४॥

अभिनन्दन प्रभु के कोतम जी, कोप हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोतम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोतम गणधराय अर्घ्यं...॥ ९५॥

अभिनन्दन प्रभु के गतोस्ति, गाथा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गतोस्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गतोस्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ९६॥

अभिनन्दन प्रभु के प्रियदत्त जी, प्रियतर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रियदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रियदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ९७॥

अभिनन्दन प्रभु के दक्षक जी, दक्ष रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री दक्षक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दक्षक गणधराय अर्घ्यं...॥ ९८॥

अभिनन्दन प्रभु के हिरण्य जी, हीरा हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री हिरण्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री हिरण्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ९९॥
अभिनन्दन प्रभु के अहानि, आह हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अहानि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अहानि गणधराय अर्घ्यं...॥ १००॥
अभिनन्दन प्रभु के तद्यसेन, त्राता हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री तद्यसेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री तद्यसेन गणधराय अर्घ्यं...॥ १०१॥
अभिनन्दन प्रभु के विभंग जी, विभाव हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विभंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विभंग गणधराय अर्घ्यं...॥ १०२॥
अभिनन्दन प्रभु के त्वचश जी, तत्त्व गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्वचश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री त्वचश गणधराय अर्घ्यं...॥ १०३॥

पूर्णार्घ्य

(लघु चौपाई)

अभिनन्दन के पहले शिष्य, वज्र अंत में त्वचश गणेश।
भजें एक सौ तीनों नाम, कर नमोऽस्तु हम करें प्रणाम॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथस्य वज्र-आदि त्रयाधिशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथस्य वज्रादि त्रयाधिशत् गणधरेभ्यो नमः

जयमाला

(दोहा)

अभिनन्दन के एक सौ तीनों शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी जीवन रेखा टूटे, मुरझायी हो जीव लता।
घोर उदासी के बादल में, जिनको जाए मौत सता॥
रोग कष्ट से जो व्याकुल वो, भजकर अभिनन्दन प्रभु नाम।
हों मृत्युंजय सुन्दर सुखिया, अतः नमोऽस्तु हो अविराम॥ १॥
ग्रैवेयक से नगर अयोध्या, आकर कल्याणक पाए।
संवर सिद्धार्था के नंदन मुनि बनकर शिवपथ ध्याये॥
केवलज्ञान हुआ संध्या में, समवसरण फिर सजा दिया।
शिष्य एक सौ तीन विराजे, बिगुल धर्म का बजा दिया॥ २॥
धर्मवृष्टि कर आर्यखण्ड का, प्रभु ने कण-कण शुद्ध किया।
गुरु शिष्यों की परम्परा ने, जिनवर धर्म प्रसिद्ध किया॥
ऐसे वृषभनाथ जिनवर के, वंशज अभिनन्दन स्वामी।
निश्चयनय व्यवहार धर्ममय, मुक्त जिन्हें हम प्रणमामि॥३॥
ऐसे अभिनन्दन जिनवर के, प्रथम शिष्य थे वज्रादि।
अंतिम रहे त्वचश् गणधर जी, हरते भव पीड़ा व्याधि॥
शिष्यों के हम शिष्य बनें बस, यही भावना भायी है।
इसीलिए कर गुरु अर्चना, गणधर भक्ति समायी है॥४॥
अब तक हमने की मनमानी, बात आपकी ना मानी।
नादानी से मुक्ति रिसानी, मिली कृपा ना वरदानी॥

अब तो स्वामी क्षमादान दो, दया कृपा करुणा कर दो।
विनाशीक से अविनाशी कर, 'सुव्रत' की झोली भर दो॥५॥

(दोहा)

अभिनन्दन भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
वज्रादि सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं वज्रादि त्रयाधिकशत् गणधर सहित श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

नन्दन के गणधर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

पुण्य फूला है
पापों का पतझड़
फल अमाप

श्री सुमतिनाथ पूजन

स्थापना (लय : माता तू दया करके...)

हे! पंचम तीर्थंकर! जड़बुद्धि कुमति हर्त्ता।
हे! सुमतिनाथ! भर्ता, हे! सुमति ज्योति कर्त्ता॥
हे! मंगलमय मंगल, हे! तारणतरण जहाज।
सबको तारो तुम तो, हमने भी दी आवाज॥
हे! जिनवर जी अर्जी, मंजूर तुरत कर लो।
भव में डूबे हमको, दे शरण पार कर दो॥
उपकार न भूलेंगे, मन से तो छूलेंगे।
निज सहज रूप पाने, श्रद्धा से पूजेंगे॥

(सोरठा)

सुमति-सुमति दातार, सुमतिनाथ भगवान् हो।
आओ मन के द्वार, हरो भ्रमण अज्ञान को॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

हम निर्मल शुद्धातम, यह तत्त्व नहीं समझे।
तो राग-द्वेष करके, दुःख संकट में उलझे॥
अब जन्म पहेली को, सुलझाने वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जग की शीतलता से, ना प्यास ताप नशते।
ना ज्ञानामृत मिलता, बस भव-भव में तपते॥
संताप मिटाने को, जिन-चंदन वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कोल्हू के बैलों सम, भव चक्रों में खोये।
हम धर्मचक्र भूले, तो फूट-फूट रोये॥
अब अखण्ड आतम को, पाने जिन-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

तज शूल असंयम के, संयम के फूल खिलें।
जीवन फूलों सा हो, जिन पद की धूल मिले॥
अब काम घाव भरने, ब्रह्म-औषध वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुख पाने को आकुल, -व्याकुल दुख को तजने।
पर भाव नहीं बनते, अपने प्रभु को भजने॥
बिन भक्ति मुक्ति कैसे, सो भक्ति की वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यह पुद्गल की ज्योति, अन्तर को छुए न भले।
पर आरती कर इनसे, आतम का दीप जले॥
अब अन्तस् तम हरने, जिन ज्योतित वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

भव अंगारों से हम, तपके झुलसे जलते।
पर कर्म तनिक न तपे, हम हाथ रहे मलते॥
अब कर्म जलाने को, अध्यातम वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुद्गल का विकृत रस, आतम में जहर भरे।
जिसको केवल चख के, प्राणी बेमौत मरे ॥
अब मृत्युंजय बनने, जिन-करुणा वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हे नाथ! अभी तक हम, तुम जैसे नहीं हुए।
ना दुख के बन्ध झड़े, ना आतम रूप छुए॥
ना आतम से तन के, रिश्ते-नाते तोड़े।
दर-दर तो भटके पर, ना हाथ तुम्हें जोड़े ॥
अब कृपा आपकी पा, यह अर्घ्य चढ़ाएंगे।
विश्वास यही हमको, तुम सम बन जाएंगे॥
निज शरण बुलाके अब, शाश्वत निज-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण शुक्ला दूज को, त्याग जयंत विमान।
मात मंगला गर्भ में, वसे सुमति भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवीं शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाए पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री सुमतिनाथ के ११६ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

सुमतिनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

सुमतिनाथ के प्रथम शिष्य जी, चमर अमर आहा।
ओम् ह्रीं श्री चमर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चमर गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

सुमतिनाथ के लौकान्त गणधर, लौकिक ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री लौकान्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लौकान्त गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

सुमतिनाथ के धर्मासन जी, धर्मगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मासन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मासन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

सुमतिनाथ के संयम गणधर, संयम दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री संयम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संयम गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

सुमतिनाथ के मव्रति गणधर, महाव्रती आहा।
ओम् ह्रीं श्री मव्रति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मव्रति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

सुमतिनाथ के सोवासू जी, शोभा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सोवासू गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सोवासू गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

सुमतिनाथ के मुलंग गणधर, मूल-अंग आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुलंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुलंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

सुमतिनाथ के फुलिंग शिष्य जी, फलदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री फुलिंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री फुलिंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

सुमतिनाथ के क्रोधूम गणधर, क्रोध हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्रोधूम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्रोधूम गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

सुमतिनाथ के महाज्ञान जी, महाज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं श्री महाज्ञान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महाज्ञान गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

सुमतिनाथ के पद्मगणेश जी, पद्मगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री पद्मगणेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मगणेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

सुमतिनाथ के रतिवेग जी, रति जयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री रतिवेग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री रतिवेग गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

सुमतिनाथ के भोजनांग जी, भोज तजी आहा।
ओम् ह्रीं श्री भोजनांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भोजनांग गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

सुमतिनाथ के विद्युत गणधर, विद्यार्थी आहा।
ओम् ह्रीं श्री विद्युत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विद्युत गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

सुमतिनाथ के यक्षान्त गणधर, यक्ष पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री यक्षान्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री यक्षान्त गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

सुमतिनाथ के अरिष्ट गणधर, अरिष्ट हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरिष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अरिष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

सुमतिनाथ के लब्धकीर्ति जी, लब्धी दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री लब्धकीर्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री लब्धकीर्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

सुमतिनाथ के मुक्तिनाथ जी, मुक्त करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुक्तिनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तिनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

सुमतिनाथ के आत्मकेश जी, आतम दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री आत्मकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

सुमतिनाथ के त्रिदिवाम् जी, त्रिदेवा आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्रिदिवाम् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिदिवाम् गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥
सुमतिनाथ के वज्रदंत जी, वज्रबली आहा।
ओम् ह्रीं श्री वज्रदंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वज्रदंत गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥
सुमतिनाथ के जयकीर्ति जी, जयकारक आहा।
ओम् ह्रीं श्री जयकीर्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जयकीर्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥
सुमतिनाथ के शिष्य अकम्पन, अकम्प हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अकम्पन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पन गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥
सुमतिनाथ के गुणसंयूत जी, गुण संयुत आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणसंयूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गुणसंयूत गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥
सुमतिनाथ के प्रीतिंकर जी, प्रीत भरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रीतिंकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रीतिंकर गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥
सुमतिनाथ के मुक्तामणि जी, मुक्तधाम आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुक्तामणि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तामणि गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥
सुमतिनाथ के पारावत जी, पार करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पारावत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पारावत गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

सुमतिनाथ के छिदादत्त जी, छिद न सकें आहा।
ओम् ह्रीं श्री छिदादत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री छिदादत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥
सुमतिनाथ के कैलाश गणधर , खेल नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कैलाश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कैलाश गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥
सुमतिनाथ के बज्रबाहु जी, वज्र-अंग आहा।
ओम् ह्रीं श्री बज्रबाहु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री बज्रबाहु गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥
सुमतिनाथ के गजकुमार जी, गजरथ दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गजकुमार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गजकुमार गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥
सुमतिनाथ के विजयाख्य जी, विजय दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री विजयाख्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विजयाख्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥
सुमतिनाथ के मल्लिकेत जी, मोहजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री मल्लिकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥
सुमतिनाथ के विश्वध्वज जी, विश्वासी आहा।
ओम् ह्रीं श्री विश्वध्वज गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वध्वज गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥
सुमतिनाथ के महिपति गणधर, महामहिम आहा।
ओम् ह्रीं श्री महिपति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री महिपति गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

सुमतिनाथ के पुलाक गणधर, पुलाक ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री पुलाक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री पुलाक गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

सुमतिनाथ के तभ गणधर जी, तप-धर्मी आहा।
ओम् ह्लीं श्री तभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री तभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

सुमतिनाथ के भवान गणधर, भव-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्लीं श्री भवान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री भवान गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

सुमतिनाथ के तीर्थनाथ जी, तीर्थ दिए आहा।
ओम् ह्लीं श्री तीर्थनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री तीर्थनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

सुमतिनाथ के त्रिपुष गणधर, त्रि-रत्ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री त्रिपुष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री त्रिपुष गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

सुमतिनाथ के ऋद्धिमन जी, रिष्ट हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री ऋद्धिमन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री ऋद्धिमन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

सुमतिनाथ के शिष्य सदोदुत, सदा सुखी आहा।
ओम् ह्लीं श्री सदोदुत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री सदोदुत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

सुमतिनाथ के जयगुप्त गणधर, जयदाता आहा।
ओम् ह्लीं श्री जयगुप्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री जयगुप्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

सुमतिनाथ के विभूति गणधर, विभूति देह आहा।
ओम् ह्रीं श्री विभूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विभूति गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

सुमतिनाथ के कोषांगार जी, कुशल करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोषांगार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोषांगार गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

सुमतिनाथ के मुनिभूषा जी, मुनि-भूषा आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुनिभूषा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिभूषा गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

सुमतिनाथ के सिंहजीत जी, सिंहासित आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंहजीत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहजीत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

सुमतिनाथ के हरिवाहन जी, हर्ष दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री हरिवाहन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री हरिवाहन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

सुमतिनाथ के स्वयंभूत जी, स्वयंसिद्ध आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वयंभूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

सुमतिनाथ के वज्रदंत जी, वज्रदेहि आहा।
ओम् ह्रीं श्री वज्रदंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वज्रदंत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

सुमतिनाथ के शशिलोच जी, सभ्य करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शशिलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शशिलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

सुमतिनाथ के शिष्य भरत जी, भरते गुण आहा।
ओम् ह्रीं श्री भरत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भरत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

सुमतिनाथ के मागध गणधर, मार्ग करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मागध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मागध गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

सुमतिनाथ के उद्योत गणधर, उच्च करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री उद्योत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उद्योत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

सुमतिनाथ के प्रभूति गणधर, प्रभु तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रभूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभूति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

सुमतिनाथ के नमस्तुभ्य जी, नमन योग्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री नमस्तुभ्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नमस्तुभ्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

सुमतिनाथ के आत्मध्यान जी, आत्मधनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री आत्मध्यान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मध्यान गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

सुमतिनाथ के स्तुतिमुख जी, स्तुतियोग्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्तुतिमुख गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्तुतिमुख गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

सुमतिनाथ के कोतभग गणधर, कोप हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोतभग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोतभग गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

सुमतिनाथ के मेघरथ गणधर, मेधावी आहा।
ओम् ह्रीं श्री मेघरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मेघरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

सुमतिनाथ के मयास्ति गणधर, माया-हर आहा।
ओम् ह्रीं श्री मयास्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मयास्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

सुमतिनाथ के स्वरूपऋषि जी, स्वरूप दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वरूपऋषि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्वरूपऋषि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

सुमतिनाथ के विलासे गणधर, विलास हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विलासे गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विलासे गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

सुमतिनाथ के प्रजल्प गणधर, प्रजापाल आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रजल्प गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रजल्प गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

सुमतिनाथ के यथाचल गणधर, यथारूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री यथाचल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री यथाचल गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

सुमतिनाथ के विरतय गणधर, व्रत-दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री विरतय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विरतय गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

सुमतिनाथ के मन्मथ गणधर, मनोजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री मन्मथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मन्मथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥

सुमतिनाथ के सिंहसन गणधर, शिखरतुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंहसन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहसन गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥

सुमतिनाथ के अप्राग गणधर, अपने हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अप्राग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अप्राग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥

सुमतिनाथ के विदांकुरु जी, विद्यमान आहा।
ओम् ह्रीं श्री विदांकुरु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विदांकुरु गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥

सुमतिनाथ के शक्री गणधर, सक्षम हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री शक्री गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शक्री गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥

सुमतिनाथ के गर्भन्वय जी, गर्व हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गर्भन्वय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भन्वय गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥

सुमतिनाथ के पर्यमुनि जी, पर्याप्त हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पर्यमुनि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पर्यमुनि गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

सुमतिनाथ के शिष्य उदीरित, उदार हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उदीरित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उदीरित गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

सुमतिनाथ के मतिसागर जी, मतिदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मतिसागर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मतिसागर गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

सुमतिनाथ के स्वनाथ गणधर, स्वस्थ करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्वनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

सुमतिनाथ के मुमुद गणधर, मुमुक्षु हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुमुद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुमुद गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

सुमतिनाथ के केशव गणधर, कषाय हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री केशव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केशव गणधराय अर्घ्यं...॥ ७८॥

सुमतिनाथ के स्वर्गावतार जी, सुखसाधन आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वर्गावतार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्वर्गावतार गणधराय अर्घ्यं...॥ ७९॥

सुमतिनाथ के वर्धमान जी, वरदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री वर्धमान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान गणधराय अर्घ्यं...॥ ८०॥

सुमतिनाथ के शिष्य दान जी, दान गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री दान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दान गणधराय अर्घ्यं...॥ ८१॥

सुमतिनाथ के मासान गणधर, माँ जैसे आहा।
ओम् ह्रीं श्री मासान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मासान गणधराय अर्घ्यं...॥ ८२॥

सुमतिनाथ के गरिष्ट गणधर, गरिष्ट ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री गरिष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गरिष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ८३॥

सुमतिनाथ के मंदरार्थ जी, मंदिर हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री मंदरार्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मंदरार्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ ८४॥

सुमतिनाथ के शिष्य जिनोर्जित, जिनसेवक आहा।
ओम् ह्लीं श्री जिनोर्जित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनोर्जित गणधराय अर्घ्यं...॥ ८५॥

सुमतिनाथ के उपपंक्ति जी, उपयोगी आहा।
ओम् ह्लीं श्री उपपंक्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उपपंक्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ८६॥

सुमतिनाथ के चलांग गणधर, चंचल ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री चलांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ८७॥

सुमतिनाथ के दृढ़कर गणधर, दृढ़ करते आहा।
ओम् ह्लीं श्री दृढ़कर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दृढ़कर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८८॥

सुमतिनाथ के विश्वभूति जी, विश्वजयी आहा।
ओम् ह्लीं श्री विश्वभूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभूति गणधराय अर्घ्यं...॥ ८९॥

सुमतिनाथ के कुलवंत गणधर, कुलदीपक आहा।
ओम् ह्लीं श्री कुलवंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुलवंत गणधराय अर्घ्यं...॥ ९०॥

सुमतिनाथ के यौवन गणधर, युग-धर्मा आहा।
ओम् ह्लीं श्री यौवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री यौवन गणधराय अर्घ्यं...॥ ९१॥

सुमतिनाथ के वितर्क गणधर, वीतराग आहा।
ओम् ह्लीं श्री वितर्क गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वितर्क गणधराय अर्घ्यं...॥ ९२॥

सुमतिनाथ के चक्रेश गणधर, चक्र जयी आहा।
ओम् ह्लीं श्री चक्रेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चक्रेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ९३॥

सुमतिनाथ के क्षेत्रदण्ड जी, छत्र-छाँव आहा।
ओम् ह्लीं श्री क्षेत्रदण्ड गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रदण्ड गणधराय अर्घ्यं...॥ ९४॥

सुमतिनाथ के कृत गणधर जी, कृतकृत हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री कृत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कृत गणधराय अर्घ्यं...॥ ९५॥

सुमतिनाथ के शिवकांत गणधर, शिवकांता आहा।
ओम् ह्लीं श्री शिवकांत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शिवकांत गणधराय अर्घ्यं...॥ ९६॥

सुमतिनाथ के शिलास्थित जी, सिद्धशिला आहा।
ओम् ह्लीं श्री शिलास्थित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शिलास्थित गणधराय अर्घ्यं...॥ ९७॥

सुमतिनाथ के भूनुन् गणधर, भानु तुल्य आहा।
ओम् ह्लीं श्री भूनुन् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भूनुन् गणधराय अर्घ्यं...॥ ९८॥

सुमतिनाथ के मनःपर्यय जी, मन जेता आहा।
ओम् ह्लीं श्री मनःपर्यय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मनःपर्यय गणधराय अर्घ्यं...॥ ९९॥

सुमतिनाथ के कोमल गणधर, क्रोध हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोमल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोमल गणधराय अर्घ्यं...॥ १००॥

सुमतिनाथ के शिष्य कदाचित्, कथा कहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कदाचित् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कदाचित् गणधराय अर्घ्यं...॥ १०१॥

सुमतिनाथ के कष्टोत्तर जी, कष्ट हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कष्टोत्तर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कष्टोत्तर गणधराय अर्घ्यं...॥ १०२॥

सुमतिनाथ के छद्मस्थ गणधर, छद्म हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री छद्मस्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री छद्मस्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ १०३॥

सुमतिनाथ के धवले गणधर, धवलमंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री धवले गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धवले गणधराय अर्घ्यं...॥ १०४॥

सुमतिनाथ के गणपाय गणधर, गणनायक आहा।
ओम् ह्रीं श्री गणपाय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गणपाय गणधराय अर्घ्यं...॥ १०५॥

सुमतिनाथ के समाध गणधर, समाधि दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री समाध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समाध गणधराय अर्घ्यं...॥ १०६॥

सुमतिनाथ के विजहार गणधर, विजयहार आहा।
ओम् ह्रीं श्री विजहार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विजहार गणधराय अर्घ्यं...॥ १०७॥

सुमतिनाथ के त्रिगुप्त गणधर, त्रिगुप्ति दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्रिगुप्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिगुप्त गणधराय अर्घ्यं...॥ १०८॥

सुमतिनाथ के शिष्य मगाजिन, महाजिनम आहा।
ओम् ह्रीं श्री मगाजिन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मगाजिन गणधराय अर्घ्यं...॥ १०९॥

सुमतिनाथ के युधाष्ट गणधर, युगाधार आहा।
ओम् ह्रीं श्री युधाष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री युधाष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ११०॥

सुमतिनाथ के गुणी गणधर जी, गुणी करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गुणी गणधराय अर्घ्यं...॥ १११॥

सुमतिनाथ के परमोत्सव जी, परमोत्सव आहा।
ओम् ह्रीं श्री परमोत्सव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री परमोत्सव गणधराय अर्घ्यं...॥ ११२॥

सुमतिनाथ के शिष्य जन्मखग, जन्मजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री जन्मखग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जन्मखग गणधराय अर्घ्यं...॥ ११३॥

सुमतिनाथ के शत्रुघ्न गणधर, शत्रुंजय आहा।
ओम् ह्रीं श्री शत्रुघ्न गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुघ्न गणधराय अर्घ्यं...॥ ११४॥

सुमतिनाथ के सुतीर्थ गणधर, सुधी श्रमण आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुतीर्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुतीर्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ ११५॥

सुमतिनाथ के निधि गणधर जी, निधि तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री निधि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निधि गणधराय अर्घ्यं...॥ ११६॥

पूर्णार्घ्य

(वसन्ततिलिका)

तीर्थेश जी सुमतिनाथ तुम्हें नमोऽस्तु।
जो आपके पथ चले उनकी जयोऽस्तु॥
सो आप को चमर आदि स्वशिष्य पूजें।
ले अर्घ्य आज निधि अंत, नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनाथस्य चमर-आदि षडाधिकशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य चमरादि षडाधिकशत् गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सुमतिनाथ के एक सौ सोलह शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिन्हें बुद्धि ने छोड़ दिया है, जिनकी बुद्धि कुबुद्धि हुई।
जिनकी है जड़बुद्धि धरम में, या दुर्बुद्धि कर्म में हुई॥
बुद्धि-वृद्धि को जो जन चाहें, जो खोजे सद्बुद्धि विजय।
शीश झुकाकर सुमति प्रभु की, वे बोलें मन से जय-जय॥ १॥
जिनने प्रभु की जय-जय बोली, उनके बुद्धि विकार नशे।
नाम कथा करने वालों के, उजड़े घर भी शीघ्र वसे॥

दर्शन पूजन का क्या कहना, भक्त जनों के मजे-मजे।
जगरथ तज उनके विद्यारथ, मोक्षपुरी को सजे-सजे॥२॥
जयन्त विमान तज नगर अयोध्या, जन्म लिए कल्याण हुए।
राज मेघरथ सुमंगला सुत, केवलज्ञानी संत हुए॥
जिनके शिष्य एक सौ सोलह, पहले चमर अमर गणधर।
अंतिम गणधर थे निधिस्वामी, ज्ञान प्रदाता थे गुरुवर॥३॥
ऐसे जिनवर ऐसे गुरुवर, मिले न हमको कर्मों से।
लेकिन गुरु शिष्य की भक्ति, जोड़े हमको धर्मों से॥
धर्म धारकर निज निखार कर, हम भी शिष्य बनें तुम सम।
अपने गुरु की छत्र-छाँव में, कर कल्याण मिले आतम॥४॥
ऐसे सुमतिनाथ भगवन् के, दर्शन कर गुण गाने में।
पाँचों धामों का सुख मिलता, 'सुव्रत' शीश झुकाने में॥
दुनियाँ में वो शान्ति कहाँ जो, शान्ति शरण में आने में।
जीने में वो मजा कहाँ जो, मजा यहाँ मर जाने में॥५॥

(दोहा)

सुमतिनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
चमरादि सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री चमरादि षडाधिकशत् गणधर सहित श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य सुमति प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री पद्मप्रभ पूजन

स्थापना (वसंततिलका)

हे! पद्मनाथ परमेश जिनेश स्वामी।
तीर्थेश षष्टम विभो कमलेश नामी॥
संसार में कमल-सम बनके विरागी।
चैतन्य रूप चखते बन वीतरागी॥
चारित्र के परम पूजित हो विहारी।
सारे विभाव दुख संकट के निवारी॥
वैराग्य के सुरथ पै हमको बिठाओ।
संन्यास दे हृदय में जिनदेव आओ॥
ये अर्चना हम करें प्रभु नाम लेके।
शुद्धात्म का वरण हो जिन जाप देके॥
दे दो हमें चरण की बस धूल थोड़ी।
सम्बन्ध हो मुकति से बन जाए जोड़ी॥

(दोहा)

पूज्य पद्मप्रभु देव जी, भक्त जनों के ईश।
सबको तो सब दो मगर, हमको दो आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

ये जन्म-मृत्यु भय चेतन को सताते।
डूबे स्वयं भव-समुद्र हमें डुबाते॥
श्रद्धान दो वरदहस्त समाधिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

संसार ताप तपते हमको तपाते।
चैतन्य के महल तो बिखरे हि जाते॥
दो जैन-तीर्थ सुधरे निज आत्म वास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

आज्ञा न देव गुरु शास्त्र जनों की मानी।
पाए न भोग जग के नहीं मोक्ष रानी॥
हो छत्र छाँव हम पै कह दो तथास्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

तृष्णाएँ काम मृग की मिटतीं न स्वामी।
जो भोग भोग बनता दुठ और कामी॥
दुर्दर्प काम तज दो निज ब्रह्म वस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सारे हि रोग नशते जग औषधि से।
पै भूख रोग बढ़ता चरु औषधि से॥
ऐसी क्षुधा हरण को व्रत वृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

है मोह की हर किरण करती अँधेरे।
तो भी सभी जगह पै उसके वसेरे॥
वैराग्य ज्ञान मणि चेतन खोज ले तू।

सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सर्वत्र कर्मफल जीव चखे अकेले।
देते न साथ जगबन्धु गुरु न चेले॥
दो कर्म के हरण को जप ध्यान अस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संसार वृक्ष कड़वे फल वो खिलाते।
खाके जिन्हें हम सदा मरते हि जाते॥
सम्यक्त्व संयम सुधामृत स्वाद ले तू।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अध्यात्म की शिखर की सबसे ऊँचाई।
शुद्धात्म धाम जिससे बस दे दिखाई॥
वो देवशास्त्र गुरु ही बस दान देते।
पूजा विधान विधि सो हम ठान लेते॥
ये नीर चंदन चढ़े जब द्रव्य-भावी।
तो ही विभाव नशते बनते स्वभावी॥
पाएँ स्वभाव निजभाव समृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

(दोहा)

इस अनन्त संसार में, पूज्य पद्मप्रभु नाथ।
कोई अपना है नहीं, अतः दीजिये साथ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

माघ कृष्ण छठ को तजे, ग्रैवेयक सुरसाज।
मातृ सुसीमा गर्भ में, बसे पद्म जिनराज॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथ कृष्ण फाल्गुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गए सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर के ११० गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

पद्मप्रभु तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

पद्मप्रभु के पहले गणधर, वज्रचमर आहा।
ओम् ह्रीं श्री वज्रचमर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वज्रचमर गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

पद्मप्रभु के श्रद गणधर जी, श्रद्धालु आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रद गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

पद्मप्रभु के सत्कोपत् जी, सत्पथ दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सत्कोपत् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सत्कोपत् गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

पद्मप्रभु के धाराधर जी, धैर्य धरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री धाराधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धाराधर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

पद्मप्रभु के पुष्पवृष्टि जी, पुष्प तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुष्पवृष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पवृष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

पद्मप्रभु के गताधर गणधर, गाथा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गताधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गताधर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

पद्मप्रभु के कन्नक गणधर, कनक तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री कन्नक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कन्नक गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

पद्मप्रभु के शैल शिष्य जी, शील गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री शैल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शैल गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

पद्मप्रभु के विदृत गणधर, विद्वान हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री विदृत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विदृत गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

पद्मप्रभु के बृहस्पति जी, ब्रह्म गुणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री बृहस्पति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बृहस्पति गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

पद्मप्रभु के विडग शिष्य जी, बिलग नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री विडग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विडग गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

पद्मप्रभु के कंपन गणधर, कंप नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री कंपन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कंपन गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

पद्मप्रभु के संवाद गणधर, संवाहक आहा।
ओम् ह्लीं श्री संवाद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संवाद गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

पद्मप्रभु के शिष्य जगौगन, जाग्रत हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री जगौगन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जगौगन गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

पद्मप्रभु के वंदनार्थ जी, वंद्य योग्य आहा।
ओम् ह्लीं श्री वंदनार्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वंदनार्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

पद्मप्रभु के त्रिभुवन गणधर, त्रस्त नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री त्रिभुवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

पद्मप्रभु के वरदत्ता जी, वर देते आहा।
ओम् ह्रीं श्री वरदत्ता गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वरदत्ता गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

पद्मप्रभु के मंत्रिगता जी, मंत्र दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री मंत्रिगता गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मंत्रिगता गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

पद्मप्रभु के ददृश गणधर, दर्शनीय आहा।
ओम् ह्रीं श्री ददृश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ददृश गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

पद्मप्रभु के शिष्य अरुन जी, अरुण नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरुन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अरुन गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

पद्मप्रभु के अरतेय गणधर, अर्ति हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरतेय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अरतेय गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

पद्मप्रभु के कष्टधकेश जी, कष्ट हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कष्टधकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कष्टधकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

पद्मप्रभु के संघात गणधर, संघ प्रमुख आहा।
ओम् ह्रीं श्री संघात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री संघात गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

पद्मप्रभु के कृतमन्य गणधर, कृतज्ञ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृतमन्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कृतमन्य गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

पद्मप्रभु के शिष्य पद्मरथ, पद्मतुल्य आहा।
ओम् ह्लीं श्री पद्मरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

पद्मप्रभु के स्तंभित जी, स्तंभ रहे आहा।
ओम् ह्लीं श्री स्तंभित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्तंभित गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

पद्मप्रभु के खड्गाधर जी, खड़गासन आहा।
ओम् ह्लीं श्री खड्गाधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री खड्गाधर गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

पद्मप्रभु के पूरतोंग जी, पूर्णतुष्ट आहा।
ओम् ह्लीं श्री पूरतोंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पूरतोंग गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

पद्मप्रभु के समुद्भूत जी, समाधि दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री समुद्भूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री समुद्भूत गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

पद्मप्रभु के निक्राशत जी, निकलंक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री निक्राशत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निक्राशत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

पद्मप्रभु के पदंग गणधर, पद धारी आहा।
ओम् ह्लीं श्री पदंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पदंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

पद्मप्रभु के प्रत्यन्त गणधर, प्रत्येक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री प्रत्यन्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रत्यन्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

पद्मप्रभु के सचिउचत जी, सत्यरूप आहा।
ओम् ह्लीं श्री सचिउचत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री सचिउचत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

पद्मप्रभु के उच्यत गणधर, उच्च करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री उच्यत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री उच्यत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

पद्मप्रभु के सुकृतपुण्य जी, सुकृत हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुकृतपुण्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री सुकृतपुण्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

पद्मप्रभु के मोहत गणधर, मोह हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री मोहत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री मोहत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

पद्मप्रभु के स्मदान जी, स्मय ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री स्मदान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री स्मदान गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

पद्मप्रभु के शिष्य अकम्पन, अकम्प हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अकम्पन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री अकम्पन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

पद्मप्रभु के धवलख गणधर, धवलसूत्र आहा।
ओम् ह्लीं श्री धवलख गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री धवलख गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

पद्मप्रभु के प्रभास गणधर, पुंज रूप आहा।
ओम् ह्लीं श्री प्रभास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री प्रभास गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

पद्मप्रभु के एकात गणधर, एकरूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री एकात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री एकात गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

पद्मप्रभु के योगी गणधर, योगी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री योगी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री योगी गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

पद्मप्रभु के धूमकेत जी, धूम्र हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री धूमकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धूमकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

पद्मप्रभु के शिष्य पद्मरथ, पद्मरथी आहा।
ओम् ह्रीं श्री पद्मरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

पद्मप्रभु के शिष्य वीरगद, वीरपुरुष आहा।
ओम् ह्रीं श्री वीरगद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वीरगद गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

पद्मप्रभु के राजेस्थि जी, राज करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री राजेस्थि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री राजेस्थि गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

पद्मप्रभु के मंत्री गणधर, मंत्ररूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री मंत्री गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्री गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

पद्मप्रभु के प्राहू गणधर, प्राण रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्राहू गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राहू गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

पद्मप्रभु के ननिवाह गणधर, नय-देशक आहा।
ओम् ह्लीं श्री ननिवाह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ननिवाह गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

पद्मप्रभु के अत्तिलार्द जी, आर्त हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अत्तिलार्द गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अत्तिलार्द गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

पद्मप्रभु के अचलकीर्ति जी, अचल रहे आहा।
ओम् ह्लीं श्री अचलकीर्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अचलकीर्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

पद्मप्रभु के निखित्स गणधर, निखिल रूप आहा।
ओम् ह्लीं श्री निखित्स गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निखित्स गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

पद्मप्रभु के बलिप्रति जी, बलि हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री बलिप्रति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बलिप्रति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

पद्मप्रभु के दातार गणधर, दाता हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री दातार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दातार गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

पद्मप्रभु के शिष्य सुदर्शन, सुदर्शन दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुदर्शन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

पद्मप्रभु के शिष्य सुखार्नव, सुखसागर आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुखार्नव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुखार्नव गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

पद्मप्रभु के विष्णु गणधर, विष हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री विष्णु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री विष्णु गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

पद्मप्रभु के प्रतिसेन जी, प्रतिपालक आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रतिसेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री प्रतिसेन गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

पद्मप्रभु के उत्कृष्ट गणधर, उत्प्रेरक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्कृष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री उत्कृष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

पद्मप्रभु के गौवर्द्धन जी, गौर करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गौवर्द्धन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री गौवर्द्धन गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

पद्मप्रभु के वेष्टिप गणधर, वैर हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री वेष्टिप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री वेष्टिप गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

पद्मप्रभु के विक्रिया गणधर, विख्यात हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विक्रिया गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री विक्रिया गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

पद्मप्रभु के दीर्घांग गणधर, दीर्घ आयु आहा।
ओम् ह्रीं श्री दीर्घांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री दीर्घांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

पद्मप्रभु के द्विपद गणधर, द्वंद हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री द्विपद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्रीं श्री द्विपद गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

पद्मप्रभु के नायाद गणधर, नायक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री नायाद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री नायाद गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

पद्मप्रभु के सांगि गणधर, संज्ञी हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सांगि गणधर नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री सांगि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

पद्मप्रभु के महाघोष जी, महाघोष आहा।
ओम् ह्लीं श्री महाघोष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री महाघोष गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥

पद्मप्रभु के रेशि गणधर, रैन हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री रेशि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री रेशि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥

पद्मप्रभु के वरेचि गणधर, वरिष्ठ हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री वरेचि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री वरेचि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥

पद्मप्रभु के चरणनिन गणधर, चरण दिए आहा।
ओम् ह्लीं श्री चरणनिन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री चरणनिन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥

पद्मप्रभु के ऋद्धधे गणधर, ऋद्धि दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री ऋद्धधे गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री ऋद्धधे गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥

पद्मप्रभु के उत्साह गणधर, उत्साहित आहा।
ओम् ह्लीं श्री उत्साह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री उत्साह गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥

पद्मप्रभु के कुर्वन् गणधर, कुंदन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुर्वन् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुर्वन् गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

पद्मप्रभु के पूजत गणधर, पूज्य करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पूजत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पूजत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

पद्मप्रभु के ददाति गणधर, दर्द हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री ददाति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ददाति गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

पद्मप्रभु के भयमन् गणधर, भय-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री भयमन् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भयमन् गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

पद्मप्रभु के यथांग गणधर, यथाजात आहा।
ओम् ह्रीं श्री यथांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री यथांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

पद्मप्रभु के समास गणधर, समय रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री समास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समास गणधराय अर्घ्यं...॥ ७८॥

पद्मप्रभु के धाम्नि गणधर, धन्य करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री धाम्नि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धाम्नि गणधराय अर्घ्यं...॥ ७९॥

पद्मप्रभु के बुद्धिच गणधर, बुद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री बुद्धिच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्धिच गणधराय अर्घ्यं...॥ ८०॥

पद्मप्रभु के नीमीन गणधर, निम्न नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नीमीन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नीमीन गणधराय अर्घ्यं...॥ ८१॥

पद्मप्रभु के गदतोदित जी, गद-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री गदतोदित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गदतोदित गणधराय अर्घ्यं...॥ ८२॥

पद्मप्रभु के भ्राजिष्णु जी, भ्रमण हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भ्राजिष्णु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भ्राजिष्णु गणधराय अर्घ्यं...॥ ८३॥

पद्मप्रभु के कटउष्ट गणधर, कटुक नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कटउष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कटउष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ८४॥

पद्मप्रभु के प्रथमादि जी, प्रथम पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रथमादि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमादि गणधराय अर्घ्यं...॥ ८५॥

पद्मप्रभु के गजदंत गणधर, गजरथ दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गजदंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गजदंत गणधराय अर्घ्यं...॥ ८६॥

पद्मप्रभु के गजदत्त गणधर, गर्व हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गजदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गजदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ८७॥

पद्मप्रभु के स्तनकुभौ गणधर, स्थाई आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्तनकुभौ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्तनकुभौ गणधराय अर्घ्यं...॥ ८८॥

पद्मप्रभु के छद्मस्थ गणधर, छिद्र हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री छद्मस्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री छद्मस्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ ८९॥

पद्मप्रभु के जल्लो गणधर, जल्लौषध आहा।
ओम् ह्रीं श्री जल्लो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जल्लो गणधराय अर्घ्यं...॥ ९०॥

पद्मप्रभु के पद्मोदर जी, पद पूजित आहा।
ओम् ह्रीं श्री पद्मोदर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मोदर गणधराय अर्घ्यं...॥ ९१॥

पद्मप्रभु के भ्रनान गणधर, भ्रांत नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भ्रनान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भ्रनान गणधराय अर्घ्यं...॥ ९२॥

पद्मप्रभु के तम गणधर जी, तमहारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री तम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तम गणधराय अर्घ्यं...॥ ९३॥

पद्मप्रभु के पुण्योदित जी, पुण्य रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुण्योदित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्योदित गणधराय अर्घ्यं...॥ ९४॥

पद्मप्रभु के अक्षिन गणधर, अक्षय हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अक्षिन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षिन गणधराय अर्घ्यं...॥ ९५॥

पद्मप्रभु के शिष्य कुलिच जी, कुलगुरु हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुलिच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुलिच गणधराय अर्घ्यं...॥ ९६॥

पद्मप्रभु के पटकुल गणधर, पाठक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पटकुल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पटकुल गणधराय अर्घ्यं...॥ ९७॥

पद्मप्रभु के कोपान्नि जी, कोप न दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोपान्नि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोपान्नि गणधराय अर्घ्यं...॥ ९८॥

पद्मप्रभु के गांधर्वा जी, ज्ञानांगी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गांधर्वा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गांधर्वा गणधराय अर्घ्यं...॥ ९९॥

पद्मप्रभु के गोपुर गणधर, गोपालक आहा।
ओम् ह्रीं श्री गोपुर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गोपुर गणधराय अर्घ्यं...॥ १००॥

पद्मप्रभु के शिष्य समाश्रित, समताधर आहा।
ओम् ह्रीं श्री समाश्रित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समाश्रित गणधराय अर्घ्यं...॥ १०१॥

पद्मप्रभु के गुणसागर जी, गुणसागर आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणसागर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुणसागर गणधराय अर्घ्यं...॥ १०२॥

पद्मप्रभु के नन्दीतट जी, निजानंद आहा।
ओम् ह्रीं श्री नन्दीतट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीतट गणधराय अर्घ्यं...॥ १०३॥

पद्मप्रभु के सत्पादय जी, सत्पथ दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सत्पादय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सत्पादय गणधराय अर्घ्यं...॥ १०४॥

पद्मप्रभु के शिष्य अशोकित, अशोक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अशोकित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अशोकित गणधराय अर्घ्यं...॥ १०५॥

पद्मप्रभु के सूनटि गणधर, शून्य नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सूनटि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सूनटि गणधराय अर्घ्यं...॥ १०६॥

पद्मप्रभु के सफलांग गणधर, सफल करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सफलांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सफलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ १०७॥

पद्मप्रभु के शिष्य सुमुन्नत, सुमन करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुमुन्नत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुमुन्नत गणधराय अर्घ्यं...॥ १०८॥

पद्मप्रभु के शिष्य कुलाविल, कुलीन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुलाविल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुलाविल गणधराय अर्घ्यं...॥ १०९॥

पद्मप्रभु के विवक्ष गणधर, विविध रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री विवक्ष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विवक्ष गणधराय अर्घ्यं...॥ ११०॥

पूर्णार्घ्य

(शुद्ध गीता)

पदमप्रभु जी पदम जैसे, खिलाते रोज भक्तों को।
इसी से वज्र से लेकर, विवक्ष आदि शिष्यों को॥
सहारा दें किनारा दें, किए सबको सुरक्षित हों।
अतःहम अर्घ्य से पूजें, नमोऽस्तु भी निवेदित हों॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथस्य वज्रचमर-आदि दशाधिकशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथस्य वज्रचमरादि दशाधिकशत् गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

पद्मप्रभु के एक सौ दस श्री शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके रिश्ते नाते छूटे, भाग्य कमल भी मुरझाये।
दूर हुए जो प्रभु से प्राणी, बहुत बुरे दिन भी आए॥
घोर निराशा के अँधियारे, जिनके जीवन में होते।
वही पद्मप्रभु को ध्याकर के, बोलो कौन कहाँ रोते॥ १॥
आओ उनकी कथा वाँच लें, जो वचनों को शुद्ध करें।
जिनके पथ पर चलने वाले, भक्त स्वयं को सिद्ध करें॥
ग्रैवेयक से कौशाम्बीपुर, धरण सुसीमा पुत्र हुए।
मुनि बन वय छद्मस्थ गुजारी, केवलज्ञानी संत हुए॥२॥
सुनो! एक सौ दस गणधर से, समवसरण भी खूब भरा।
जिसमें कमलासन पर प्रभु का, निज चैतन्य रूप निखरा॥
दिव्य देशना दे शिष्यों को, मोक्षमार्ग के तत्त्व छुए।
वज्रचमर थे पहले गणधर, अंतिम विवक्ष शिष्य हुए॥३॥
ऐसे पद्मप्रभु की मूरत, बड़े पुण्य से पाई है।
पाप निर्जरा पुण्य प्राप्ति को, पूजा नित्य रचाई है॥
स्वामी आप वरों के दाता, हम आए वर पाने को।
छींटा दे दो ज्ञान कणों का, हमें होश में आने को॥४॥

मिले न हमको सच्चे जिनवर, मिले न गणधर शिष्य हमें।
गुरु शिष्य की परम्परा में, शामिल होने भजें तुम्हें॥
अगर हमें प्रभु छाँव मिली तो, मोक्ष गाँव हम पा लेंगे।
'सुव्रत' भवसागर से नैय्या, जल्दी पार लगा लेंगे॥५॥

(दोहा)

पद्मप्रभु भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
वज्रचमर सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्रीवज्रचमरादि दशाधिकशत् गणधर सहित श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य पद्मप्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

उजाले में हैं
उजाला करते हैं
गुरु को बंदू

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जिनवर नाथ सुपार्श्वजी, सप्तम सुन्दरदेव।
दर्शन पूजन को झुके, भक्तशीश स्वयमेव॥

(शार्दूलविक्रीडित) (लय : मङ्गलाष्टक)

अरिहन्तेश सुपार्श्वनाथ भगवन्, तीर्थेश स्वामी तुम्हीं।
हो सिद्धालय मोक्षरूप जग में, श्रद्धा सुधा हो तुम्हीं॥
सारा ये जग आपसे तर रहा, दे दो सहारा हमें।
भक्तों की बस नाँव पार कर दो, सो ही पुकारा तुम्हें॥
होगी पार न नाँव तो फिर सुनो, होगी तुम्हारी हँसी।
चाहो आप न आप पै जग हँसे, तो तार दो शीघ्र ही॥
आस्था रोज पुकारती प्रभु तुम्हें, जल्दी सुनो प्रार्थना।
श्रद्धा मंदिर में निवास कर लो, प्रारम्भ हो अर्चना॥

(सोरठा)

प्रभु सुपार्श्व जिनराज, आतम कली खिलाइए।
निज सम हमको आज, सुन्दर रूप दिलाइये॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जाना है जिनको सदैव अपना, माना उन्हीं को सगा।
सारे संकट रोग कष्ट दुख भी, पाए उन्हीं से दगा॥
ऐसा ही हम राग रोग तजने, ले नीर सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जो सांसारिक द्रव्य नश्वर रहे, देते सभी ताप वो।
प्राणीमात्र तपें जलें दुख सहें, त्यागें नहीं पाप को॥

ये वैभाविक भाव त्याग करने, ले गंध सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अज्ञानी हम तो रहे क्षय हुआ, खोदा कुआ स्वार्थ का।
पूरा जो कब है भरा कपट से, घोंटा गला आत्म का॥
दे दो आश्रय भक्त को चरण का, ले पुंज सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

पाता जो कुछ भोग का विषय वो, भाता हमें है नहीं।
भाता जो कुछ भोग का विषय वो, पाता कभी भी नहीं॥
ये इच्छा जल को मिले तप सुधा, ले पुष्प सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

बीता काल अनन्त रोग तन को, वो भूख ही मारती।
आत्मा की सुध हो गई अब जिसे, वो ही उसे तारती॥
आत्मा को चखने सभी भगत ले, नैवेद्य सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीये भूपर सूर्य चाँद नभ में, तारे करें आरती।
ये अज्ञान निशा नहीं हर सकें, जानें नहीं भारती॥
पाएँ ज्योति अनन्तज्ञान हम भी, ले दीप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

पापों की जड़ दौड़-धूप करके, बाँधे सदा गाठरी।
है विश्वास न दीप धूप फल पै, जो पुण्य की दे झड़ी॥

कर्मों का वन दग्ध हो चित खिले, ले धूप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

रंगीले फल विश्व के हम तजें, जो पुण्य के पाप के।
आत्मा की निज स्वानुभूति फल को, कैसे चखें ओ! सखे॥
वो हों प्राप्त हमें तभी फल भरी, ले थाल सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

है विश्वास हमें जिनेन्द्र तुम पै, पूजा इसी से करें।
गाएंगे हम आपके भजन भी, गाथा इसी से करें॥
पाएंगे हम छाँव भी चरण की, आस्था हमारी यही।
आएंगे हम मोक्ष के महल में, श्रद्धा हमारी यही॥
आशीर्वाद हमें यही बस मिले, छूटे न पूजा कभी।
दो आशीष हमें यही बस प्रभो!, टूटे न आस्था कभी॥
ऐसी छाँव कृपा करो बस विभो!, अक्षय्य श्रद्धा करें।
आत्मा शाश्वत भेंट अर्घ्य बन सके, विश्राम यात्रा करें॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

भाद्र शुक्ल छठ को तजे, मध्यम पद अहमिन्द्र।
पृथ्वी माँ के गर्भ में, वसे सुपार्श्व जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजे-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गए, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री सुपार्श्वनाथ के ९५ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

सुपार्श्वनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

सुपार्श्वनाथ के बलदत्त गणधर, प्रथम शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री बलदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बलदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

सुपार्श्वनाथ के मण्डप गणधर, मण्डित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मण्डप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मण्डप गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

सुपार्श्वनाथ के लोष्टकेश जी, लोक पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री लोष्टकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लोष्टकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

सुपार्श्वनाथ के जातकेश जी, जात रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री जातकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जातकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

सुपार्श्वनाथ के उज्वलांग जी, उज्जवल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उज्वलांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उज्वलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

सुपार्श्वनाथ के सुकेसि गणधर, सुखकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुकेसि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुकेसि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

सुपार्श्वनाथ के सुषेण गणधर, शुष्क नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुषेण गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य सुफल जी, सुफल भरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुफल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुफल गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

सुपार्श्वनाथ के सुपाक गणधर, सुपाल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुपाक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुपाक गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

सुपार्श्वनाथ के निर्मोही जी, निर्मोही आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्मोही गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मोही गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

सुपार्श्वनाथ के सीमंधर जी, श्रीमान हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सीमंधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सीमंधर गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

सुपार्श्वनाथ के प्रतिर्य गणधर, प्रत्येक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रतिर्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रतिर्य गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

सुपार्श्वनाथ के लोकोत्तर जी, लोकोत्तर आहा।
ओम् ह्रीं श्री लोकोत्तर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तर गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

सुपार्श्वनाथ के जरदंग गणधर, जरा हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री जरदंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जरदंग गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

सुपार्श्वनाथ के क्वयाम गणधर, कुशल करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्वयाम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री क्वयाम गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य वचोमृत, वचनामृत आहा।
ओम् ह्रीं श्री वचोमृत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वचोमृत गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

सुपार्श्वनाथ के स्वनतान गणधर, स्वानुभवीआहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वनतान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्वनतान गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

सुपार्श्वनाथ के क्षेमंकर जी, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्नीं श्री क्षेमंकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकर गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥
सुपार्श्वनाथ के मुद्‌गत गणधर, मुग्ध करें आहा।
ओम् ह्नीं श्री मुद्‌गत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मुद्‌गत गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥
सुपार्श्वनाथ के विरचित गणधर, विरले हैं आहा।
ओम् ह्नीं श्री विरचित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विरचित गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥
सुपार्श्वनाथ के नाना गणधर, नाना श्री आहा।
ओम् ह्नीं श्री नाना गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नाना गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥
सुपार्श्वनाथ के गुप्ति गणधर, गुप्त करें आहा।
ओम् ह्नीं श्री गुप्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गुप्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥
सुपार्श्वनाथ के पालक गणधर, पालक हैं आहा।
ओम् ह्नीं श्री पालक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पालक गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥
सुपार्श्वनाथ के भोगत गणधर, भोग हरें आहा।
ओम् ह्नीं श्री भोगत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भोगत गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥
सुपार्श्वनाथ के क्यस्त गणधर, क्रिया हरें आहा।
ओम् ह्नीं श्री क्यस्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री क्यस्त गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य क्षपण जी, क्षपण करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्षपण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षपण गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य सुभाक्षत, शुभ कर्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुभाक्षत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुभाक्षत गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

सुपार्श्वनाथ के क्षलोक गणधर, छल हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्षलोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षलोक गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

सुपार्श्वनाथ के ईशत गणधर, ईश्वर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ईशत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ईशत गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

सुपार्श्वनाथ के कर्मनाशे जी, कर्म हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कर्मनाशे गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मनाशे गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

सुपार्श्वनाथ के ऋषि गणधर जी, ऋषि राजा आहा।
ओम् ह्रीं श्री ऋषि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

सुपार्श्वनाथ के अक्षेम गणधर, अक्ष-जयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री अक्षेम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षेम गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

सुपार्श्वनाथ के द्युतिरक्त जी, द्योतक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री द्युतिरक्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री द्युतिरक्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

सुपार्श्वनाथ के सुगुप्ति गणधर, सुगत करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुगुप्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री सुगुप्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

सुपार्श्वनाथ के पुष्पेसु जी, पुष्पसमा आहा।
ओम् ह्लीं श्री पुष्पेसु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री पुष्पेसु गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

सुपार्श्वनाथ के चतुर्थि गणधर, चतुररूप आहा।
ओम् ह्लीं श्री चतुर्थि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री चतुर्थि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

सुपार्श्वनाथ के गौतम गणधर, गोत्र हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री गौतम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री गौतम गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

सुपार्श्वनाथ के संयमी गणधर, संयम दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री संयमी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री संयमी गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य धसानन, धनुष रूप आहा।
ओम् ह्लीं श्री धसानन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री धसानन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

सुपार्श्वनाथ के राजन गणधर, राज-राज आहा।
ओम् ह्लीं श्री राजन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री राजन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

सुपार्श्वनाथ के नलना गणधर, नाल हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री नलना गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री नलना गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

सुपार्श्वनाथ के शतृंघण जी, शत्रुंजय आहा।
ओम् ह्रीं श्री शतृंघण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शतृंघण गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

सुपार्श्वनाथ के अनागार जी, अनागार आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनागार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अनागार गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

सुपार्श्वनाथ के सुपार्श्व गणधर, स्वपर गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुपार्श्व गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्व गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

सुपार्श्वनाथ के सत्यस गणधर, सत्य रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री सत्यस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यस गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

सुपार्श्वनाथ के प्राणित गणधर, प्राण रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्राणित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणित गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य वचस जी, वचन मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री वचस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वचस गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

सुपार्श्वनाथ के जगत्सुखा जी, जगत सुखी आहा।
ओम् ह्रीं श्री जगत्सुखा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जगत्सुखा गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य अदत जी, अर्ध नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अदत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अदत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

सुपार्श्वनाथ के यशोधरात जी, यशोधरा आहा।
ओम् ह्रीं श्री यशोधरात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री यशोधरात गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

सुपार्श्वनाथ के देवदत्त जी, देवपूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री देवदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री देवदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

सुपार्श्वनाथ के चकोरि गणधर, चकित करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चकोरि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चकोरि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

सुपार्श्वनाथ के दशबाह्य जी, दशधर्मा आहा।
ओम् ह्रीं श्री दशबाह्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दशबाह्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

सुपार्श्वनाथ के निवृत्ति गणधर, निर्यापक आहा।
ओम् ह्रीं श्री निवृत्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निवृत्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

सुपार्श्वनाथ के परलोक गणधर, परमसुखी आहा।
ओम् ह्रीं श्री परलोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री परलोक गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

सुपार्श्वनाथ के उत्साह गणधर, उत्सव दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्साह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्साह गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

सुपार्श्वनाथ के उत्कंठ गणधर, उत्कर्षी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्कंठ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्कंठ गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

सुपार्श्वनाथ के महासाधु जी, महासाधु आहा।
ओम् ह्रीं श्री महासाधु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महासाधु गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

सुपार्श्वनाथ के सुसाधु गणधर, सुख स्वादु आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुसाधु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुसाधु गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

सुपार्श्वनाथ के क्षिपात गणधर, छिप न सकें आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्षिपात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षिपात गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

सुपार्श्वनाथ के सुगति गणधर, सुगति करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुगति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुगति गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

सुपार्श्वनाथ के सुमति गणधर, सुमति करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुमति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुमति गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

सुपार्श्वनाथ के सुषेनि गणधर, सुख श्रेणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुषेनि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुषेनि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

सुपार्श्वनाथ के रुण्यत गणधर, रुग्ण नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री रुण्यत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रुण्यत गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

सुपार्श्वनाथ के षट्चत्वारि, षट्-कारक आहा।
ओम् ह्रीं श्री षट्चत्वारि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री षट्चत्वारि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य शेष जी, श्रेष्ठ रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शेष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शेष गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य पधित जी, पतित नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पधित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पधित गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥

सुपार्श्वनाथ के सुपुष्ट गणधर, सुपुष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुपुष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुपुष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥

सुपार्श्वनाथ के चित्रांग गणधर, चित्त हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चित्रांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चित्रांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥

सुपार्श्वनाथ के भूति गणधर, भूत नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भूति गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य तनाचन, तनाव हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री तनाचन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री तनाचन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥

सुपार्श्वनाथ के उपदेश गणधर, उपदेशक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उपदेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उपदेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥

सुपार्श्वनाथ के निर्वाण गणधर, निर्वाण दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्वाण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निर्वाण गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य अवल जी, अव्वल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अवल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अवल गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

सुपार्श्वनाथ के विधेय गणधर, विधेय हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विधेय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विधेय गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य विघ्नधत, विघ्न हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विघ्नधत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विघ्नधत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

सुपार्श्वनाथ के विमोही गणधर, विमोह हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विमोही गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विमोही गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

सुपार्श्वनाथ के चलात् गणधर, चलित नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री चलात् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चलात् गणधराय अर्घ्यं...॥ ७८॥

सुपार्श्वनाथ के पाण्डुर गणधर, पांडु नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पाण्डुर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पाण्डुर गणधराय अर्घ्यं...॥ ७९॥

सुपार्श्वनाथ के जीवन गणधर, जीवन दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री जीवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जीवन गणधराय अर्घ्यं...॥ ८०॥

सुपार्श्वनाथ के स्वरवांधर जी, स्वर्ग पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वरवांधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्वरवांधर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८१॥

सुपार्श्वनाथ के स्थैर्य गणधर, स्थिर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थैर्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्थैर्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ८२॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य चलाचल, चतुर करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चलाचल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चलाचल गणधराय अर्घ्यं...॥ ८३॥

सुपार्श्वनाथ के सर्वमेव जी, सर्व पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वमेव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वमेव गणधराय अर्घ्यं...॥ ८४॥

सुपार्श्वनाथ के जलमिन्दु जी, जल न सकें आहा।
ओम् ह्रीं श्री जलमिन्दु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जलमिन्दु गणधराय अर्घ्यं...॥ ८५॥

सुपार्श्वनाथ के बुध गणधर जी, बुध.ज्ञानी आहा।
ओम् ह्रीं श्री बुध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बुध गणधराय अर्घ्यं...॥ ८६॥

सुपार्श्वनाथ के समृद्धि गणधर, सम्रद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री समृद्धि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समृद्धि गणधराय अर्घ्यं...॥ ८७॥

सुपार्श्वनाथ के पुंगव गणधर, पुंगव हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुंगव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुंगव गणधराय अर्घ्यं...॥ ८८॥

सुपार्श्वनाथ के भक्तिभर जी, भक्ति भरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भक्तिभर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तिभर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८९॥

सुपार्श्वनाथ के अतिरुष्ट जी, अति रुष्ट न आहा।
ओम् ह्रीं श्री अतिरुष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अतिरुष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ९०॥

सुपार्श्वनाथ के शिष्य हरख जी, हरखो तो आहा।
ओम् ह्रीं श्री हरख गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री हरख गणधराय अर्घ्यं...॥ ९१॥

सुपार्श्वनाथ के अशोक गणधर, अशोक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अशोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अशोक गणधराय अर्घ्यं...॥ ९२॥

सुपार्श्वनाथ के सनृघण जी, शून्य नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सनृघण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सनृघण गणधराय अर्घ्यं...॥ ९३॥

सुपार्श्वनाथ के सकलोच गणधर, सकल गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सकलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सकलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ ९४॥

सुपार्श्वनाथ के अमूढ्य गणधर, अमूढ़ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अमूढ्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अमूढ्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ९५॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

बलदत्त आदि अमूढ्य अंतिम, पाँच कम सौ गणधरा।
भजके सुपारसनाथ प्रभु के, पा लिए आतम खरा॥
कल्याण 'सुव्रत' कर सकें, आशीष ऐसा दीजिए।
पूर्णार्घ्य ले करते नमोऽस्तु, पार हमको कीजिए॥

(चौपाई)

सुपार्श्वनाथ के बलदत्तादि, अमूढ्य अंतिम शिष्य उपाधि।
कुल पंचानवें गणधर पूजें, अर्घ्य चढ़ा स्वर नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य बलदत्त-आदि पंचनवति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य वृषभसेनादि पंचनवति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सुपार्श्व के पंचानवें, ज्ञानी शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

सुपार्श्वनाथ जिनराज आप हो, सुखसागर सुख-अम्बर हो।
सुख के सूरज-चाँद सितारे, सुख के बादल भूधर हो॥
सुख की धरती सुख की वर्षा, तुम हो सुख की हरियाली।
सुखदाता सुख पुंज तुम्हीं हो, सुख की होली दीवाली॥१॥
सुख के रत्न खजाने तुम हो, सुख के तुम ही धाम रहे।
सुखानन्द तुम सुख शाश्वत हो, वीतराग विज्ञान रहे॥
तुम हो सुखिया हम तो दुखिया, कैसे तुमको पाएँ हम।
इसीलिए तो दर्शन करके, पूजा-पाठ रचाएँ हम॥२॥
ग्रैवेयक से काशी राजा, सुप्रतिष्ठ पृथ्वी माँ के।
हुए पुत्र फिर बने केवली, समवसरण आतम ध्या के॥
शिष्य हुए पंचानवे गणधर, प्रथम शिष्य बलदत्त अहो!
अंतिम अमूढ्य गणधर स्वामी, भक्त कहें जय हो! जय हो!॥३॥

गुरु से पाकर ज्ञान तत्त्व को, शिष्यों ने जग को बाँटा।
जिनवर के अनुयायी होकर, कर्मों का बन्धन काटा॥
नाथ! आपने पापशत्रु को, बुद्धि-कला से मौन किया।
और बाद में मौन धारकर, करके युद्ध परास्त किया॥४॥
भाग्य हमारा हमसे रूठा, अतः गुरु न शिष्य मिले।
किन्तु आपकी भक्ति करके, दुनियाँ के हर पर्व मिले॥
द्रव्य भाव नोकर्म नशा दो, भक्तों को मत ठुकराओ।
शब्द छन्द पर ध्यान न देकर, करुणा कर अब अपनाओ॥५॥
पास न अपने बुला सको तो, इतनी कृपा अवश्य करो।
आँखों से ना ओझल होना, सदा मनालय वास करो॥
श्वाँस-श्वाँस धड़कन-धड़कन से, दूर करो विभाव बदबू।
'सुव्रत' 'विद्या' के निजघट में, भर दो जिन-श्रद्धा खुशबू॥६॥

(दोहा)

सुपार्श्वनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
बलदत्तादि सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री बलदत्तादि पंचनवति गणधर सहित श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य सुपार्श्व प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हर्षे॥
नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शान्ति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल-खेल में, गई जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम-मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चंदन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख-सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कान्ति भी अद्भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगंधी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आए चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री चंद्रप्रभ के ९३ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

चंद्रप्रभ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

चंद्रप्रभु के दत्तक गणधर, प्रथम शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री दत्तक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दत्तक गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

चंद्रप्रभु के तत्पर गणधर, तत्त्व धनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री तत्पर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तत्पर गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

चंद्रप्रभु के मैत्री गणधर, मित्र रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री मैत्री गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मैत्री गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

चंद्रप्रभु के अरिदमन जी, अरि विजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरिदमन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अरिदमन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

चंद्रप्रभु के प्रतिष्ट गणधर, परमेष्ठी आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रतिष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

चंद्रप्रभु के सूमान गणधर, सूत्र रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री सूमान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सूमान गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

चंद्रप्रभु के चन्द्रसेन जी, चंद्रोदय आहा।
ओम् ह्रीं श्री चन्द्रसेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रसेन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

चंद्रप्रभु के सोपवास जी, शोधक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सोपवास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सोपवास गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

चंद्रप्रभु के व्रतकेश गणधर, व्रतदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री व्रतकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री व्रतकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

चंद्रप्रभु के अरिष्ट गणधर, अरिष्ट हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरिष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अरिष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

चंद्रप्रभु के मुक्तिमणि जी, मुक्तिमहल आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुक्तिमणि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तिमणि गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

चंद्रप्रभु के व्यजेष्ट गणधर, व्यापक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री व्यजेष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री व्यजेष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

चंद्रप्रभु के सिद्धान् गणधर, सिद्धगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिद्धान् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धान् गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

चंद्रप्रभु के सुखेण गणधर, सुखी करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुखेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुखेण गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

चंद्रप्रभु के ध्यानात्म गणधर, ध्यानी हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री ध्यानात्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यानात्म गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

चंद्रप्रभु के अश्रौत गणधर, अशुभ हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अश्रौत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अश्रौत गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

चंद्रप्रभु के निधाय गणधर, निर्धारक आहा।
ओम् ह्लीं श्री निधाय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निधाय गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

चंद्रप्रभु के अचिते गणधर, अचित नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अचिते गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अचिते गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

चंद्रप्रभु के चन्द्रवेदक जी, चंद्रमुखी आहा।
ओम् ह्लीं श्री चन्द्रवेदक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रवेदक गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

चंद्रप्रभु के लघुभृत गणधर, लघु नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री लघुभृत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लघुभृत गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

चंद्रप्रभु के गोचर गणधर, गोचर हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री गोचर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गोचर गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

चंद्रप्रभु के सुभूति गणधर, सुभूति दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुभूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुभूति गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

चंद्रप्रभु के दंगि गणधर, दाग हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दंगि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दंगि गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

चंद्रप्रभु के अलक्ष गणधर, अलक्ष ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री अलक्ष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अलक्ष गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

चंद्रप्रभु के मागध गणधर, मार्ग करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मागध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मागध गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

चंद्रप्रभु के गदभूषण जी, गद हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री गदभूषण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गदभूषण गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

चंद्रप्रभु के शिष्य काछ जी, काँच नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री काछ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री काछ गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

चंद्रप्रभु के पटकुल गणधर, पतन हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पटकुल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पटकुल गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

चंद्रप्रभु के दुन्दु गणधर, द्वन्द्व हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दुन्दु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दुन्दु गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

चंद्रप्रभु के ववेशि गणधर, विशिष्ट हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ववेशि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ववेशि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

चंद्रप्रभु के उदोत गणधर, उद्धारक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उदोत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उदोत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

चंद्रप्रभु के कुसंभीन जी, कुशल करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुसंभीन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कुसंभीन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

चंद्रप्रभु के तक्षत गणधर, तक तो लो आहा।
ओम् ह्रीं श्री तक्षत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री तक्षत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

चंद्रप्रभु के शिष्य कुवित जी, कुपित नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुवित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कुवित गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

चंद्रप्रभु के ममोथ गणधर, मम-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री ममोथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ममोथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

चंद्रप्रभु के मराल गणधर, मलाल हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मराल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मराल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

चंद्रप्रभु के उन्नत गणधर, उन्नत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उन्नत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उन्नत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

चंद्रप्रभु के मणिभूषण जी, मणिभूषण आहा।
ओम् ह्लीं श्री मणिभूषण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मणिभूषण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

चंद्रप्रभु के नाटक गणधर, नाटक ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री नाटक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नाटक गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

चंद्रप्रभु के कलिंगा गणधर, कलाकार आहा।
ओम् ह्रीं श्री कलिंगा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कलिंगा गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

चंद्रप्रभु के प्रीतिंकर जी, प्रीति करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रीतिंकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रीतिंकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

चंद्रप्रभु के ततंग गणधर, तंग नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ततंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ततंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

चंद्रप्रभु के उनेन्द्र गणधर, उन्नायक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उनेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उनेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

चंद्रप्रभु के भजोति गणधर, भज तो लो आहा।
ओम् ह्रीं श्री भजोति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भजोति गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

चंद्रप्रभु के जिनेन्द्र गणधर, जिनेन्द्र हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिनेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

चंद्रप्रभु के गणदेव गणधर, गणनायक आहा।
ओम् ह्रीं श्री गणदेव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गणदेव गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

चंद्रप्रभु के गगणेश गणधर, गगन तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री गगणेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गगणेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

चंद्रप्रभु के विलोक्य गणधर, विलोकनीय आहा।
ओम् ह्रीं श्री विलोक्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विलोक्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

चंद्रप्रभु के दसकुरु गणधर, दस-धर्मा आहा।
ओम् ह्रीं श्री दसकुरु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दसकुरु गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

चंद्रप्रभु के शिष्य चैत्यफल, चैत्य तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री चैत्यफल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चैत्यफल गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

चंद्रप्रभु के शिष्य उष्ट जी, उत्प्रेरक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

चंद्रप्रभु के संश्रित गणधर, संस्कारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री संश्रित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री संश्रित गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

चंद्रप्रभु के मद्रि गणधर, मद-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मद्रि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मद्रि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

चंद्रप्रभु के सूमानस जी, सुख-कर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री सूमानस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सूमानस गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

चंद्रप्रभु के शिष्य स्याम जी, स्याम नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्याम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्याम गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

चंद्रप्रभु के सुदृष्टि गणधर, सुदृष्टि दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुदृष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

चंद्रप्रभु के खिलेन्द्र गणधर, खिलते हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री खिलेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री खिलेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

चंद्रप्रभु के दृशीत गणधर, दिग्दर्शक आहा।
ओम् ह्रीं श्री दृशीत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दृशीत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

चंद्रप्रभु के संस्तेन्द्र गणधर, संस्तुत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री संस्तेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री संस्तेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

चंद्रप्रभु के धवलात्म गणधर, धवल मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री धवलात्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री धवलात्म गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

चंद्रप्रभु के प्रथमेश गणधर, प्रथम पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रथमेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथमेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

चंद्रप्रभु के चिन्तागति जी, चिंतामणि आहा।
ओम् ह्लीं श्री चिन्तागति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री चिन्तागति गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

चंद्रप्रभु के शिष्य सगर जी, सागर हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सगर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री सगर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

चंद्रप्रभु के क्षेमंकर जी, क्षमामूर्ति आहा।
ओम् ह्लीं श्री क्षेमंकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री क्षेमंकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

चंद्रप्रभु के पराय गणधर, पराये ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री पराय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री पराय गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

चंद्रप्रभु के धृतराष्ट्र गणधर, धृतराष्ट्र ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री धृतराष्ट्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री धृतराष्ट्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

चंद्रप्रभु के योगीन्द्र गणधर, योग गुरु आहा।
ओम् ह्लीं श्री योगीन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री योगीन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥

चंद्रप्रभु के अगम्य गणधर, आगम दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अगम्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री अगम्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥

चंद्रप्रभु के लोकेश गणधर, लोक इस आहा।
ओम् ह्लीं श्री लोकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ऊँ ह्लीं श्री लोकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥

चंद्रप्रभु के शिष्य विमल जी, विमल करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विमल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विमल गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥

चंद्रप्रभु के मलका गणधर, मलहर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मलका गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मलका गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥

चंद्रप्रभु के ज्ञात्वा गणधर, ज्ञात करो आहा।
ओम् ह्रीं श्री ज्ञात्वा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञात्वा गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥

चंद्रप्रभु के लल्लाकित जी, ललित रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री लल्लाकित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लल्लाकित गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

चंद्रप्रभु के फुल्लक गणधर, फल देते आहा।
ओम् ह्रीं श्री फुल्लक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री फुल्लक गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

चंद्रप्रभु के चिंताताम जी, चिंतित दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिंताताम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चिंताताम गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

चंद्रप्रभु के अरिदत्ता जी, अरि-दोहक आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरिदत्ता गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अरिदत्ता गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

चंद्रप्रभु के शिष्य वरोहन, वरो नयन आहा।
ओम् ह्रीं श्री वरोहन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वरोहन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

चंद्रप्रभु के संपट गणधर, संपत दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री संपट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संपट गणधराय अर्घ्यं...॥ ७८॥

चंद्रप्रभु के पुजनाथ जी, पूज्य करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुजनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुजनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ७९॥

चंद्रप्रभु के कसोद गणधर, कष्ट हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कसोद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कसोद गणधराय अर्घ्यं...॥ ८०॥

चंद्रप्रभु के खगेन्द्र गणधर, खटक हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री खगेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री खगेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ८१॥

चंद्रप्रभु के मगेन्द्र गणधर, मार्ग करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मगेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मगेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ८२॥

चंद्रप्रभु के दिवनाथ गणधर, दिवस करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दिवनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दिवनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ८३॥

चंद्रप्रभु के उसमवीर्थ जी, ऊष्ण नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उसमवीर्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उसमवीर्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ ८४॥

चंद्रप्रभु के वेधन गणधर, वेद हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री वेधन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वेधन गणधराय अर्घ्यं...॥ ८५॥

चंद्रप्रभु के महामुनि जी, महामोनी आहा।
ओम् ह्लीं श्री महामुनि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महामुनि गणधराय अर्घ्यं...॥ ८६॥

चंद्रप्रभु के चंद्रवेक जी, चंद्रमुखी आहा।
ओम् ह्लीं श्री चंद्रवेक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रवेक गणधराय अर्घ्यं...॥ ८७॥

चंद्रप्रभु के लव्वकेश जी, लाभ करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री लव्वकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लव्वकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ८८॥

चंद्रप्रभु के विद्यावेधि, विद्यालय आहा।
ओम् ह्लीं श्री विद्यावेधि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यावेधि गणधराय अर्घ्यं...॥ ८९॥

चंद्रप्रभु के पार्थिव गणधर, पालक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री पार्थिव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पार्थिव गणधराय अर्घ्यं...॥ ९०॥

चंद्रप्रभु के अचिमनो जी, अर्चित हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अचिमनो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अचिमनो गणधराय अर्घ्यं...॥ ९१॥

चंद्रप्रभु के शिष्य विदाम्वर, विद्वान हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री विदाम्वर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विदाम्वर गणधराय अर्घ्यं...॥ ९२॥

चंद्रप्रभु के कविन्द्र गणधर, कविता हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री कविन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कविन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ९३॥

पूर्णार्घ्य

(सखी)

श्री चंद्रप्रभु के पहले, हैं दत्तक गणधर स्वामी।
हैं कविन्द्र अंतिम गणधर, प्रभु शिष्य महा विज्ञानी॥
अज्ञान हरण हम चाहें, सो सादर अर्घ्य चढ़ाएँ।
'विद्या' की छाया पाके, 'सुव्रत' विश्रांति पाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभस्य दत्तक-आदि त्रिनवति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

<u>जाप्य मंत्र</u>

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभस्य दत्तकादि त्रिनवति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

चंदा के तेरानवें, ज्ञानी शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे॥
अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गाएँ।
स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ॥ १॥
वैजयन्त विमान तज करके, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए।
महासेन नृप लक्ष्मणा के, सुत मनि बन कैवल्य छुए॥
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे समवसरण सोहे।
तेरानवें की शिष्य मण्डली, मध्य बीच में प्रभु मोहे॥२॥
प्रथम शिष्य दत्तक गणधर जी, अंतिम हुए कवीन्द्र गुरु।

ऐसे गुरु शिष्य को पाकर, जीवन हमने किया शुरू॥
नाथ! आपने सात-सात भव, कठिन तपस्या धारण की।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की॥३॥
हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे॥
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, ऐसी ज्योति जला दीजे।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे॥४॥
सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना।
गणधर जैसे शिष्य हमें भी, आप बना अपनाओ ना॥
गुरु शिष्य का नाम अमिट हो, ऐसा ही कुछ चाह रहे।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहे॥५॥

(दोहा)

चंद्रप्रभ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
दत्तकादि सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री दत्तकादि त्रिनवति गणधर सहित श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य चंद्रप्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री सुविधिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

पुष्पदंत जिनराज जी, रहे मुक्ति के धाम।
पूजन के पहले उन्हें, बारम्बार प्रणाम॥

(सखी)

हे! नवमें तीर्थंकर जी, हे! पुष्पदंत अरिहन्ता।
चैतन्यधाम के स्वामी, हे! परमपूज्य भगवन्ता॥
जो श्रमण संस्कृति के भी, संरक्षक संवाहक हैं।
जिनके श्री चरणों में हम, सादर नत मस्तक हैं॥
सर्वत्र आपका यश है, है महिमा खूब तुम्हारी।
तुम अतिशय खूब दिखाते, जय-जय हो नाथ तुम्हारी॥
जो जय-जय करे तुम्हारी, उसका हर बन्ध विलय हो।
फिर उसको क्या भय संकट, उसकी भी फिर जय-जय हो॥
बस इसी भावना से हम, जिन पूजन पाठ रचाते।
अब हृदय निलय में आओ, हम सादर तुम्हें बुलाते॥
हम दुखी उदास न होवें, कुछ ऐसा कर दो स्वामी।
हे! सुविधिनाथ परमेश्वर, तुमको सादर प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस आतम ने मिथ्यामल, जबसे निज पर लिपटाये।
तो आतम तो ना झलका, पर जन्म-मृत्यु दुख पाए॥
अब जन्म-मृत्यु मिथ्या दुख, हो दूर नीर अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

रिश्ते नातों की ज्वाला, झुलसा देती हैं हमको।
फिर भी यह राग न हटता, क्या रोग लगा आतम को॥
यह राग-द्वेष की ज्वाला, हो दूर गंध अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पर में दुनियाँ तत्पर है, नहिं प्रभु की कोई लहर है।
नहिं अपनी कोई डगर है, यह सबसे बुरी खबर है॥
अब पर-पर की तत्परता, हो दूर पुञ्ज अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जो अंतस्-जय करता वह, अपना मन सुमन बनाता।
वह अंतस्-पुष्प खिला के, निज ब्रह्म बाग महकाता॥
अब व्यसन बुराई सब ही, हो दूर पुष्प अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हर वस्तु भोगकर डाली, पर तृप्ति कभी ना पाई।
नहिं आतम को चख पाए, नहिं पूजन पाठ रचाई॥
उपभोग-भोग के भव दुख, हो दूर चरु अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हे! नाथ जहाँ तुम जैसा, आदित्य न हो तो क्या हो।
साहित्य न हो तो क्या हो, राहित्य न हो तो क्या हो॥
भय घोर अंधेरा संकट, हो दूर दीप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों के खेल निराले, विधि लेख कौन वह टाले।
अब हम तो किसे पुकारें, जो हमको शीघ्र बचा ले॥
अब जेल खेल कर्मों का, हो दूर धूप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ये मधुर सरस फल सबको, सुख बाँटे खुद सहके गम।
हम काश कहीं हों ऐसे, तो सार्थक हो जिन-पूजन॥
अब सुख-दुख की आकुलता, हो दूर सुफल अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जल फल आदिक का मिश्रण, यह सुन्दर अर्घ्य बनाके।
कई बार चढ़ाके लेकिन, अब तक कुछ भी ना पा के॥
हम आए हैं घबराके, क्या रह गई कमी हमारी।
क्यों दुखी परेशां हम हैं, क्यों मिली न मोक्ष सवारी॥
अब ऐसा अर्घ्य बना दो, अनमोल रहे जो सबसे।
हो कृपा कृपाकर अब तो, हम तुम्हें पुकारें कब से॥
अब सुनो प्रार्थना स्वामी, हम सबकी ओर निहारो।
हमें अपने पास बुलाके, चेतन का रूप सँभारो॥

(दोहा)

श्रद्धा से अर्पित करें, अर्घ्य झुकाकर शीश।
धर्म-धार टूटे नहीं, मिले यही आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

फागुन नवमी कृष्ण को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
सुविधिनाथ प्रभु आ वसे, जयरामा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आए सुविधि कुमार॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंत) के ८८ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

सुविधिनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

पुष्पदंत के संघातिक जी, प्रथम शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री संघातिक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संघातिक गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

पुष्पदंत के अस्थि गणधर, आस्तिक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अस्थि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अस्थि गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

पुष्पदंत के शिष्य लिलय जी, लेख हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री लिलय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लिलय गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

पुष्पदंत के शिष्य किरण जी, किरणें दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री किरण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री किरण गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

पुष्पदंत के भास्कर गणधर, भास्कर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भास्कर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भास्कर गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

पुष्पदंत के शिष्य परायण, पराग हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री परायण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परायण गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

पुष्पदंत के विनयत गणधर, विनयवान आहा।
ओम् ह्रीं श्री विनयत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विनयत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

पुष्पदंत के पुष्पकेतु, पुष्पकमल आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुष्पकेतु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पकेतु गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

पुष्पदंत के साश्चर्य गणधर, साथी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री साश्चर्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री साश्चर्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

पुष्पदंत के गंधमाल जी, गंधोदक आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंधमाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गंधमाल गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

पुष्पदंत के चिंतांग गणधर, चिंताहर आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिंतांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चिंतांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

पुष्पदंत के चिंतामणि जी, चिंतामणि आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिंतामणि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

पुष्पदंत के शिष्य प्रकुट जी, प्रकट रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रकुट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रकुट गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

पुष्पदंत के शलोच गणधर, सरोज हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री शलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

पुष्पदंत के विदन्त गणधर, विद्वान हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विदन्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विदन्त गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

पुष्पदंत के केवलेश जी, केवल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री केवलेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री केवलेश गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

पुष्पदंत के गांगेय गणधर, गलत नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गांगेय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गांगेय गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

पुष्पदंत के निर्मल गणधर, निर्मल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्मल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मल गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

पुष्पदंत के गगनगंतु जी, गगन गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गगनगंतु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गगनगंतु गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

पुष्पदंत के सुगन्तु गणधर, सुगत रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुगन्तु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुगन्तु गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

पुष्पदंत के शिष्य दिगांवर, दिगम्बरी आहा।
ओम् ह्रीं श्री दिगांवर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दिगांवर गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

पुष्पदंत के राजच गणधर, राजचिह्न आहा।
ओम् ह्रीं श्री राजच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री राजच गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

पुष्पदंत के ललामकेत जी, ललाम हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ललामकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ललामकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

पुष्पदंत के ऋद्धकेवली, ऋद्धि दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री ऋद्धकेवली गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ऋद्धकेवली गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

पुष्पदंत के केदाच गणधर, केतन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री केदाच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केदाच गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

पुष्पदंत के गंगदत्त जी, ग्रस्त नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गंगदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गंगदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

पुष्पदंत के पवनवेग जी, पावन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पवनवेग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पवनवेग गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

पुष्पदंत के शिष्य केश जी, केशलौंच आहा।
ओम् ह्रीं श्री केश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केश गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

पुष्पदंत के सूस्तंभ जी, सूक्ष्म नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सूस्तंभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सूस्तंभ गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

पुष्पदंत के शिष्य जउद जी, जयवंतो आहा।
ओम् ह्रीं श्री जउद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जउद गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

पुष्पदंत के दातार गणधर, दातार हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री दातार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दातार गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

पुष्पदंत के मचकूदं जी, मचलें न आहा।
ओम् ह्रीं श्री मचकूदं गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मचकूदं गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

पुष्पदंत के वंदित गणधर, वंदित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वंदित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वंदित गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

पुष्पदंत के नयनाकित जी, नयनांकित आहा।
ओम् ह्रीं श्री नयनाकित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नयनाकित गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

पुष्पदंत के कोकद गणधर, कोक नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोकद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोकद गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

पुष्पदंत के कटदंत गणधर, कटुक नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कटदंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कटदंत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

पुष्पदंत के जगीश गणधर, जगदीश्वर आहा।
ओम् ह्रीं श्री जगीश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जगीश गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

पुष्पदंत के जगोत गणधर, जगत जोत आहा।
ओम् ह्रीं श्री जगोत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जगोत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

पुष्पदंत के चन्दन गणधर, चेतन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री चन्दन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चन्दन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

पुष्पदंत के मधुकिट गणधर, मधुरमिष्ट आहा।
ओम् ह्रीं श्री मधुकिट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मधुकिट गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

पुष्पदंत के मधुकिटभ जी, मधुकर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मधुकिटभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मधुकिटभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

पुष्पदंत के पंकज गणधर, पंकज सम आहा।
ओम् ह्रीं श्री पंकज गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पंकज गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

पुष्पदंत के शिष्य चैत्य जी, चैत्य बिम्ब आहा।
ओम् ह्रीं श्री चैत्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चैत्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

पुष्पदंत के उत्कीर्ण गणधर, उत्कर्षक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्कीर्ण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्कीर्ण गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

पुष्पदंत के मधूलिड गणधर, मधुर मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री मधूलिड गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मधूलिड गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

पुष्पदंत के विलोक्य गणधर, विलोम नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विलोक्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विलोक्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

पुष्पदंत के निरोत्तम गणधर, निरोग दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री निरोत्तम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निरोत्तम गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

पुष्पदंत के धृतकेश गणधर, धीरज दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री धृतकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री धृतकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

पुष्पदंत के शिष्य प्रश्नृवल, प्रश्न हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रश्नृवल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रश्नृवल गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

पुष्पदंत के गृहदान गणधर, ग्रह-हारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गृहदान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गृहदान गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

पुष्पदंत के सहाटात् जी, सहयोगी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सहाटात् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सहाटात् गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

पुष्पदंत के मारूढ़ गणधर, मारक ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री मारूढ़ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मारूढ़ गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

पुष्पदंत के जगनेन्द्र गणधर, गजत इंद्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री जगनेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जगनेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

पुष्पदंत के दधिवर गणधर, दायक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री दधिवर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दधिवर गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

पुष्पदंत के चेष्टपंजर जी, चेतन दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चेष्टपंजर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चेष्टपंजर गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

पुष्पदंत के स्ताचेष्ट जी, स्तुति योग्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्ताचेष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्ताचेष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

पुष्पदंत के भोजनांग जी, भोजक ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री भोजनांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भोजनांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

पुष्पदंत के मानग गणधर, मानक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मानग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मानग गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

पुष्पदंत के गुमान गणधर, गुम न सकें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुमान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुमान गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

पुष्पदंत के सुनामलांग जी, सुनाम हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुनामलांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुनामलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

पुष्पदंत के शुभशूरान जी, शुभ शकुन आहा।
ओम् ह्रीं श्री शुभशूरान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शुभशूरान गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

पुष्पदंत के कोविद गणधर, कोष्टबुद्धि आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोविद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोविद गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

पुष्पदंत के शिष्य पुत्र जी, पुत्रतुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुत्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुत्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

पुष्पदंत के कोपुत्र गणधर, कोपुत्र न आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोपुत्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोपुत्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

पुष्पदंत के सुवर्ण गणधर, सुवर्ण हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुवर्ण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुवर्ण गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

पुष्पदंत के उत्प्रक्ष गणधर, उत्प्रेरक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्प्रक्ष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्प्रक्ष गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

पुष्पदंत के शांतकुम्भ जी, शान्ति सुधा आहा।
ओम् ह्रीं श्री शांतकुम्भ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शांतकुम्भ गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥

पुष्पदंत के अशोक गणधर, अशोक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अशोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अशोक गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥

पुष्पदंत के शिष्य सुघट जी, शुभकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुघट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुघट गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥

पुष्पदंत के शिष्य सचेतन, सचेत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सचेतन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सचेतन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥

पुष्पदंत के पवनोदय जी, पावन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पवनोदय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पवनोदय गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥

पुष्पदंत के अत्यून गणधर, अधिकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री अत्यून गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अत्यून गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥

पुष्पदंत के शिष्य पुष्प जी, पुष्कर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुष्प गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्प गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

पुष्पदंत के पुण्यजीवन जी, पुण्यजीव आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुण्यजीवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यजीवन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

पुष्पदंत के उर्द्धलोच जी, ऊर्द्धगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उर्द्धलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उर्द्धलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

पुष्पदंत के गुणगौरव जी, गुणगायक आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणगौरव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुणगौरव गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

पुष्पदंत के फलौचंत जी, फलदायक आहा।
ओम् ह्रीं श्री फलौचंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री फलौचंत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

पुष्पदंत के फलउचत गणधर, फलदानी आहा।
ओम् ह्रीं श्री फलउचत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री फलउचत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७८॥

पुष्पदंत के परमेश्वर जी, परमेश्वर आहा।
ओम् ह्रीं श्री परमेश्वर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वर गणधराय अर्घ्यं...॥ ७९॥

पुष्पदंत के जिनदत्त गणधर, जिनदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिनदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ८०॥

पुष्पदंत के सुगंध गणधर, सुगम नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुगंध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुगंध गणधराय अर्घ्यं...॥ ८१॥

पुष्पदंत के अक्षत गणधर, अक्षत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अक्षत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षत गणधराय अर्घ्यं...॥ ८२॥

पुष्पदंत के पुष्पनाभ जी, पुष्प पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुष्पनाभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पनाभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ८३॥

पुष्पदंत के उमास्वामी जी, उमास्वामी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उमास्वामी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामी गणधराय अर्घ्यं...॥ ८४॥

पुष्पदंत के दिपोदीप्ति जी, दिव्य दीप आहा।
ओम् ह्रीं श्री दिपोदीप्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दिपोदीप्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ८५॥

पुष्पदंत के शितजय गणधर, शिक्षा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शितजय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शितजय गणधराय अर्घ्यं...॥ ८६॥

पुष्पदंत के निविडांग गणधर, नित नवीन आहा।
ओम् ह्रीं श्री निविडांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निविडांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ८७॥

पुष्पदंत के मघवान गणधर, भगवान हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मघवान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मघवान गणधराय अर्घ्यं...॥ ८८॥

पूर्णार्घ्य

(विष्णु)

पुष्पदंत के संगातिक जी पहले गणधर हैं।
अंतिम हैं मघवान अठासी कुलगुरु हितकर हैं॥
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु हमको शिक्षा दो।
आतम 'विद्या' पाने स्वामी, 'सुव्रत' दीक्षा दो॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतस्य संघातिक-आदि अष्टाशीति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतस्य संघातिकादि अष्टाशीति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सुविधिनाथ प्रभु के रहे, अठासी शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिन भगवन् ने विशाल निर्मल, पूज्य मोक्ष पथ चला दिया।
अनेक शिष्यों के भविष्य को, मोक्ष स्वरूपी बना दिया॥
मोक्षमार्ग विधि रूप हुए जो, सुविधि-प्रभु जी उन्हें कहें।
हम भी मोक्षमार्ग की उत्तम, विधि को पाने भक्ति करें॥१॥
फूलों जैसी सुन्दर जिनकी, दन्त पंक्तियाँ लहरातीं।
जिससे अनुपम मुख की शोभा, भक्त जनों के मन भाती॥
जो भव महा मरुस्थल में तो, छायादार वृक्ष जैसे।
वही पूज्य प्रभु पुष्पदन्त हैं, उनको भूलें हम कैसे॥२॥
जिनका तन अशान्त रहता हो, वाणी आकुल-व्याकुल हो।
सदाचार ना पलता जिनका, दुखिया जिनका संकुल हो॥

उपसर्गों से परीषहों से, जो हो जाते विचलित हों।
उन्हें मिले विधि सम्यक् यदि वे, सुविधि प्रभु के आश्रित हों॥३॥
अपराजित विमान तज आये, काकन्दीपुर श्रेष्ठ नगर।
सुग्रीव राजा जयरामा सुत, बने केवली श्री जिनवर॥
समवसरण का अचिन्त्य वैभव, अहा! दिव्यध्वनि की शोभा।
मुख्य अठासी गणधर के गुण, क्या इससे सुन्दर होगा॥४॥
प्रथम शिष्य संघातिक गणधर, अंतिम श्री मघवान हुए।
गुरु शिष्य की परम्परा में, हमें करो हम चरण छुए॥
किन्तु कठिन यह कार्य आप तो, स्वामी सरल बना डालो।
'सुव्रत' को निज शिष्य बनाकर, मोक्षमहल खुलवा डालो॥५॥

(दोहा)

सुविधिनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
संघातिक सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री संघातिकादि अष्टाशीति गणधर सहित श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य सुविधि प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री शीतलनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुए, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गाएँ।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा अपना आतम पर, बना अवगुणी दुर्गति से।
शुद्ध और शीतल बन जाता, नाथ आपकी संगति से॥
प्रासुक जल का लिया सहारा, चेतन पावन हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन के बस दो गुण समझो, सौरभ दे तन ताप हरे।
किन्तु आपकी जिनवाणी तो, भव-भव का संताप हरे॥
चंदन का अब लिया सहारा, चेतन शीतल हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मुट्ठी बाँधे आते हम सब, हाथ पसारे जाना रे।
किन्तु बीच में पद-लालच में, हाथ रहा पछताना रे॥
तन्दुल का अब लिया सहारा, अक्षयपद को हम ध्याए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आकर्षक है खिला महकता, फूल नीम का कटुक रहा।
ऐसे ही है काम सुगंधी, जिसका फल जग भुगत रहा॥
पुष्प चढ़ा के शील-पुष्प से, मन की बगिया खिल जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भूख मिटी ना भोग मिटे ना, मिट-मिट गए सदा हम ही।
फिर भी भोगों को ना त्यागा, पाएँ इच्छा से कम ही॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, ज्ञानामृत पर ललचाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधों को दिन-रात बराबर, मोही को यह जग वैसे।
नाथ! आपके ज्ञान दीप बिन, मिटे मोह का तम कैसे?
नेत्रों का पूरा उन्मीलन, करवा दो तम खो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो मंदिर महके, किन्तु सभी जग ना महके।
किन्तु आपके नाम मात्र से, भक्त जगत् आतम महके॥
धूप चढ़ाके कर्म जलाने, आतम महकाने आए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुण्य कार्य करना ना चाहें, किन्तु पुण्य फल सब चाहें।
पाप कार्य सब करते हैं पर, पापों के फल ना चाहें॥
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्ति को, थाल-थाल भर फल लाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥
अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घपद मन में भाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

आरण नामक स्वर्ग लोक तज, चैत्र अष्टमी कृष्ण रही।
गर्भ सुनन्दा माँ का पाया, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भ कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस जब आई, नगर भद्रपुर जन्म लिया।
दृढ़रथ महाराज का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्म कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस को त्यागा, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
तप कल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण चौदस की तिथि को, घातिकर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अश्विन शुक्ल अष्टमी संध्या, पद्मासन से कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥
अष्टकर्म का बन्धन सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री शीतलनाथ तीर्थंकर के ८१ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

शीतलनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

शीतलनाथ के नरसिंह गणधर, नरसिंह हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नरसिंह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नरसिंह गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

शीतलनाथ के श्रुतकेत गणधर, श्रुतदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रुतकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

शीतलनाथ के अमर्घ गणधर, अमर रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अमर्घ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अमर्घ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

शीतलनाथ के स्पृष्टि गणधर, स्पष्ट हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्पृष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्पृष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

शीतलनाथ के रूपकेतु जी, रूपी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री रूपकेतु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रूपकेतु गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

शीतलनाथ के चंचलांग जी, चंचरीक आहा।
ओम् ह्रीं श्री चंचलांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चंचलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

शीतलनाथ के सर्वगुण गणधर, सर्वगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वगुण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वगुण गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

शीतलनाथ के शिष्य वत्स जी, वत्स प्रेम आहा।
ओम् ह्रीं श्री वत्स गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वत्स गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

शीतलनाथ के शिष्य किरण जी, किरण दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री किरण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री किरण गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

शीतलनाथ के ब्रह्मराज जी, ब्रह्मगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री ब्रह्मराज गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मराज गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

शीतलनाथ के निश्चल गणधर, निश्चल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री निश्चल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निश्चल गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

शीतलनाथ के शुद्धमति जी, शुद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शुद्धमति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शुद्धमति गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

शीतलनाथ के स्थिमंधर जी, स्थिरमना आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिमंधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्थिमंधर गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

शीतलनाथ के कदाच गणधर, कथा कहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कदाच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कदाच गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

शीतलनाथ के शिष्य अषढ़ जी, अषाढ़ ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री अषढ़ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अषढ़ गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

शीतलनाथ के गुणज्ञ गणधर, गुणज्ञ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणज्ञ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गुणज्ञ गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

शीतलनाथ के द्यूत्यांग गणधर, द्यूत तजे आहा।
ओम् ह्रीं श्री द्यूत्यांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री द्यूत्यांग गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

शीतलनाथ के शीतलो गणधर, शीतल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री शीतलो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलो गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

शीतलनाथ के मुनीश गणधर, मुनि पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुनीश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुनीश गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

शीतलनाथ के सुन्दर गणधर, सुन्दर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुन्दर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुन्दर गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

शीतलनाथ के पुंगव गणधर, पुंगव हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुंगव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुंगव गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

शीतलनाथ के कोदारक जी, कोप तजे आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोदारक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोदारक गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

शीतलनाथ के भोगार्थ गणधर, भोग तजे आहा।
ओम् ह्रीं श्री भोगार्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भोगार्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

शीतलनाथ के उत्पल गणधर, उत्तर दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्पल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उत्पल गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

शीतलनाथ के गाम्भीरो जी, गंभीर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गाम्भीरो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गाम्भीरो गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

शीतलनाथ के शिष्य सुपार्णव, सुपान हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुपार्णव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्णव गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

शीतलनाथ के माद्यायन जी, मध्य हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री माद्यायन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री माद्यायन गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

शीतलनाथ के शिष्य पुष्ट जी, पुष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

शीतलनाथ के शिष्य पथानन, पथदर्शक आहा।
ओम् ह्रीं श्री पथानन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पथानन गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

शीतलनाथ के अतरगति जी, आओ! तो आहा।
ओम् ह्रीं श्री अतरगति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अतरगति गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

शीतलनाथ के शिष्य रुह्य जी, रोग हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री रुह्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री रुह्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

शीतलनाथ के श्रीशान्ति जी, स्वस्ति करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रीशान्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीशान्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

शीतलनाथ के दीक्षित गणधर, दीक्षा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दीक्षित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दीक्षित गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

शीतलनाथ के शिष्य सनत जी, सन्त पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री सनत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सनत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

शीतलनाथ के सुपुष्ट गणधर, सुपुष्ट हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुपुष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुपुष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

शीतलनाथ के कनकोदर जी, कनक गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कनकोदर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कनकोदर गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

शीतलनाथ के स्थविष्ट जी, इष्ट रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थविष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

शीतलनाथ के शिष्य नितव जी, नितानंद आहा।
ओम् ह्रीं श्री नितव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नितव गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

शीतलनाथ के शिष्य नरेश्वर, नर पूजित आहा।
ओम् ह्रीं श्री नरेश्वर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नरेश्वर गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

शीतलनाथ के श्रद्धादि जी, श्रद्धा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रद्धादि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रद्धादि गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

शीतलनाथ के उच्यूत गणधर, उच्च करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री उच्यूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उच्यूत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

शीतलनाथ के शिष्य चलाचल, चलित नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री चलाचल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चलाचल गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

शीतलनाथ के नृपाल गणधर, नृपालक आहा।
ओम् ह्रीं श्री नृपाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नृपाल गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

शीतलनाथ के स्थिमजस जी, स्तुत्य हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिमजस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्थिमजस गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

शीतलनाथ के चम्पायन जी, चम्पा ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री चम्पायन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चम्पायन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

शीतलनाथ के चम्पकेत जी, चम्प नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री चम्पकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चम्पकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

शीतलनाथ के जिनष्ट गणधर, जिनास्था आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिनष्ट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जिनष्ट गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

शीतलनाथ के सगुप्ति गणधर, सगुण रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री सगुप्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सगुप्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

शीतलनाथ के परिषत् गणधर, परीत हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री परिषत् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री परिषत् गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

शीतलनाथ के उत्कंठ गणधर, उत्कृष्ट हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री उत्कंठ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्कंठ गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

शीतलनाथ के प्रभ गणधर जी, प्रभु पुत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

शीतलनाथ के कंकोदर जी, कर्मजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कंकोदर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कंकोदर गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

शीतलनाथ के शिष्य सुकमला, सुकुमाल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुकमला गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुकमला गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

शीतलनाथ के पंकेश गणधर, पंक नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पंकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पंकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

शीतलनाथ के शिष्य उग्गतप, उग्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उग्गतप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उग्गतप गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

शीतलनाथ के वरांग गणधर, वरांग हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वरांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वरांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

शीतलनाथ के कवेलतो जी, कवल नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कवेलतो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कवेलतो गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

शीतलनाथ के शिष्य सकोमल, कोमल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सकोमल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सकोमल गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

शीतलनाथ के नभ गणधर जी, नवकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री नभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

शीतलनाथ के वरदत्त गणधर, वरदत्तक आहा।
ओम् ह्रीं श्री वरदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वरदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

शीतलनाथ के शिष्य धनेश्वर, धन्य धनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री धनेश्वर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धनेश्वर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

शीतलनाथ के मरेचि गणधर, मरीचि ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री मरेचि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मरेचि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

शीतलनाथ के अरजित गणधर, अर्ज सुनें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरजित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अरजित गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

शीतलनाथ के कलोच गणधर, क्लेश हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

शीतलनाथ के मधुकेट जी, मधुकर गुण आहा।
ओम् ह्रीं श्री मधुकेट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मधुकेट गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

शीतलनाथ के सुकेत गणधर, सुख के घर आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥
शीतलनाथ के कान्तिमणि जी, कांतिमान आहा।
ओम् ह्लीं श्री कान्तिमणि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कान्तिमणि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥
शीतलनाथ के उष्णोदय जी, ऊर्जा दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री उष्णोदय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उष्णोदय गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥
शीतलनाथ के उष्णांग गणधर, उच्च करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री उष्णांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उष्णांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥
शीतलनाथ के मधुकिटभ जी, मधु नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री मधुकिटभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मधुकिटभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥
शीतलनाथ के समलांग गणधर, समल नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री समलांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री समलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥
शीतलनाथ के इकलांग गणधर, एक नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री इकलांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री इकलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥
शीतलनाथ के शिष्य भ्रकुट जी, भ्रम हर्त्ता आहा।
ओम् ह्लीं श्री भ्रकुट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भ्रकुट गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

शीतलनाथ के कुरवस गणधर, कुरु–कुरु जी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुरवस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुरवस गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

शीतलनाथ के शिष्य मधव जी, मधुवन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मधव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मधव गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

शीतलनाथ के मधकेश गणधर, मदन हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मधकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मधकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

शीतलनाथ के उर्द्धकेश जी, उद्धारक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उर्द्धकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उर्द्धकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

शीतलनाथ के षड्केत गणधर, षड्गुणी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री षड्केत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री षड्केत गणधराय अर्घ्यं...॥ ७८॥

शीतलनाथ के श्रेणिक गणधर, सुख श्रेणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रेणिक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेणिक गणधराय अर्घ्यं...॥ ७९॥

शीतलनाथ के मयूर गणधर, मन मयूर आहा।
ओम् ह्रीं श्री मयूर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मयूर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८०॥

शीतलनाथ के दीपायन जी, दीपज्ञान आहा।
ओम् ह्रीं श्री दीपायन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दीपायन गणधराय अर्घ्यं...॥ ८१॥

पूर्णार्घ्य

(अडिल्ल)

शीतल प्रभु के नरसिंह गणधर हैं प्रथम।
अंतिम दीपायन गुरु ज्ञानी को नमन॥
कुल इक्यासी गणधर पूजें अर्घ्य लें।
'विद्या' के 'सुव्रत' को, आतम पर्व दें॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य नरसिंह-आदि एकाशीति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य नरसिंहादि एकाशीति गणधरेभ्यो नमः

जयमाला

(दोहा)

शीतलनाथ प्रभु के रहे, इक्यासी शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके जीवन में रिश्तों वा, लगी कषायों की ज्वाला।
अपना वैभव राग-द्वेष की, लपटों में झुलसा डाला॥
जिनने अब तक शीतलता का, किया नहीं रसपान अहो!
तो फिर शीतलप्रभु को भजकर, कर डालो गुणगान अहो!॥१॥
आरण स्वर्ग त्यागकर आये, नगर विदिशा भद्दलपुर।
दृढ़रथ राज सुनन्दा माँ सुत, बने केवली श्री जिनवर॥
समवसरण के बीच विराजे, इक्यासी गणधर के नाथ।
पहले गणधर नरसिंह ज्ञानी, अंतिम दीपायन नत माथ॥२॥
गुरु शिष्य की परम्परा ने, किया ताप जग का शीतल।
विघ्न उपद्रव संकट नाशे, हुआ हुआ मंगल मंगल॥

अपनी केवल यही प्रार्थना, क्रोधादि भव आग हरें।
जब तक मोक्ष मिले ना हमको, गणधर बन प्रभु जाप करें॥३॥
कर तो दो बस ऐसा स्वामी, तुम तो जग के शासक हो।
भक्तों के तारक तीर्थंकर, त्रय लोकों के नायक हो॥
हे जिन सूरज! शीतलस्वामी, हमें भक्ति फल बस यह दो।
सम्यक् श्रद्धा रहे आप में, 'सुव्रत' को संबल यह दो॥ ६॥

(दोहा)

शीतलनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
नरसिंह सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री नरसिंहादि एकाशीति गणधर सहित श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य शीतल प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

बाहर नहीं
वसंत बहार तो
संत! अंदर....

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

ग्यारहवे तीर्थेश हैं, श्रेयांसनाथ भगवान्।
पूजन के पहले जिन्हें, नमोऽस्तु हो धर ध्यान॥

(मात्रिक सवैया)

प्रभु श्रेयांसनाथ जिनवर जी, मोक्षमहल शुद्धातम धाम।
विघ्न कष्ट बाधाएँ सारी, टिकें न सुनकर जिन का नाम॥
पूजन ध्यान जाप से जीवन, मंगलमय होते हर काम।
जिनके पथ पर चलकर आतम, भव भोगों को करें विराम॥
वैसे तो ऐसे जिनवर की, समा न सकती जग में शान।
किन्तु भक्त ने भक्ति महल में, जिन्हें पुकारा कर सम्मान॥
प्रेम द्वार से आओ! आओ!, करो चिदातम चित्-कल्याण।
चरणों में हैं भक्त समर्पित, और समर्पित तन मन प्राण॥

(दोहा)

निष्ठा से करते नमन, हाथ जोड़ नत माथ।
हृदय कमल पर आइए, हे प्रभु श्रेयांसनाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : पाँचों मेरु असी...)

श्रद्धा-जल की देकर धार, मिले मुक्ति का आतम द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन से करते सत्कार, आत्म शान्ति होवे उद्धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

पुंज चढ़े हो हर्ष अपार, आत्म व्याधियाँ हों परिहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्पों सम निज खिले बहार, कामदेव का हो संहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिन सम निज का हो आहार, क्षुधारोग का तब प्रतिकार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

करें आरती दीप उजार, जड़ से आत्म हरें अँधयार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप गंध ले बहे वयार, जा पहुँचे मुक्ति के द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पूजें फल लेकर रसदार, सहकर नाशें कर्म प्रहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

आठों द्रव्य चढ़े मनहार, जिनसे आतम का त्यौहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी कृष्णा ज्येष्ठ को, तज सोलहवाँ स्वर्ग।
आए प्रभु श्रेयांस जी, माँ नन्दा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रन्थ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गए श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री श्रेयांसनाथ के ७७ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

श्रेयांसनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

श्रेयांसनाथ के पहले गणधर, कौतभ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कौतभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कौतभ गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

श्रेयांसनाथ के कायान गणधर, काय जयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कायान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कायान गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

श्रेयांसनाथ के कल्पकल्याण जी, कल्पतरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री कल्पकल्याण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पकल्याण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

श्रेयांसनाथ के सुदर्शन गणधर, सुदर्शक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुदर्शन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य खडानन, खडग नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री खडानन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री खडानन गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

श्रेयांसनाथ के भूयंग गणधर, भूपालक आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूयंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भूयंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

श्रेयांसनाथ के सिंहरथ गणधर, सिंहगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंहरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

श्रेयांसनाथ के वंकचूल जी, वंक नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वंकचूल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वंकचूल गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य नील जी, निलयगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री नील गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नील गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

श्रेयांसनाथ के महानील जी, महानिलय आहा।
ओम् ह्रीं श्री महानील गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री महानील गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

श्रेयांसनाथ के सर्वगुण गणधर, सर्वगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वगुण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वगुण गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

श्रेयांसनाथ के छापोद गणधर, क्षपक रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री छापोद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री छापोद गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

श्रेयांसनाथ के मालोक गणधर, मानक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मालोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मालोक गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

श्रेयांसनाथ के पूरच गणधर, पूरक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पूरच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पूरच गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

श्रेयांसनाथ के निष्काल गणधर, निष्कलंक आहा।
ओम् ह्रीं श्री निष्काल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निष्काल गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

श्रेयांसनाथ के कलिन्द्र गणधर, कल्याणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कलिन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कलिन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य विदुर जी, विदुर रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री विदुर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विदुर गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

श्रेयांसनाथ के शलाच गणधर, सलाह दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शलाच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शलाच गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

श्रेयांसनाथ के चंद्रगति जी, चंद्रामृत आहा।
ओम् ह्रीं श्री चंद्रगति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रगति गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

श्रेयांसनाथ के कुण्डल गणधर, कुण्डलपुर आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुण्डल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डल गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

श्रेयांसनाथ के कुण्डकेत जी, कुंदकुंद आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुण्डकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

श्रेयांसनाथ के अनन्त गणधर, अनन्तगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनन्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य अनागत, अनाकार आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनागत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अनागत गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य अनोपम, अनेकांत आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनोपम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अनोपम गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

श्रेयांसनाथ के पूरणभद्र जी, पूर्ण करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पूरणभद्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पूरणभद्र गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

श्रेयांसनाथ के दिग्पाल गणधर, दिग्दर्शक आहा।
ओम् ह्रीं श्री दिग्पाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्पाल गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

श्रेयांसनाथ के विस्मोरजत जी, विस्मयकर आहा।
ओम् ह्रीं श्री विस्मोरजत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विस्मोरजत गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

श्रेयांसनाथ के कुभूमि गणधर, कुभूमि न आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुभूमि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कुभूमि गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

श्रेयांसनाथ के खलोद गणधर, खलें नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री खलोद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री खलोद गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

श्रेयांसनाथ के पुलिंग गणधर, पुलकित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुलिंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुलिंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

श्रेयांसनाथ के अर्हनाथ जी, अर्हम् हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अर्हनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

श्रेयांसनाथ के कृष्लोत गणधर, कृष्ण नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृष्लोत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृष्लोत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

श्रेयांसनाथ के पिपासात् जी, प्यास हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री पिपासात् गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पिपासात् गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

श्रेयांसनाथ के अंगार गणधर, अंगार न आहा।
ओम् ह्रीं श्री अंगार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अंगार गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

श्रेयांसनाथ के रक्तोदय जी, रक्त नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री रक्तोदय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रक्तोदय गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

श्रेयांसनाथ के आत्मिक गणधर, आत्मिक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री आत्मिक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मिक गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

श्रेयांसनाथ के संकल्प गणधर, संकल्पी आहा।
ओम् ह्लीं श्री संकल्प गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संकल्प गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

श्रेयांसनाथ के पुष्पकेत जी, पुष्पकली आहा।
ओम् ह्लीं श्री पुष्पकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

श्रेयांसनाथ के परप्रेम गणधर, परप्रेम न आहा।
ओम् ह्लीं श्री परप्रेम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परप्रेम गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

श्रेयांसनाथ के निश्चतान जी, निश्चय गुण आहा।
ओम् ह्लीं श्री निश्चतान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निश्चतान गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

श्रेयांसनाथ के चंचकंत जी, चंचु ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री चंचकंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चंचकंत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

श्रेयांसनाथ के विशरीर गणधर, बिन शरीर आहा।
ओम् ह्लीं श्री विशरीर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विशरीर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

श्रेयांसनाथ के सुखकर गणधर, सुखकारी आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुखकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुखकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

श्रेयांसनाथ के नभकेत गणधर, नभस् गुणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री नभकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नभकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

श्रेयांसनाथ के कालिंग गणधर, काल नहीं आहा।
ओम् ह्वीं श्री कालिंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कालिंग गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥
श्रेयांसनाथ के उपावास जी, उपवासी आहा।
ओम् ह्वीं श्री उपावास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उपावास गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥
श्रेयांसनाथ के कदंबकते जी, कदंब ना आहा।
ओम् ह्वीं श्री कदंबकते गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कदंबकते गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥
श्रेयांसनाथ के महर्द्धिक गणधर, महा-ऋषि आहा।
ओम् ह्वीं श्री महर्द्धिक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री महर्द्धिक गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥
श्रेयांसनाथ के महामंगल जी, महामंत्र आहा।
ओम् ह्वीं श्री महामंगल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री महामंगल गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥
श्रेयांसनाथ के रंगनाथ जी, रंग-हीन आहा।
ओम् ह्वीं श्री रंगनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री रंगनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥
श्रेयांसनाथ के साकि गणधर, सखा-सखी आहा।
ओम् ह्वीं श्री साकि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री साकि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥
श्रेयांसनाथ के कोटपाल जी, कूट हरें आहा।
ओम् ह्वीं श्री कोटपाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री कोटपाल गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

श्रेयांसनाथ के विलास गणधर, विलासी न आहा।
ओम् ह्रीं श्री विलास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विलास गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

श्रेयांसनाथ के सुखदास गणधर, सुखदायक आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुखदास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुखदास गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

श्रेयांसनाथ के हुच्छगई जी, हवन-गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री हुच्छगई गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री हुच्छगई गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य विषासन, विषाक्त न आहा।
ओम् ह्रीं श्री विषासन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विषासन गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

श्रेयांसनाथ के वीतशोक जी, वीत-शोक आहा।
ओम् ह्रीं श्री वीतशोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वीतशोक गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

श्रेयांसनाथ के क्षेमंकर जी, क्षमा-शील आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्षेमंकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

श्रेयांसनाथ के लंगि गणधर, लग्न नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री लंगि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लंगि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

श्रेयांसनाथ के इंद्रकेत जी, इंद्र-पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री इंद्रकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री इंद्रकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

श्रेयांसनाथ के नल गणधर जी, नकल नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नल गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

श्रेयांसनाथ के नललोच गणधर, नाल नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नललोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नललोच गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

श्रेयांसनाथ के भास्कर गणधर, भास्कर जिन आहा।
ओम् ह्रीं श्री भास्कर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भास्कर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

श्रेयांसनाथ के अवनिपाल जी, अवनिपाल आहा।
ओम् ह्रीं श्री अवनिपाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अवनिपाल गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

श्रेयांसनाथ के स्थिराच जी, स्थिर चित्त आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिराच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्थिराच गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

श्रेयांसनाथ के स्थिरमंदर जी, स्थिर मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिरमंदर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्थिरमंदर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

श्रेयांसनाथ के भर गणधर जी, भरकर दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६७॥

श्रेयांसनाथ के विषमंधरु जी, विष न धरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विषमंधरु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विषमंधरु गणधराय अर्घ्यं...॥ ६८॥

श्रेयांसनाथ के दारुद गणधर, दारिद्र न आहा।
ओम् ह्लीं श्री दारुद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दारुद गणधराय अर्घ्यं...॥ ६९॥

श्रेयांसनाथ के सूचिपक जी, सूतक ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री सूचिपक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सूचिपक गणधराय अर्घ्यं...॥ ७०॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य पचायन, पंचगुणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री पचायन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पचायन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७१॥

श्रेयांसनाथ के मिथुलूट जी, मिथुन हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री मिथुलूट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मिथुलूट गणधराय अर्घ्यं...॥ ७२॥

श्रेयांसनाथ के हितकर गणधर, हितकर हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री हितकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री हितकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ७३॥

श्रेयांसनाथ के शिष्य हिमाचल, हिमाचल न आहा।
ओम् ह्लीं श्री हिमाचल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री हिमाचल गणधराय अर्घ्यं...॥ ७४॥

श्रेयांसनाथ के हिमलोच गणधर, हिमजेता आहा।
ओम् ह्लीं श्री हिमलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री हिमलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ ७५॥

श्रेयांसनाथ के केशकंध जी, केश नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री केशकंध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री केशकंध गणधराय अर्घ्यं...॥ ७६॥

श्रेयांसनाथ के स्त्याग गणधर, स्त्यागी आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्त्याग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्यागी गणधराय अर्घ्यं...॥ ७७॥

पूर्णार्घ्य (चौपाई)

श्रेयांसनाथ के कौतभ शिष्य, हैं स्त्याग अंत में इष्ट॥
भजें सतत्तर लेकर अर्घ्य, भक्तों के ज्ञानी गुरु पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य कौतभ-आदि सप्तसप्तति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य कौतभादि सप्तसप्तति गणधरेभ्यो नमः

जयमाला

(दोहा)

श्रेयांसनाथ प्रभु के रहे, सतत्तर शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सारे आश्रय छूटे, सहायता भी मिले नहीं।
सुख-दुख में ना साथ मिले तो, हृदय कली भी खिले नहीं॥
महा निराशा जिनको घेरे, मेघ उदासी के छाएँ।
जिन्हें आश की किरण न दिखती, हो बेचैन व्यथा पाएँ॥१॥
ऐसे में श्रेयांसनाथ की, अगर झलक भी मिल जाती।
तो प्रतिकूल अवस्थाएँ सब, झट अनुकूल बनीं जातीं॥
परम पूज्य श्रेयांसनाथ के, आश्रय के अभिलाषी जो।
भक्ति करें गुणगान करें वो, नमन करें संन्यासी को॥२॥
पुष्पोत्तर विमान को तजकर, आए कौशल सिंहपुरी।
विष्णुराज विष्णुश्री माँ सुत, मुनि बन बने केवली जी॥

समवसरण जब हुए विराजित, शिष्य सतत्तर पूजे थे।
पहले कौतभ अंतिम स्त्याग, सबको नमोऽस्तु गूँजे थे॥३॥
गुरु शिष्यों की इस धारा ने, जग धारा को बदल दिया।
दल दल जैसे भू अम्बर को, सुख का आतममहल दिया॥
अपनी केवल यही प्रार्थना, जब तक मोक्ष न पाएँ हम।
तब तक गुरु शिष्यों को भजकर, पुण्यफला को ध्यायें हम॥४॥
हम तो कब से शरण आपकी, अब तक ध्यान दिया क्यों ना।
माथा कब से झुका आपको, जिस पर हाथ रखा क्यों ना॥
यद्यपि आप विरागी हो प्रभु, राग मोह फिर खुद से क्यों?
आप पूर्ण हम अंश आपके, फिर मुख मोड़ा हमसे क्यों?॥५॥
द्रव्य-भाव-नोकर्म आपने, जैसे खुद के नशा दिए।
चिन्ता चिता नगर से न्यारा, नगर चेतना वसा लिए॥
उस चैतन्य धाम की हमको, शीघ्र छाँव दे दो स्वामी।
'सुव्रत' यह अर्जी लेकर के, चरणों में हैं प्रणमामि॥६॥

(दोहा)

श्रेयांसनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
कौतुभादि सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं कौतुभादि सप्तसप्तति गणधर सहित श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य श्रेयांस प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हम में, नाथ! आपको बुला सकें।
करें महोत्सव भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जाएगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोश हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मदहोश।
छींटा मारो ज्ञान का, आए हमको होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आए, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥
अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

कितना हमने सहन किया प्रभु, कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आए, अब तो तपा नहीं जाता।
राग-द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वन्दन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥
काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ्य हुए सिद्धालय में।
भूख-प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुए तेरी जय में॥

क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पाएँ परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥
ज्ञान-सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाए बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥
दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन-गृह में आतम की, सोन-चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
''पुण्य फला अरिहन्ता'' से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त-वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट–कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा–कदा।
लेकिन अष्टद्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा–सदा॥
आत्म–द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥
तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : बाजे कुल्डलपुर में बधाई...)

हुआ चम्पापुर में महोत्सव२, कि स्वर्गों से देव आए२,वासुपूज्यजी।
माँ ने सोलह सपने देखे२, कि त्रिलोकीनाथ आए२, वासु....
माँ जयावती हर्षायी२, कि गर्भ में पूज्य आए२, वासु....
आषाढ़ कृष्ण छठ आई२, कि सुर नर गीत गाए२ वासु....
कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बाजे चम्पापुर में बधाई२, कि नगरी में पूज्य जन्मे२, वासु....
घड़ी जन्मोत्सव की पाई२, कि त्रिलोक में आनन्द छाए२, वासु....
अभिषेक हुआ मेरु पर२, कि देव क्षीर जल लाए२, वासु....
फागुन वदि चौदस आई२, कि शचि सुर नर झूमें२, वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन वदि चौदस आई[२], कि प्रभु हुए वैरागी[२], वासु....
लौकान्तिक देव पधारे[२], कि बने तप सहभागी[२], वासु....
फिर पुष्पाभा शिविका से[२], कि वन मनोहर पहुँचे[२], वासु....
झट नमः सिद्धेभ्य कहकर[२], कि केशलौंच किए त्यागी[२], वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब दूज माघ सुदि आई[२], कि घातिकर्म सब नाशे[२], वासु....
तब बने केवली स्वामी[२], कि लगा समवसरण प्यारा[२], वासु....
फिर खिरी दिव्यध्वनि मंगल[२],कि गूँजे जय-जयकारे[२], वासु....
बही तत्त्वज्ञान की धारा[२], कि धर्म ध्वजा फहराई[२], वासु....
दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भादों सुदि चौदस आई[२], कि कर्म सारे हर डाले[२], वासु....
हुई मुक्ति वधू नत नयना[२], कि वरमाला तुम्हें डाली[२], वासु....
हुई चम्पापुर से मुक्ति[२], कि पाँचों कल्याण हुए[२], वासु....
बाजे चम्पापुर शहनाई[२], कि प्रभु को मोक्ष हुआ[२], वासु....
भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनन्त चौदस साथ।
चम्पापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री वासुपूज्य के ६६ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

वासुपूज्य तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

वासुपूज्य के वारांश गणधर, वरदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री वारांश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वारांश गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

वासुपूज्य के योगेश गणधर, योगेश्वर आहा।
ओम् ह्रीं श्री योगेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री योगेश गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

वासुपूज्य के सन्मति गणधर, सन्मति दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सन्मति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मति गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

वासुपूज्य के संभव गणधर, संभव हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री संभव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संभव गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

वासुपूज्य के निर्जित गणधर, निर्यापक आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्जित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निर्जित गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

वासुपूज्य के निर्मित गणधर, निर्मापक आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्मित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मित गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

वासुपूज्य के निर्विक गणधर, निर्वाहक आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्विक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निर्विक गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

वासुपूज्य के निष्काल गणधर, निष्कलंक आहा।
ओम् ह्रीं श्री निष्काल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निष्काल गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

वासुपूज्य के सुलोच गणधर, सुलोचना आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

वासुपूज्य के चित्रकूट जी, चित्त हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चित्रकूट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चित्रकूट गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

वासुपूज्य के शिष्य सिंह जी, सिंहगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिंह गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

वासुपूज्य के शत्रुघण जी, शत्रुंजय आहा।
ओम् ह्रीं श्री शत्रुघण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शत्रुघण गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

वासुपूज्य के गणेश गणधर, गणेश हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गणेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गणेश गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

वासुपूज्य के शिष्य अष्टदश, अष्टापद आहा।
ओम् ह्रीं श्री अष्टदश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टदश गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

वासुपूज्य के अभयकेत जी, अभय करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अभयकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अभयकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

वासुपूज्य के विभकर गणधर, विभव भरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विभकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विभकर गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

वासुपूज्य के नरसिंह गणधर, नर स्वामी आहा।
ओम् ह्रीं श्री नरसिंह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नरसिंह गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

वासुपूज्य के नृनाथ गणधर, नृपालक आहा।
ओम् ह्रीं श्री नृनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नृनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

वासुपूज्य के परमोदय जी, परमोदय आहा।
ओम् ह्रीं श्री परमोदय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परमोदय गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

वासुपूज्य के ध्वजाग गणधर, धर्म ध्वजा आहा।
ओम् ह्रीं श्री ध्वजाग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ध्वजाग गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

वासुपूज्य के शिष्य भदारक, भद्र करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भदारक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भदारक गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

वासुपूज्य के केवलोद्धव जी, केवली हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री केवलोद्धव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केवलोद्धव गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

वासुपूज्य के जवाब्बि गणधर, जवाहर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री जवाब्बि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जवाब्बि गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

वासुपूज्य के अवेत गणधर, अवसर दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अवेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अवेत गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

वासुपूज्य के शिष्य भयापह, भय भंजक आहा।
ओम् ह्रीं श्री भयापह गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भयापह गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

वासुपूज्य के प्रहलाद गणधर, प्रथम पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रहलाद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रहलाद गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

वासुपूज्य के सर्वज्ञ गणधर, सब कुछ दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सर्वज्ञ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञ गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

वासुपूज्य के गणेश गणधर, गुणकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री गणेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गणेश गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

वासुपूज्य के निरूकार जी, निष्कर्मा आहा।
ओम् ह्रीं श्री निरूकार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निरूकार गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

वासुपूज्य के राजित गणधर, राज्य करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री राजित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री राजित गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

वासुपूज्य के शिष्य गरुढ़ जी, गुरुवर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गरुढ़ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गरुढ़ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

वासुपूज्य के शिष्य कमल जी, कमल तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री कमल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कमल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

वासुपूज्य के भिक्षण गणधर, भय न करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भिक्षण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भिक्षण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

वासुपूज्य के केशव गणधर, केशलौंच आहा।
ओम् ह्रीं श्री केशव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केशव गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

वासुपूज्य के बल्देव गणधर, बलदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री बल्देव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बल्देव गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

वासुपूज्य के क्लेशनाश जी, क्लेश हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्लेशनाश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्लेशनाश गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

वासुपूज्य के विजितान गणधर, विजित करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विजितान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विजितान गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

वासुपूज्य के अभिषेण गणधर, अभिषेक दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अभिषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अभिषेण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

वासुपूज्य के बुधान गणधर, बुद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री बुधान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बुधान गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

वासुपूज्य के बालार्क गणधर, बाल नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री बालार्क गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बालार्क गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

वासुपूज्य के रतिरूप जी, रति-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री रतिरूप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रतिरूप गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

वासुपूज्य के लक्षत गणधर, लक्ष्य रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री लक्षत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री लक्षत गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

वासुपूज्य के भास्वर गणधर, भास्कर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भास्वर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भास्वर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

वासुपूज्य के सुभक्त गणधर, सुभक्त हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुभक्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुभक्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

वासुपूज्य के सातकुम्भ जी, साथी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सातकुम्भ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सातकुम्भ गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

वासुपूज्य के केदार गणधर, खेद हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री केदार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केदार गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

वासुपूज्य के खड्गाग गणधर, खार नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री खड्गाग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री खड्गाग गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

वासुपूज्य के शिष्य अगोचर, अगोचर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अगोचर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अगोचर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

वासुपूज्य के प्रजापति जी, प्रजापति आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रजापति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रजापति गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

वासुपूज्य के चारण गणधर, चतुर करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चारण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चारण गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

वासुपूज्य के ज्ञानोन गणधर, ज्ञान भरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री ज्ञानोन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोन गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

वासुपूज्य के उल्लितपो जी, उज्जवल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उल्लितपो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उल्लितपो गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

वासुपूज्य के चारुदत्त जी, चारुचैत्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री चारुदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चारुदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

वासुपूज्य के कंबकेते जी, कम्प नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कंबकेते गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कंबकेते गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

वासुपूज्य के शिष्य चन्द्रदित, चंद्रोदय आहा।
ओम् ह्लीं श्री चन्द्रदित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रदित गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

वासुपूज्य के शिष्य उनिम जी, उन्नत हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री उनिम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उनिम गणधराय अर्घ्यं...॥ ५६॥

वासुपूज्य के श्रीगत गणधर, श्रीमान हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री श्रीगत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीगत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५७॥

वासुपूज्य के भगतगणी जी, भक्त पूज्य आहा।
ओम् ह्लीं श्री भगतगणी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भगतगणी गणधराय अर्घ्यं...॥ ५८॥

वासुपूज्य के अष्टामणि जी, अष्टगुणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री अष्टामणि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टामणि गणधराय अर्घ्यं...॥ ५९॥

वासुपूज्य के तत्त्वकेवली, तत्त्वधनी आहा।
ओम् ह्लीं श्री तत्त्वकेवली गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वकेवली गणधराय अर्घ्यं...॥ ६०॥

वासुपूज्य के जिनोम गणधर, जैन ओम् आहा।
ओम् ह्लीं श्री जिनोम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनोम गणधराय अर्घ्यं...॥ ६१॥

वासुपूज्य के गदतो गणधर, गदहर्त्ता आहा।
ओम् ह्लीं श्री गदतो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गदतो गणधराय अर्घ्यं...॥ ६२॥

वासुपूज्य के त्रायस गणधर, त्राता हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री त्रायस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री त्रायस गणधराय अर्घ्यं...॥ ६३॥

वासुपूज्य के कृतान्त गणधर, कर्म हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृतान्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृतान्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ६४॥

वासुपूज्य के सिंहरथ गणधर, सिंहवृत्ति आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंहरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ६५॥

वासुपूज्य के मदर्दकेलि, मदद करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मदर्दकेलि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मदर्दकेलि गणधराय अर्घ्यं...॥ ६६॥

पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

वासुपूज्य के पहले गणधर, परम पूज्य वारांश रहे। अंतिम
मदर्दकेलि गणधर, कुल छ्यासठ मुनि शिष्य रहे॥
पहले बालयतीश हमारे, दान ब्रह्म विज्ञान करें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, हम सब के अज्ञान हरें॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यस्य वरदाता-आदि षट्षष्टि गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यस्य वरदातादि षट्षष्टि गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

वासुपूज्य प्रभु के रहे, छ्यासठ शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

बारहवें प्रभु वासुपूज्य हैं, बारह अंगों के दाता।
बारह सभासदों के स्वामी, बारह तपो अधिष्ठाता॥
बारह भावनाएँ भा करके, बारह विधि के बजा दिए।
सो बारह चक्री इन्द्रादिक, चरणों में सिर झुका दिए॥ १॥
जिन चरणों में महापुरुष भी, झुक-झुक शीश झुकाते हैं।
उन चरणों में झुक-झुक हम भी, अपना भाग्य जगाते हैं॥
जयावती वसुपूज्य पुत्र हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर जो।
जिनका नाम अकेला हर ले, संकट महाभयंकर जो॥ २॥
महाशुक्र से चंपानगरी, आन पधारे स्वामी जी।
पंच पंचकल्याणक उत्सव, हुए वहीं कल्याणी जी॥
समवसरण में छ्यासठ गणधर, बहत्तर हजार मुनि ध्यानी।
अनगिन जन से भरे खचाखच, सभासदों के तुम स्वामी॥ ३॥
पहले श्री वारांश शिष्य जी, अंतिम थे मदर्दकेलि।
मध्यकेन्द्र में वासुपूज्य जी, अगल-बगल चेला-चेली॥
गुरु शिष्य की देख मण्डली, भक्त भक्ति से रुके नहीं।
शिष्य मण्डली में जुड़ने को, माथ भक्ति से झुके यहीं॥४॥
आप रहे ऐसे तीर्थंकर, पहले बाल ब्रह्मचारी।
राज्य न भोगे और जिन्हें भी, रुची नहीं दुनियाँदारी॥

अतः हमें प्रभु वासुपूज्य को, निज आदर्श बनाना है।
ब्रह्मचर्य की कठिन साधना, प्रभु जैसी अपनाना है॥५॥

मुक्तिवधू अब भायी तो फिर, शादी-व्याह रचाना क्यों?
मुक्तिवधू से मन लागा तो, मन अन्यत्र लगाना क्यों?
मुक्तिवधू से होए सगाई, पिछी-कमण्डल धारो तो।
सिद्धालय में हो वरमाला, वासुपूज्य को ध्यायो तो॥६॥

(दोहा)

वासुपूज्य भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
वारांशादि सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री वारांशादि षट्षष्टि गणधर सहित श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य वासुपूज्य के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

हमारे दोष
जिनसे फले फूले
वे बन्धु कैसे?

श्री विमलनाथ पूजन

स्थापना

(दोहा)

विमलनाथ प्रभु नाम का, है अतिशय आशीष।
भक्त जगत् का भक्ति को, झुक जाता खुद शीश॥

(शंभु)

जय विमल प्रभो! जय विमल प्रभो!, जय विमल प्रभो! अतिशयकारी।
अब हृदय हमारे आओ प्रभु, तो हम भी हों मंगलकारी॥
जिस घट में तुमने वास किया, वह हृदय बना मुक्ति का घर।
कर्मों के बन्धन टूट पड़े, जिन-रस की धार बहे झर-झर॥
हे! निज चैतन्य विहारी जिनवर, हृदय हमारे आओ-ना।
जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, वो शुद्धातम दिलवाओ-ना॥
हम उस पदवी के अभिलाषी, जो पदवी तुमने पाई है।
इसलिए आज हे विमलराज!, यह अर्जी चरण लगाई है॥

(दोहा)

अर्जी सुनकर भक्त पर, करिये कृपा जरूर।
कल क्या हो सो भक्ति को, आज दास मजबूर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : नन्दीश्वर श्री जिनधाम)

जल जैसा कंचन रूप, आतम का शोभे।
निर्मल सुख सिद्ध स्वरूप, अपना मन मोहे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

तपता जलता संसार, क्या शीतल जग में।
जिनवाणी छायादार, सो हम प्रभु पग में॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भवसागर क्षार अपार, कौन खिवैया है।
जिन तारण तरण जहाज, भक्ति नैया है॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब खिलते चारित फूल, भक्त भ्रमर गूँजे।
हो काम व्यथा तब धूल, मुक्ति स्वयं पूजे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

निज का चखने को स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करके याद, सादर चरण पड़े॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यह मोह करे जग व्याप्त, जीते कौन बली।
दो अंतर-ज्योति आप्त, भागे मोह-खली॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सब जले, जले ना कर्म, जो दुर्गन्धित हैं।
जब जले धूप दे धर्म, धर्मी वंदित हैं॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

फल भोगें तो दें! रोग, जिससे जग रोता।
फल अर्पण से सुख योग, निज कालुष धोता॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

(शंभु)

जब विमलप्रभु का नाम सुना तो, दर्शन की इच्छा जागी।
अब दर्शन करके मन नहिं माना, तो पूजन की लौ लागी॥
फिर पूजन से ये भाव बने कि, क्यों नहिं प्रभु सम बन जाएँ।
तो भाव भक्ति से अर्घ्य चढ़ा के, शीश झुका के गुण गाएँ॥
अनुकूल रहें प्रतिकूल रहें, अब हमको इसकी आश नहीं।
हम सुखी रहें या दुखी रहें, इसकी भी कोई प्यास नहीं॥
बस नाथ आपकी पद रज से, हम निज का निज श्रृंगार करें।
जिनभक्ति नैया पर चढ़कर, सब कुछ सह लें भव पार करें॥

(दोहा)

विमलप्रभु वरदान दो, नभ जैसे विस्तीर्ण।
सहनशील भू-सम बनें, सागर सम गंभीर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

दशमी कृष्णा ज्येष्ठ में, तजे स्वर्ग सहस्रार।
जय श्यामा के गर्भ में, वसे विमल भर्त्तार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृतवर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाए केवलज्ञान।
विमलेश्वर अरिहन्त को, नमस्कार धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

विमलनाथ के ५५गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

विमलनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

विमलनाथ के पहले गणधर, आकालोच आहा।
ओम् ह्रीं श्री आकालोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आकालोच गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

विमलनाथ के संयमगारजी, संयम दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री संयमगार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री संयमगार गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

विमलनाथ के शिष्य देवगण, देवपूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री देवगण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री देवगण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

विमलनाथ के शिष्य विसर्जन, विष-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री विसर्जन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विसर्जन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

विमलनाथ के भवदेव गणधर, भव-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री भवदेव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भवदेव गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

विमलनाथ के गोवांग गणधर, गुरुवर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री गोवांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गोवांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

विमलनाथ के नियास्थि जी, न्याय करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री नियास्थि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नियास्थि गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

विमलनाथ के निर्मल गणधर, निर्मल हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्मल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मल गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

विमलनाथ के सिद्धार्थ गणधर, सिद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिद्धार्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

विमलनाथ के शिष्य अमर जी, अमर रहें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अमर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री अमर गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

विमलनाथ के चिंतागति जी, चिंताहर आहा।
ओम् ह्लीं श्री चिंतागति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री चिंतागति गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

विमलनाथ के शिष्य निरंजन, निरंजनी आहा।
ओम् ह्लीं श्री निरंजन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री निरंजन गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

विमलनाथ के शिष्य गतारग, गमक नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री गतारग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री गतारग गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

विमलनाथ के विपुलाचल जी, विपुलगुणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री विपुलाचल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री विपुलाचल गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

विमलनाथ के सुकबोध गणधर, सुखबोधक आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुकबोध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री सुकबोध गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

विमलनाथ के सुकमाल गणधर, सुकमाल हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुकमाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री सुकमाल गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

विमलनाथ के अश्रुतपारधी, अश्रु हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अश्रुतपारधी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री अश्रुतपारधी गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

विमलनाथ के आत्मेन गणधर, आत्मन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री आत्मेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री आत्मेन गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

विमलनाथ के शिष्य भूषगम, भूषण हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूषगम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भूषगम गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

विमलनाथ के शिष्य वंकटश, बंक नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वंकटश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वंकटश गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

विमलनाथ के पांचाल गणधर, पालक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पांचाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पांचाल गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

विमलनाथ के केदार गणधर, कंठ हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री केदार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री केदार गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

विमलनाथ के बभान गणधर, बड़ा करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री बभान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री बभान गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

विमलनाथ के शिष्य मगध जी, मुग्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मगध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मगध गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

विमलनाथ के ररांग गणधर, राजा हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ररांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ररांग गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

विमलनाथ के शिष्य क्षदर जी, क्षुद्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्षदर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षदर गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

विमलनाथ के पांतिपावन, पावन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पांतिपावन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पांतिपावन गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

विमलनाथ के भूतनाथ जी, भूत नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूतनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भूतनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

विमलनाथ के भामिनी गणधर, भ्रम हरते आहा।
ओम् ह्रीं श्री भामिनी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भामिनी गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

विमलनाथ के क्रोधाकुल जी, क्रोध हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्रोधाकुल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्रोधाकुल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

विमलनाथ के शिष्य शताकुल, शत-शत हों आहा।
ओम् ह्रीं श्री शताकुल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शताकुल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

विमलनाथ के मन्ये गणधर, मान्य रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मन्ये गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मन्ये गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

विमलनाथ के कोलेव गणधर, काले न आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोलेव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोलेव गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

विमलनाथ के कम्पन गणधर, कम्प नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कम्पन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कम्पन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

विमलनाथ के शिष्य विचक्षण, विलक्षणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री विचक्षण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विचक्षण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

विमलनाथ के मिश्रीवेग जी, मिश्रीसम हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मिश्रीवेग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मिश्रीवेग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

विमलनाथ के माघनंदी जी, मेघनाद आहा।
ओम् ह्रीं श्री माघनंदी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री माघनंदी गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

विमलनाथ के वृद्धिका गणधर, वृद्ध नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वृद्धिका गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृद्धिका गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

विमलनाथ के शिष्य निरंकुश, निरंकार आहा।
ओम् ह्रीं श्री निरंकुश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निरंकुश गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

विमलनाथ के ध्यषना गणधर, धृष्ट नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री ध्यषना गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यषना गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

विमलनाथ के चात्राग गणधर, चतुर करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री चात्राग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चात्राग गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

विमलनाथ के अधीशना जी, अधीश हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अधीशना गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अधीशना गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

विमलनाथ के अतिशय गणधर, अतिशय हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अतिशय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

विमलनाथ के सोमदत्त जी, सौम्य करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सोमदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सोमदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

विमलनाथ के भवमाभव जी, भव-शोधक आहा।
ओम् ह्रीं श्री भवमाभव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भवमाभव गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

विमलनाथ के शिष्य पार्श्व जी, पार्श्वनाथ आहा।
ओम् ह्रीं श्री पार्श्व गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

विमलनाथ के सद्व्रज गणधर, सद्गुण हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सद्व्रज गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सद्व्रज गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

विमलनाथ के ब्रह्मदत्त जी, ब्रह्म वाक्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री ब्रह्मदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

विमलनाथ के शिष्य पद्म जी, पद्माकर आहा।
ओम् ह्रीं श्री पद्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पद्म गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

विमलनाथ के धर्मासन जी, धर्म-तिलक आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मासन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मासन गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

विमलनाथ के उग्रतपो जी, उग्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उग्रतपो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उग्रतपो गणधराय अर्घ्यं...॥ ५१॥

विमलनाथ के शिष्य समुन्नत, समान हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री समुन्नत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री समुन्नत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५२॥

विमलनाथ के नकेश गणधर, नकेल ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री नकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ ५३॥

विमलनाथ के शिष्य चिरंतिस, चिरंजीव आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिरंतिस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चिरंतिस गणधराय अर्घ्यं...॥ ५४॥

विमलनाथ के उर्जति गणधर, ऊर्जा दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री उर्जति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उर्जति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५५॥

पूर्णार्घ्य

(लय—माता तू दया करके...)

श्री विमलनाथ प्रभु के, हैं पहले आकालोच।
अंतिम उर्जित गणधर, कुल पचपन हैं धोक॥
जो चेतन विमल करें, हम उनको अर्घ्य धरें।
कर लो स्वीकर हमें, हम भी तो पर्व करें॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य आकालोचादि पंचपंचाशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य आकालोचादि पंचपंचाशत् गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

विमलनाथ प्रभु के रहे, पचपन शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके दर्पण जैसे निर्मल, ज्ञान लोक में जग झलके।
विश्व मलों को नाश चुके जो,उन्हें नमन हों पल-पल के॥
ऐसे विमलनाथ हम सबको, निर्मल कर दें मल हर के।
इसी लक्ष्य से जिनको पूजें, चरणों में माथा धर के॥१॥
सहस्रार से कपिला नगरी, आए कल्याणक देकर।
कृतवर्मा जयश्यामा माँ के, पुत्र बने श्री विमलेश्वर॥
राज भोग वैराग्य योग से, मुनि बनकर छद्मस्थ हुए।
जब आत्मस्थ हुए तो केवलज्ञानी प्रभु सर्वज्ञ हुए॥२॥
पचपन गणधर शिक्षित करके, समवसरण में दी वाणी।
प्रथम आकालोच शिष्य जी, अंतिम उर्जित कल्याणी॥
आठ हजार छह सौ मुनियों सह, मोक्ष अष्टमी को पाया।
काल अष्टमी तब से जग में, पुजने लगी बनी माया॥३॥
गुरु शिष्यों की परम्परा ने, धर्मवृक्ष का सिंचन कर।
जिनशासन के फल-फूलों को, बाँटा आतम का रस भर॥
अपनी केवल यही प्रार्थना, हमको भी रसदार करो।
नीरस जैसे इस जीवन में, आतम का रस सार भरो॥४॥

बुद्धू को जो बुद्ध बना दें, शुद्ध करें अभिशापों से।
हमें बचा कर निर्मल कर दें, हिंसादिक सब पापों से॥
उनको बुध ग्रह तक सीमित कर, क्या? अज्ञान नहीं होगा।
मन से 'सुव्रत' जय तो बोलो, क्या? कल्याण नहीं होगा॥५॥

(दोहा)

विमलनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
आकालोच सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री आकालोच-आदि पंचपंचाशत् गणधर सहित श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य विमल प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया

श्री अनन्तनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अनन्तगुणी है आतमा, सर्वसुखी भरपूर।
अनन्तप्रभु उसके प्रभु, नमोऽस्तु जिन्हें जरूर॥

(हरिगीतिका)

प्रभु आपकी पद वन्दना से, शुद्धता से उर खिले।
हर कष्ट कटते भव-भवों के, पुण्य की पंक्ति मिले॥
पातक कटें गुण चिंतनों से, शीघ्र ही निज भान हो।
फिर आप जैसी शुद्ध निर्मल, चेतना का ज्ञान हो॥
हम आपके पथ पर चलें, पदवी मिले अरिहन्त की।
इससे रचाई अर्चना प्रभु, परमपूज्य अनन्त की॥
है प्रार्थना केवल हमारी, भक्ति नैया थाम लो।
मृत्यु महोत्सव हो हमारा, कण्ठ में प्रभु नाम हो॥

(दोहा)

अनन्त स्वामी को नमन, करें वन्दना आज।
भक्ति पुष्प हम, तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(पंचचामर/तोमर)

हमें मिली स्वजन्म से हि, मृत्यु की महा सजा।
मिला नहीं इलाज या, मिली नहीं यहाँ दवा॥
करें निजात्म को निरोग, नीर को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अनादि से जले तपे, मिली सदा अशान्ति है।
कहाँ मिले जिनेन्द्र छाँव, आत्म रूप शान्ति है॥

करें निजात्म को सुशीत, शीत को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

विनाशवान ही हमें, मिला सदैव विश्व में।
दिखा स्वरूप आपका, मिले हमें भविष्य में॥
करें निजात्म अक्षयी, सुपुंज को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जिसे स्व-वीतरागता, जिनेश रूप भाएगा।
विकार का विभाव काम, तो विराम पाएगा॥
करें निजात्म को सुशील, पुष्प को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

शरीर है नहीं शरीफ, भूख प्यास से दुखी।
अपूर्ण कामना न ज्ञान, के बिना रहे सुखी॥
करें निजात्म पूर्ण तृप्त, कामना चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

महान् मोह की घटाएँ, आत्मकक्ष ढाँकती।
महारती जिनेन्द्र की, महान् मोह नाशती॥
भरें निजात्म ज्ञान से, सुदीप ये जलाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

लकीर हाथ की भरी, विभाव गंध कीच से।
निकालिए हमें अनन्त, कर्म-बन्ध बीच से॥

भरें निजात्म गंध से, सुगंध को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अनन्त जन्म लक्ष्य के, अभाव में गँवा दिए।
फलों भरी चिदात्म को, कषाय से जला दिए॥
मिले निजात्म आत्म को, फलात्म के चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अनन्त विश्व में फँसे, अनन्त राग-द्वेष से।
अनन्त कष्ट भोगते, अनन्त बार क्लेश से॥
अनन्त बार नर्क की, अनन्त बार स्वर्ग की।
अनन्त बार वेदना, अनन्त बार दर्द की॥
अनन्त बार की कथा, अनन्त बार छोड़ दी।
अनन्त तो मिले नहीं, अनन्त शर्त तोड़ दी॥
हमें अनन्तनाथजी, बुलाइये अनन्त में।
अनन्त-धर्म दीजिये, मिलाइये अनन्त में॥

(सोरठा)

मिले यही वरदान, अनन्तप्रभु भगवान् से।
अर्पित अर्घ्य महान्, वन्दन मन वच प्राण से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

एकम् कार्तिक कृष्ण को, तज सोलह सुर इन्द्र।
जयश्यामा के गर्भ में, आए अनन्त जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहन्त जी, जिन्हें नमोऽस्तु बहुबार॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी ज्ञान तिथि में गए, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अनन्तनाथ के ५० गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

अनन्तनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

अनन्तनाथ के शिष्य सकोदर, प्रथम रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री सकोदर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सकोदर गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

अनन्तनाथ के उच्यत गणधर, उच्च करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री उच्यत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उच्यत गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

अनन्तनाथ के सर्वोत्तम जी, सुखी करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सर्वोत्तम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री सर्वोत्तम गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

अनन्तनाथ के शिष्य उदय जी, उदार हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री उदय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री उदय गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तनाथ के कपोल गणधर, कल्पित ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री कपोल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री कपोल गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

अनन्तनाथ के वेदित गणधर, वैद्य रहे आहा।
ओम् ह्लीं श्री वेदित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री वेदित गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

अनन्तनाथ के अशोक गणधर, अशोक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अशोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री अशोक गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

अनन्तनाथ के नाना गणधर, नायक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री नाना गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री नाना गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

अनन्तनाथ के शिष्य अनंगत, अनन्त हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अनंगत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री अनंगतगणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

अनन्तनाथ के अहारिक जी, आह हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अहारिक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री अहारिक गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

अनन्तनाथ के परमउस्वा जी, परम उच्च आहा।
ओम् ह्लीं श्री परमउस्वा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री परमउस्वा गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

अनन्तनाथ के उर्जित गणधर, ऊर्जा दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री उर्जित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री उर्जित गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

अनन्तनाथ के सत्यंधर जी, सत्य रूप आहा।
ओम् ह्लीं श्री सत्यंधर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री सत्यंधर गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

अनन्तनाथ के दशरथ गणधर, दस धर्मा आहा।
ओम् ह्लीं श्री दशरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री दशरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

अनन्तनाथ के ततसार गणधर, तत्त्वसार आहा।
ओम् ह्लीं श्री ततसार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री ततसार गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

अनन्तनाथ के वीरसेन गणधर, वीरा हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री वीरसेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री वीरसेन गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

अनन्तनाथ के शिष्य तथोगत जी, तथाऽस्तु हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री तथोगत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री तथोगत गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

अनन्तनाथ के अलोल गणधर, अलिप्त हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अलोल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्लीं श्री अलोल गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

अनन्तनाथ के शिष्य कोष्ठरथ, कुष्ठ हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कोष्ठरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कोष्ठरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

अनन्तनाथ के जिनदत्त गणधर, जिनदेवा आहा।
ओम् ह्रीं श्री जिनदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

अनन्तनाथ के गूढांग गणधर, गूढ़गर्भ आहा।
ओम् ह्रीं श्री गूढांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गूढांग गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

अनन्तनाथ के आत्मिक गणधर, आत्मिक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री आत्मिक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मिक गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

अनन्तनाथ के अक्षीण गणधर, अक्षीण हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अक्षीण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षीण गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

अनन्तनाथ के अभिकेत गणधर, अभियंता आहा।
ओम् ह्रीं श्री अभिकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अभिकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

अनन्तनाथ के योगेश गणधर, योग्य करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री योगेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री योगेश गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

अनन्तनाथ के शिष्य उनोन्नत, ऊन नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उनोन्नत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उनोन्नत गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

अनन्तनाथ के शिष्य खगानन, खड्ग नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री खगानन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री खगानन गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥
अनन्तनाथ के वज्रनाभि जी, वज्र पुरुष आहा।
ओम् ह्रीं श्री वज्रनाभि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वज्रनाभि गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥
अनन्तनाथ के धर्मकेश जी, धर्म कलश आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मकेश गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मकेश गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥
अनन्तनाथ के शिष्य अनभ जी, अनल्प हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनभ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अनभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥
अनन्तनाथ के शिष्य जग्म जी, जगमग हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री जग्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जग्म गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥
अनन्तनाथ के पद्मकोल जी, पद्मकमल आहा।
ओम् ह्रीं श्री पद्मकोल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मकोल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥
अनन्तनाथ के दिव्यांग गणधर, दिव्य रत्न आहा।
ओम् ह्रीं श्री दिव्यांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दिव्यांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥
अनन्तनाथ के शिष्य वक्र जी, वक्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वक्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री वक्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

अनन्तनाथ के तपनि गणधर, तपनीया आहा।
ओम् ह्रीं श्री तपनि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री तपनि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

अनन्तनाथ के उच्यत गणधर, उच्च धाम आहा।
ओम् ह्रीं श्री उच्यत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उच्यत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

अनन्तनाथ के श्रृकंती जी, श्री-कंती आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रृकंती गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री श्रृकंती गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

अनन्तनाथ के श्रीषेण जी, श्री स्वामी आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रीषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीषेण गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

अनन्तनाथ के सौन्दर्यवान जी, सुन्दर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सौन्दर्यवान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सौन्दर्यवान गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

अनन्तनाथ के शिष्य स्वयंवर, स्वयंवरण आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वयंवर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्वयंवर गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

अनन्तनाथ के हरिषेण जी, हरि-पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री हरिषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री हरिषेण गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

अनन्तनाथ के सुव्रति गणधर, सु-व्रत दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुव्रति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुव्रति गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

अनन्तनाथ के शिष्य उगातव, उग्रतपि आहा।
ओम् ह्रीं श्री उगातव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उगातव गणधराय अर्घ्यं...॥ ४३॥

अनन्तनाथ के जल्लो गणधर, जल्लौषध आहा।
ओम् ह्रीं श्री जल्लो गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जल्लो गणधराय अर्घ्यं...॥ ४४॥

अनन्तनाथ के स्थिभुक्त जी, स्तिथ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिभुक्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्थिभुक्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ४५॥

अनन्तनाथ के मुक्तमुनि जी, मुक्त करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुक्तमुनि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्तमुनि गणधराय अर्घ्यं...॥ ४६॥

अनन्तनाथ के महात्म गणधर, महात्मा हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री महात्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महात्म गणधराय अर्घ्यं...॥ ४७॥

अनन्तनाथ के कमवृष्टि जी, काम हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कमवृष्टि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कमवृष्टि गणधराय अर्घ्यं...॥ ४८॥

अनन्तनाथ के शिष्य तपोधन, तपोधनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री तपोधन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तपोधन गणधराय अर्घ्यं...॥ ४९॥

अनन्तनाथ के शिष्य सगौरव जी, सगुण रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सगौरव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सगौरव गणधराय अर्घ्यं...॥ ५०॥

पूर्णार्घ्य

(जोगीरासा)

अनन्त प्रभु के पचास गणधर, प्रथम सकोदर स्वामी।
अंतिम रहे सगौरव ज्ञानी, जिनको करें नमामि॥
अनन्त गुण के दाता जिनवर, हर लो दोष हमारे।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, देना रोज सहारे॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथस्य सकोदर-आदि पंचाशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथस्य सकोदरादि पंचाशत् गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

अनन्तनाथ प्रभु के रहे, पचास शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जो कुछ नाथ! आपने चाहा, उसे आपने प्राप्त किया।
निजी वज्रपौरुष से स्वामी, भव का चक्र समाप्त किया॥
इतने-इतने उच्च उठे कि, लोकशिखर पर जा बैठे।
जो हम चाहें वो ना पाए, क्या हमसे तुम हो रूठे ?॥ १॥

सुख माँगा दुख पाया हमने, माँगा स्वर्ग, नरक पाया।
माँगी शान्ति मिली अशान्ति, माँगा अमृत विष पाया॥
धूप मिली जब माँगी छाया, माँगा धैर्य मिली माया।
माँगा पुण्य, पाप तब पाया, भक्त समझने ये आया॥२॥
पुष्पोत्तर से चले अयोध्या, सिंहसेन श्यामा सुत जी।
समवसरण में हुए विराजित, पचास गणधर नायक जी॥

गुरु शिष्य की इस जोड़ी ने, धर्मों की धारा जोड़ी।
भक्तों को दे थोड़ी-थोड़ी, कर्मों की धारा मोड़ी॥३॥
हम भक्तों की यही प्रार्थना, हमको शिष्य बना लेना।
अपनी छत्र-छाँव में लेकर, उज्ज्वल भविष्य बना देना॥
ऐसे श्री अनन्त जिनवर की, जय बोलो गुण गाओ तो।
फिर जो चाहो वो सब पाओ, इनकी शरणा आओ तो॥४॥
कर-कर याद आपकी बातें, रात-रात भर रोते हम।
भक्ति समर्पण का जल भरकर, पलकें अपनी धोते हम॥
माला फेरें करें अर्चना, बीज पुण्य का बोकर हम।
प्रभु 'सुव्रत' का भाग खिला दो, मस्त रहें खुश होकर हम॥५॥

(दोहा)

अनन्तनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
सकोदरादि सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री सकोदरादि पंचाशत् गणधर सहित श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य वृषभ प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री धर्मनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

धर्म सूर्य जब हो उदय, दिखता निज संन्यास।
धर्मनाथ को हो नमन, पाने ज्ञान प्रकाश॥

(गीतिका)

आप ही हो मात्र सुन्दर, आप ही अपने रहे।
आप ही हो मात्र साँचे, झूठ सब सपने रहे॥
आप तो लोकाग्र पर हो, भक्त क्यों हम दूर हैं।
चाहते हैं आपको पर, मिलन से मजबूर हैं॥
सात राजू उच्च स्वामी, वीतरागी नाथ हैं।
हम सरागी आप बिन तो, रोज-रोज अनाथ हैं॥
डोर श्रद्धा की हमारी, आप ही प्रभु थाम लो।
भाव भक्ति प्रार्थना सुन, भक्त पर कुछ ध्यान दो॥

(दोहा)

हृदय हमारे आइए, धर्मनाथ भगवान्।
सादर तुम्हें प्रणाम कर, करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

नीर श्रद्धा का लिया है, भक्ति के निज पात्र में।
ज्यों किया अर्पण तुम्हें तो, आत्म झलकी आप में॥
मैल मिथ्या पूर्ण धोने, जल हमें निज धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्रोध ज्वाला से जला है, प्राणियों का चित्-सदन।
इस सदन में आ विराजो तो, खिले आतम वतन॥

आतमा की शान्ति पाने, भक्त पर प्रभु छाँव हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

रत्न हीरे मोति आदिक, तो नहीं हैं पास में।
क्या चढ़ाएँ जो हमें भी, टेर लें प्रभु पास में॥
आतमा अक्षय बनाने, धर्म का पद धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतमा की पुष्प बगिया, आप तो महका रहे।
पंखुड़ी इक दो उसी की, क्यों हमें तड़पा रहे॥
मद के विजेता बन सकें हम, आप सम निष्काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

राग का ही स्वाद जाना, वीतरागी ना हुए।
खूब पुद्गल को चखा पर, भक्ति रस को ना छुए॥
स्वाद आतम का चखें बस, धर्म रस विज्ञान दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आज तक तो था अँधेरा, सूझता ना कुछ भला।
मोह की काली घटा में, धर्म का दीपक जला॥
आरती करके तुम्हारी, आतमा का भान हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

गंध खिलती आत्म की तो, कर्म कीड़े भागते।

धूप प्रभु को सौंपते तो, भाग्य अपने जागते॥
गंध से निज गंध पाने, धर्म का बस नाम लो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आतमा क्वाँरी हमारी, भक्ति मण्डप रिक्त है।
आपकी नजरें पड़ें तो, मुक्ति वरता भक्त है॥
भक्ति मण्डप में पधारो, धर्म की फलमाल हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

देखने जग को दिखाने, अर्घ्य प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहा के, धर्म अपना झौंकते॥
हाय! दर्शन तज, प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥
धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।
धर्म ही अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ्य श्रद्धा से चढ़ाएँ, धर्म से हर काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

तेरस सुदि वैशाख को, त्याग अनुत्तर स्वर्ग।
धर्म हुए कल्याणमय, पाए सुप्रभा गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुए नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष पूर्णिमा को हरे, घातिकर्म संसार।
धर्म संत अरिहन्त को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्षधर्म प्रभु पाए।
सुदत्तकूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री धर्मनाथ के ४३ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

धर्मनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

धर्मनाथ के पहले गणधर, गुणगप्ति आहा।
ओम् ह्रीं श्री गुणगप्ति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गुणगप्ति णधराय अर्घ्यं...॥ १॥

धर्मनाथ के कृत्य गणधर, कृत्य नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृत्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्य गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

धर्मनाथ के विकटि गणधर, विकट नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री विकटि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विकटि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

धर्मनाथ के क्षपण गणधर, क्षपक रहे आहा।
ओम् ह्लीं श्री क्षपण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री क्षपण गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

धर्मनाथ के निरोत्तम गणधर, निरा नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री निरोत्तम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निरोत्तम गणधराय अर्घ्यं...॥ ॥

धर्मनाथ के क्षेमंधरा गणधर, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री क्षेमंधरा गणधराय नमो नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री क्षेमंधरा गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

धर्मनाथ के शिष्य उदाहक, उदार हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री उदाहक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उदाहक गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

धर्मनाथ के शिष्य तिलोतम, तिल तुष न आहा।
ओम् ह्लीं श्री तिलोतम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तिलोतम गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

धर्मनाथ के सोव्रति गणधर, सुव्रत हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सोव्रति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सोव्रति गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

धर्मनाथ के कांजिकांत जी, कांजी ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री कांजिकांत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कांजिकांत गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

धर्मनाथ के कुन्थु गणधर, कुन्थु नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुन्थु गणधराय नमो नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्री कुन्थु गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

धर्मनाथ के मारीच गणधर, मारीच न आहा।
ओम् ह्रीं श्री मारीच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मारीच गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

धर्मनाथ के निर्जित गणधर, निजीर्ण न आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्जित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री निर्जित गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

धर्मनाथ के सिंहकेत जी, सिंहवृत्ति आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंहकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

धर्मनाथ के विवेति गणधर, विवेक दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विवेति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विवेति गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

धर्मनाथ के कल्याण गणधर, कल्याणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कल्याण गणधराय नमो नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्री कल्याण गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

धर्मनाथ के ध्रुव गणधरजी, ध्रुव रूपी आहा।
ओम् ह्रीं श्री ध्रुव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ध्रुव गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

धर्मनाथ के काकोदर जी, काक नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री काकोदर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री काकोदर गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

धर्मनाथ के आलोच गणधर, आलोच न आहा।
ओम् ह्लीं श्री आलोच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री आलोच गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

धर्मनाथ के व्रतशुद्धयर्थ जी, व्रत-शोधक आहा।
ओम् ह्लीं श्री व्रतशुद्धयर्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री व्रतशुद्धयर्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

धर्मनाथ के शिष्य अगोचर, अगोचर हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अगोचर गणधराय नमो नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री अगोचर गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

धर्मनाथ के उभखेट गणधर, उभय सुखी आहा।
ओम् ह्लीं श्री उभखेट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उभखेट गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

धर्मनाथ के शिष्य अष्टभुज, अष्ट गुणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री अष्टभुज गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टभुज गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

धर्मनाथ के धर्मासन जी, धर्मासन हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री धर्मासन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मासन गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

धर्मनाथ के धर्मातन जी, धर्मायतन आहा।
ओम् ह्लीं श्री धर्मातन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मातन गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

धर्मनाथ के व्यत्सर्ग गणधर, व्युत्सर्गी आहा।
ओम् ह्लीं श्री व्यत्सर्ग गणधराय नमो नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री व्यत्सर्ग गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

धर्मनाथ के शिष्य सुदेशन, सुदेशना आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुदेशन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सुदेशन गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥
धर्मनाथ के दधिति गणधर, दधि नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री दधिति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री दधिति गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥
धर्मनाथ के विचयाक्षे जी, विचय रहें आहा।
ओम् ह्लीं श्री विचयाक्षे गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विचयाक्षे गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥
धर्मनाथ के स्नातक गणधर, स्नान हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री स्नातक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री स्नातक गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥
धर्मनाथ के बुधुतम गणधर, बुद्ध करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री बुधुतम गणधराय नमो नमः स्वाहा
ॐ ह्रीं श्री बुधुतम गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥
धर्मनाथ के अभ्यांतर जी, अभय करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अभ्यांतर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अभ्यांतर गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥
धर्मनाथ के शिष्य गरुड़ जी, गरुड़ मंत्र आहा।
ओम् ह्लीं श्री गरुड़ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गरुड़ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥
धर्मनाथ के शुभकर गणधर, शुभ करते आहा।
ओम् ह्लीं श्री शुभकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री शुभकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

धर्मनाथ के अपि गणधर जी, अयश हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अपि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अपि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

धर्मनाथ के धर्मधार जी, धर्मधार आहा।
ओम् ह्रीं श्री धर्मधार गणधराय नमो नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री धर्मधार गणधराय अर्घ्यं...॥ ३७॥

धर्मनाथ के ध्रुव गणधर जी, ध्रुव आतम आहा।
ओम् ह्रीं श्री ध्रुव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ध्रुव गणधराय अर्घ्यं...॥ ३८॥

धर्मनाथ के शिष्य कृष्टतप, कष्ट हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री कृष्टतप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कृष्टतप गणधराय अर्घ्यं...॥ ३९॥

धर्मनाथ के विर्जित गणधर, विजित करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री विर्जित गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विर्जित गणधराय अर्घ्यं...॥ ४०॥

धर्मनाथ के बुद्धनाथ जी, बोध भरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री बुद्धनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्धनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ४१॥

धर्मनाथ के स्थिराशय जी, स्थिर करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिराशय गणधराय नमो नमः स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री स्थिराशय गणधराय अर्घ्यं...॥ ४२॥

धर्मनाथ के रजायते जी, राज करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री रजायते गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री रजायते गणधराय अर्घ्यं...॥४३॥

पुर्णार्घ्य

(शम्भु)

श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के पहले गणधर गुणगप्ति रहें।
हैं अंतिम गणधर रजायते गुरुज्ञानी तेंतालीस रहें॥
सब पाप अधर्म नशाने को निज आत्म धर्म प्रकटाने को।
नित करके नमोऽस्तु भक्ति करें हम अर्घ्य चढ़ाने को॥

ऊँ ह्रीं श्री धर्मनाथस्य गुणगप्ति-आदि त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ऊँ ह्रीं श्री धर्मनाथस्य गुणगप्ति-आदि त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

धर्मनाथ प्रभु के रहे, तेतालीस शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय धर्मनाथ धर्मेश्वर, जय-जय धर्म-पिता दाता।
जय-जय धर्मप्रचारक धर्मी, जय-जय धर्म-गुरु धाता॥
जय-जय धर्मधुरंधर धीरा, धर्म धर्मपति विख्याता।
जय-जय धर्मतीर्थ के पालक, अपना कैसा है नाता॥ १॥
जैसे नीरज का सूरज से, शिशु का माता से जैसे।
जैसे जीवों का साँसों से, मछली का जल से जैसे॥
जैसे खुशबू का फूलों से, पक्षी का नभ से जैसे।
जैसे आत्म ज्ञान दर्शन हैं, भक्त और भगवन् वैसे॥ २॥
तज सर्वार्थसिद्धि को स्वामी, रत्नपुरी में जन्म धरे।
भानुराज माँ सुव्रता सुत, मुनि बन निज कैवल्य वरे॥

एक वर्ष छदमस्थ बिताकर, सप्तच्छद तरुतल में जा।
बेला कर नक्षत्र पुष्य में, बने केवली लगी सभा॥३॥
तेतालीस गणधर से शोभित, समवसरण में धर्म कहे।
गुणगप्ति जी पहले गणधर, रजायते जी अंत रहे॥
गुरु शिष्य की मंगल जोड़ी, धर्म सिखा के कर्म हरें।
हम सब की बस यही प्रार्थना, शिष्य बनें गुरु धर्म धरें॥४॥
धर्मनाथ का केवल सुमरण, उलझन कष्ट कर्म हर ले।
रे! चेतन अब तनिक सोचकर, मन में तनिक धर्म धर ले॥
स्वामी अपने अनन्य भक्त को, अपना धर्म दिला दो ना।
श्रद्धालय से सिद्धालय में, 'सुव्रत' को बुलवालो ना॥५॥

(दोहा)

धर्मनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
गुणगप्ति सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री गुणगप्ति-आदि त्रिचत्वारिंशत् गणधर सहित श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य धर्म प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

शान्तिप्रभु के पद-कमल, भक्त हृदय के प्राण।
द्रव्य भाव से भक्ति कर, हम तो करें प्रणाम॥

(मालती या लोलतरंग जैसा)

जब-जब याद तुम्हारी आई, तब-तब मन्दिर को हम दौड़े।
जब-जब मन्दिर को हम दौड़े, तब-तब दर्शन कर, कर जोड़े॥
जब-जब दर्शन कर, कर जोड़े, तब-तब पूजन पाठ रचाई।
जब-जब पूजन-पाठ रचाई, तब-तब याद विधान की आई॥
जब-जब याद विधान की आई, तब-तब शान्ति विधान रचाए।
जब-जब शान्ति विधान रचाए, तब-तब संकट दुख घबराए॥
जब-जब संकट दुख घबराए, तब-तब निज की शान्ति पाई।
जब-जब निज की शान्ति पाई, तब-तब याद तुम्हारी आई॥
शान्ति-प्रभु हमको मिले, जिनकी हमें तलाश।
आओ! आओ! मन वसो, करिये नहीं उदास॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जब-जब शान्ति प्रभु को भूले, तब-तब मिथ्या फलते फूले।
जब-जब मिथ्या फलते फूले, तब-तब जन्म मरण हम झेले॥
जैसे ही शान्ति को याद किया तो, निर्मल आतम सी झलकी है।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी जल की है॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जब-जब शान्ति का नाम लिया ना, तब-तब खूब उपद्रव होते।
जब-जब खूब उपद्रव होते, तब-तब चेतन के दिल रोते॥

जैसे ही शान्ति का नाम पुकारा, ज्वाला शीतल हुई चेतन की।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में धारा दी चंदन की॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।
जब-जब शान्ति की माला न फेरी, तब-तब मन बंदर सा फिरता।
जब-जब मन बन्दर सा फिरता, तब-तब रूप दिगम्बर न रुचता॥
जैसे ही शान्ति की माला फेरी, मोक्ष महल सा निज में पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाए॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।
जब-जब शान्ति का दर्शन न पाया, तब-तब निज की कली मुरझाई।
जब-जब निज की कली मुरझाई, तब-तब आतम खिलने न पाई॥
जैसे ही शान्ति का दर्शन पाया, दोष नशे हुई ब्रह्म गुलाला।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित पुष्पों की माला॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।
जब-जब ध्याया न शान्तिप्रभु को, तब-तब जीवन नीरस जैसा।
जब-जब जीवन नीरस जैसा, तब-तब आतम भूखा प्यासा॥
जैसे ही शान्ति का ध्यान लगाया, निज में निज का रस-सा आया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में ये नैवेद्य चढ़ाया॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।
जब-जब शान्ति की आरती न की, तब-तब जीवन में छाया अँधेरा।
जब-जब जीवन में छाया अँधेरा, तब-तब राही का बढ़ता है फेरा॥
जैसे ही शान्ति की ज्योति मिली तो, ज्ञान का सूर्य प्रकाशित पाया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में आकर दीप जलाया॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जब–जब शान्ति का पाठ किया ना, तब–तब कर्मों की बढ़ती कहानी।
जब–जब कर्मों की बढ़ती कहानी, तब–तब निज की विभूति विरानी॥
जैसे ही शान्ति का पाठ रचाया, कर्मों की कड़ियाँ चट–चट चटकीं।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में खेएँ धूप धूप–घट की॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जब–जब न पूजा शान्तिप्रभु को, तब–तब दुनियाँ हमसे रूठी।
जब–जब दुनियाँ हमसे रूठी, तब–तब जीने की आशा छूटी॥
जैसे ही शान्तिप्रभु को पूजा, आतम में परमातम सा पाए।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में फल के गुच्छे चढ़ाए॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जब–जब शान्ति विधान किया ना, तब–तब है हर क्रिया अधूरी।
जब–जब है हर क्रिया अधूरी, तब–तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल...)

नमो–नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[२]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[२]
चुपके–चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा....नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[२]
रत्न–वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[२]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो...

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर...)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथ जी
सौधर्म शचि सह आए, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथ जी
नृप विश्वसेन हर्षाए, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथ जी

(दोहा)

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा, झूठी दुनियाँ त्याग,
धार ले वैराग्य
जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग रे चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

(दोहा)

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥

जैसे ही मोह का अंध नशाए, केवलज्ञानी हों अरिहन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अरिहन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥
कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥

(दोहा)

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री शान्तिनाथ के ३६ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

शान्तिनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

शान्तिनाथ के चक्रायुध जी, प्रथम शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री चक्रायुध गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री चक्रायुध गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

शान्तिनाथ के श्रृंगनाथ जी, श्रृंगारें आहा।
ओम् ह्लीं श्री श्रृंगनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रृंगनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

शान्तिनाथ के सिद्धनाथ जी, सिद्ध करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सिद्धनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

शान्तिनाथ के अदिते गणधर, आदित्य हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अदिते गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अदिते गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

शान्तिनाथ के अक्षत गणधर, अक्षत हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री अक्षत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

शान्तिनाथ के दुर्योधन जी, दुर्बल ना आहा।
ओम् ह्लीं श्री दुर्योधन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दुर्योधन गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

शान्तिनाथ के शिष्य तपोधन, तप दाता आहा।
ओम् ह्लीं श्री तपोधन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तपोधन गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

शान्तिनाथ के निर्मलोत जी, निर्मल हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री निर्मलोत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मलोत गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

शान्तिनाथ के पाण्डु गणधर, पाण्डु नहीं आहा।
ओम् ह्लीं श्री पाण्डु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पाण्डु गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

शान्तिनाथ के शान्ति गणधर, शान्ति करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शान्ति गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

शान्तिनाथ के शिष्य भरत जी, भरते गुण आहा।
ओम् ह्रीं श्री भरत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री भरत गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

शान्तिनाथ के नवाक्ष गणधर, नवाचार आहा।
ओम् ह्रीं श्री नवाक्ष गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री नवाक्ष गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

शान्तिनाथ के शिष्य सिंह जी, सिंहासनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिंह गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री सिंह गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

शान्तिनाथ के शिष्य कंठ जी, कंठस्थ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कंठ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री कंठ गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

शान्तिनाथ के सुकंठ गणधर, सुकंठी हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुकंठ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री सुकंठ गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

शान्तिनाथ के प्रह्वाद गणधर, प्रथम पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रह्वाद गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री प्रह्वाद गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

शान्तिनाथ के शिष्य दयोखिल, दयोदयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री दयोखिल गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री दयोखिल गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

शान्तिनाथ के शिष्य भुवन जी, भुवननाथ आहा।
ओम् ह्रीं श्री भुवन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री भुवन गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

शान्तिनाथ के शिष्य पलायन, पालक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री पलायन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री पलायन गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

शान्तिनाथ के विस्वाभर जी, विश्व पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री विस्वाभर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री विस्वाभर गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

शान्तिनाथ के विश्वलोक जी, विश्व गुरु आहा।
ओम् ह्रीं श्री विश्वलोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री विश्वलोक गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

शान्तिनाथ के खिन्नत गणधर, खिन्न न हों आहा।
ओम् ह्रीं श्री खिन्नत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री खिन्नत गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

शान्तिनाथ के क्षतकाल गणधर, क्षय न हुए आहा।
ओम् ह्रीं श्री क्षतकाल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री क्षतकाल गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

शान्तिनाथ के शिष्य लिगन जी, लग्न-भाग्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री लिगन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री लिगन गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

शान्तिनाथ के बलिभद्र गणधर, बलिहर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री बलिभद्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ऊँ ह्रीं श्री बलिभद्र गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

शान्तिनाथ के हमगत गणधर, हिम्मत दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री हमगत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री हमगत गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

शान्तिनाथ के शिष्य वकानन, वक्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री वकानन गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री वकानन गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

शान्तिनाथ के उत्पन्न गणधर, उत्प्रेरक आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्पन्न गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री उत्पन्न गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

शान्तिनाथ के अनन्त गणधर, अंत नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनन्त गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

शान्तिनाथ के संश्रृत गणधर, संस्कारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री संश्रृत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री संश्रृत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

शान्तिनाथ के संबल गणधर, संबल दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री संबल गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री संबल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

शान्तिनाथ के कालिद गणधर, कालजयी आहा।
ओम् ह्रीं श्री कालिद गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री कालिद गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

शान्तिनाथ के उग्गतवा जी, उग्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री उग्गतवा गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री उग्गतवा गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

शान्तिनाथ के मुक्तामणि जी, मुक्त करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री मुक्तामणि गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्तामणि गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

शान्तिनाथ के सम्यक्नाथ जी, सम्यक् दें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सम्यक्नाथ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्नाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

शान्तिनाथ के जिनेन्द्रकेवल, जय-जिनेन्द्र आहा।
ओम् ह्लीं श्री जिनेन्द्रकेवल गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्रकेवल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३६॥

पूर्णार्घ्य (मात्रिक सवैया)

शान्तिनाथ के पहले गणधर, ज्ञानी चक्रायुध मुनिराज।
अंतिम जिनेन्द्रकेवल स्वामी, कुल छतीस भजें हम आज॥
विघ्न उपद्रव शान्ति हेतु हम, शान्ति विधान रचाएँ रोज।
अर्घ्य चढ़ाकर करके नमोऽस्तु, करना चाहें आतम खोज॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथस्य चक्रायुध-आदि षट्त्रिंश् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथस्य चक्रायुधादि षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो नमः

जयमाला

(दोहा)

शान्तिनाथ प्रभु के रहे, छत्तीस शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥

वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥१॥
तज सर्वार्थसिद्धि विमान को, हस्तिनागपुर जन्म धरे।
विश्वसेन ऐरादेवी को, देकर उत्सव धन्य करे॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥२॥
जिनमें पहले चक्रायुध थे, अंतिम थे जिनेन्द्रकेवल।
गुरु शिष्यों के दर्शन करके, जग-जीवन होते मंगल॥
अतः भक्त की यही प्रार्थना, मंगल-मंगल जगत करो।
अपने लायक शिष्य बनाकर, जगत-मुक्त भव भगत करो॥३॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥४॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥५॥
स्वामी शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥६॥

(दोहा)

शान्तिनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
चक्रायुध सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री चक्रायुधादि षट्त्रिंशत् गणधर सहित श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य शान्तिप्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

गुरु मार्ग में
पीछे की हवा सम
हमें चलाते

श्री कुन्थुनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जीव-दया के स्तम्भ हैं, कुन्थुप्रभु जिननाथ।
करुणा के अवतार को, झुकें भक्त के माथ॥

(राज, १९-मात्रिक)

भक्ति से हम कर रहे जिन वन्दना।
द्रव्य लाए साथ करने अर्चना॥
आप कुन्थुनाथ प्यारे जिनवरम्।
आपने पाया स्वरूपी निज धरम्॥
आपको जिसने भी ध्याया ध्यान से।
विश्व ने पूजा उसे सम्मान से॥
कष्ट पीड़ा संकटों पर जय करे।
तोड़ कर के कर्मबन्धन क्षय करे॥
हम सफल मानव बनें धर्मात्मा।
आइए मन में यही है प्रार्थना॥
भक्ति से हम ...।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

पाप मिथ्या ने दिए जीवन मरण।
हमको साँची न मिली अब तक शरण॥
नीर के बदले हरो हर पाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

पा दशा प्रतिकूल हम ऊबे नहीं।
ज्ञान रस के कुण्ड में डूबे नहीं॥

चंदन के बदले हरो संताप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कौन क्या पाते दुखी इस राग से।
काँप कर क्यों भागते वैराग्य से॥
पुंज के बदले हरो भव-चाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आत्मा का फूल अब तक ना खिला।
पा लिया सब किन्तु कुछ भी ना मिला॥
पुष्प के बदले हरो रति-नाथ को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चख लिया पकवान हर इक कर्म का।
ना लिया रस आत्म का ना धर्म का॥
नैवेद्य के बदले हरो अभिशाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आँखों के अंधे नयनसुख नाम है।
ऐसे ही मोही जनों का काम है॥
दीप के बदले हरो दुख-रात को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कस्तूरी नाभि में ले मृग भ्रम रहा।
गंध निज की पाने पर में रम रहा॥

गंध के बदले हरो विधि-पाक को।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

है कृपा सबसे बड़ी जिनदेव की।
जो मिले पा के कृपा गुरुदेव की॥
सुफल के बदले पुकारें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

कुछ नहीं लाए चढ़ाने के लिए।
आए अपनी ही सुनाने के लिए॥
त्याग या अनुराग की इच्छा नहीं।
ली कभी चारित्र की दीक्षा नहीं॥
कोई भी आती नहीं सम्यक् कला।
अर्घ्य अर्पण के बिना क्या हो भला॥
इसलिए यह अर्घ्य सौपें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दशमी श्रावण कृष्ण को, सोलह स्वप्न दिखाए।
श्रीकान्ता के गर्भ में, कुन्थुनाथ प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुन्थुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अरिहन्त को, हम तो करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री कुन्थुनाथ के ३५ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

कुन्थुनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

कुन्थुनाथ के शिष्य स्वयंभू, स्वयं सिद्ध आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वयंभू गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभू गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

कुन्थुनाथ के रत्नप्रभा जी, रत्न धनी आहा।
ओम् ह्रीं श्री रत्नप्रभा गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नप्रभा गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

कुन्थुनाथ के अमितनाग जी, अमित करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अमितनाग गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अमितनाग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

कुन्थुनाथ के श्रीसंभव जी, श्री देते आहा।
ओम् ह्वीं श्री श्रीसंभव गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीसंभव गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

कुन्थुनाथ के अमलनाथ जी, अमल करें आहा।
ओम् ह्वीं श्री अमलनाथ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अमलनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

कुन्थुनाथ के शुभकर गणधर, शुभ लाभ दें आहा।
ओम् ह्वीं श्री शुभकर गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री शुभकर गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

कुन्थुनाथ के तत्त्वनाथ जी, तत्त्वार्थी आहा।
ओम् ह्वीं श्री तत्त्वनाथ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

कुन्थुनाथ के रज्यासी जी, राज करें आहा।
ओम् ह्वीं श्री रज्यासी गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री रज्यासी गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

कुन्थुनाथ के शिष्य पुरन्दर, पूर्ण करें आहा।
ओम् ह्वीं श्री पुरन्दर गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री पुरन्दर गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

कुन्थुनाथ के देवदत्त जी, देव पूज्य आहा।
ओम् ह्वीं श्री देवदत्त गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री देवदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

कुन्थुनाथ के वासपदत जी, वास करें आहा।
ओम् ह्वीं श्री वासपदत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री वासपदत गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

कुन्थुनाथ के विश्वरूप जी, विश्व पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री विश्वरूप गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वरूप गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

कुन्थुनाथ के तपस्तेज जी, ताप हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री तपस्तेज गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री तपस्तेज गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

कुन्थुनाथ के प्रतिबोध गणधर, प्रतिबोधक आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रतिबोध गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिबोध गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

कुन्थुनाथ के सिद्धार्थ गणधर, सिद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सिद्धार्थ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

कुन्थुनाथ के संयम गणधर, संयम करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री संयम गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री संयम गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

कुन्थुनाथ के अमलगण गणधर, अमल करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अमलगण गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अमलगण गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

कुन्थुनाथ के देवेन्द्र गणधर, देव-तुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री देवेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री देवेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

कुन्थुनाथ के प्रवरकल गणधर, प्रवर करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रवरकल गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवरकल गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

कुन्थुनाथ के समभूप गणधर, समता दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री समभूप गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री समभूप गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

कुन्थुनाथ के मज्जि गणधर, मद-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मज्जि गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री मज्जि गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

कुन्थुनाथ के कुबेर गणधर, कुबेर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुबेर गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री कुबेर गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

कुन्थुनाथ के नित्तुंग गणधर, नित्य पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री नित्तुंग गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री नित्तुंग गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

कुन्थुनाथ के मिवनंदि जी, मिष्ट करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मिवनंदि गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री मिवनंदि गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

कुन्थुनाथ के निर्मोही गणधर, निर्मोही आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्मोही गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मोही गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

कुन्थुनाथ के शिष्य श्रवण जी, श्रमण पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रवण गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री श्रवण गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

कुन्थुनाथ के समोद्धर गणधर, समवसरण आहा।
ओम् ह्रीं श्री समोद्धर गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री समोद्धर गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

कुन्थुनाथ के अरण्य गणधर, अरण्य ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री अरण्य गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अरण्य गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

कुन्थुनाथ के महेश गणधर, महेश हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री महेश गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री महेश गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

कुन्थुनाथ के पयाकुत गणधर, परमात्म आहा।
ओम् ह्रीं श्री पयाकुत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री पयाकुत गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

कुन्थुनाथ के नरोपम गणधर, निरूपम हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री नरोपम गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री नरोपम गणधराय अर्घ्यं...॥ ३१॥

कुन्थुनाथ के निर्मित गणधर, निर्मूर्ति आहा।
ओम् ह्रीं श्री निर्मित गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मित गणधराय अर्घ्यं...॥ ३२॥

कुन्थुनाथ के अग्निदत्त जी, अग्नि हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अग्निदत्त गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अग्निदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ३३॥

कुन्थुनाथ के उद्धलांग जी, उद्धारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उद्धलांग गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री उद्धलांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३४॥

कुन्थुनाथ के अर्जवजीन जी, आर्जव हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अर्जवजीन गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अर्जवजीन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३५॥

पूर्णार्घ्य

(वसंततिलका)

श्री कुन्थुनाथ प्रभु के पहले स्वयंभू।
हैं अंत में परम अर्जवजीन बंधु॥
पैंतीस शिष्य भजने करते नमोऽस्तु।
ले अर्घ्य आज हम भी करते जयोस्तु॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथस्य स्वयंभूनाथ-आदि पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

<u>जाप्य मंत्र</u>

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथस्य स्वयंभूनाथादि पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

कुन्थुनाथ प्रभु के रहे, पैंतीस शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

साधारण निगोद को तजकर, दुर्लभ तन प्रत्येक धरें।
एकेन्द्री को तजकर मणिसम, दुर्लभ तन त्रस प्राप्त करें॥
त्रस तजकर पंचेन्द्रिय दुर्लभ, पशू नारकी सुर-बनना।
नार नपुंसक भव को तजकर, अति दुर्लभ है नर बनना॥ १॥

जन्म धारना उस भारत में, जहाँ अहिंसा कर्म पले।
देव-शास्त्र-गुरुओं की पूजा, श्रमण संस्कृति धर्म चले॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, बहे त्रिवेणी धरती पर।
ऐसे दुर्लभ दया धर्म को, बता रहे कुन्थु जिनवर॥२॥
तज सर्वार्थसिद्धि विमान को, हस्तिनागपुर अवतारे।
सूर्यराज श्रीदेवी माँ को, दिए पंच उत्सव प्यारे॥

सोलह वय छद्मस्थ बिताकर, बन बैठे केवलज्ञानी।
समवसरण में पैंतीस गणधर, पाकर खिरी दिव्य वाणी॥३॥
जिनमें पहले रहे स्वयंभू, अंतिम अर्जवजीन रहे।
गुरु शिष्य जी धर्म धार के, दाता परम प्रवीण रहे॥
हम सब की बस यही प्रार्थना, दया धर्म हम भी पालें।
सच्चे गुरु के शिष्य बनें फिर, मुक्त बनें गुरु गुण गा लें॥४॥
कामदेव को काय-कान्ति तो, कुछ भी नहीं सुहाई थी।
चक्रेश्वर को कनक-कामिनी, कभी लुभा ना पाई थी॥
तीर्थंकर को कर्मन-कड़ियाँ, कस न सकी चट-चट टूटीं।
त्रय पदधारी कुन्थुनाथ की, कर्म-कालिमा झट छूटी॥५॥
कुन्थु नाम बस कर्म हरे सब, प्रसिद्ध जग में बात यही।
कनक-कामनी तज, कंचन सी, आतम पाते भक्त सही॥
अतः रिझाने तुम को आए, हम पर नाथ रीझ जाओ।
'सुव्रत' तो हो चुके तुम्हारे, तुम 'सुव्रत' के हो जाओ॥६॥

(दोहा)

कुन्थुनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
स्वयंभू सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूनाथादि पंचत्रिंशत् गणधर सहित श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य कुन्थुप्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अन्तरंग बहिरंग की, लक्ष्मी के भगवंत।
परमपूज्य अरनाथ को, नमन रहे जयवंत॥

(शिखरणी) (लय : महावीराष्टक)

हजारों फूलों से, अधिक जिनकी गंध महके।
करोड़ों सूर्यों से, अधिक जिनका तेज चमके॥
अनन्तों जन्मों में, इस तरह हो पुण्य अर्जन।
तभी मिल पाएंगे, अरह प्रभु के देव-दर्शन॥
किया होगा कोई, गत समय में पुण्य हमने।
इसी से पाई है, मनुज भव पर्याय हमने॥
बने हैं जैनी तो, अरह जिन को वन्दन करें।
झुका के माथा भी, विनय करके अर्चन करें॥
हमारी आत्मा में, प्रकट परमात्मा तुम करो।
नहीं तो श्रद्धा के, निलय मन को पावन करो॥
हमारी नैया को, जिनवर तुम्हीं पार कर दो।
इसी से भक्ति के, वर सुमन स्वीकार कर लो॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्धगीता)

लिए श्रद्धा सरस जल हम, विनय से अब चढ़ाएंगे।
यही विश्वास है हमको, निजातम शुद्ध पाएंगे॥
जरा-सा नीर तो छिड़को, तुरत हम जाग जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

रसायन मंत्र मणियों में, न शान्ति है तो क्यों जाएँ।
तभी चंदन चढ़ाके हम, प्रभु सम शान्ति झलकाएँ॥
जरा समता जिनामृत दो, निराकुल रूप पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

बड़े दुर्लभ मगर आसाँ, सहज नाते हमारे हैं।
हृदय में तुम हमारे हो, चरण में हम तुम्हारे हैं॥
चढ़ाकर पुंज हम तुमको, तुम्हीं में डूब जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

हुई सुर पुष्प वृष्टि जो, न उल्टे हों गिरे नीचे।
विकारी भाव हरने को, तुम्हारे रूप पर रीझे॥
सुकोमल पुष्प सा आतम, चढ़ा हम पुष्प पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चखा हर स्वाद दुनियाँ का, मगर ना तृप्त हो पाए।
तेरी इक बूँद के प्यासे, तभी जिन तीर्थ पर आए॥
बहा दो ज्ञान की धारा, निजी नैवेद्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

सदा तुमको निहारें हम, हमें क्यों तुम निहारो ना।
अँधेरे में फँसे हमको, उजाला क्यों दिखाओ ना॥
तुम्हारी आरती करके, तुम्हीं सम जगमगाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

पका दो इस तरह हमको, घड़ा कोई पके जैसे।
करम की मार सब सह लें, कि चमके शुद्ध सोने से॥
चढ़ाकर धूप हम तुमको, करम-काजल जलाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

नहीं कुछ भी दिया तुमने, मगर सब कुछ तुम्हारा है।
मिलन तुमसे हमारा ही, मिलन हमसे हमारा है॥
मिटाने दूरियाँ सारी, चरण में फल चढ़ाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जमाने में उलझकर हम, तुम्हारा नाम खो बैठे।
सुलझने की दिलाशा में, भुलाकर आत्म रो बैठे॥
भुला दो नाथ भूलें तो, चढ़ा हम अर्घ्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, तजकर स्वर्ग जयंत।
मित्रसेना के गर्भ में, वसे अरह भगवंत॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
संत अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटक कूट॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री अरनाथ के ३० गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

अरहनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

अरहनाथ के पहले गणधर, कुन्थ रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्री कुन्थ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

अरहनाथ के जलोद गणधर, जल्द भजो आहा।
ओम् ह्रीं श्री जलोद गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री जलोद गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

अरहनाथ के दुर्लभ गणधर, दुर्लभ हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री दुर्लभ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री दुर्लभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

अरहनाथ के शिष्य मतिच जी, मतिदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री मतिच गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री मतिच गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

अरहनाथ के तानचेत जी, तारक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री तानचेत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री तानचेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

अरहनाथ के योगेन्द्र गणधर, योग मंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री योगेन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री योगेन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

अरहनाथ के लब्धिकांति जी, लाभ करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री लब्धिकांति गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री लब्धिकांति गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

अरहनाथ के आगोचर जी, आरोही आहा।
ओम् ह्रीं श्री आगोचर गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री आगोचर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

अरहनाथ के वृषकेत गणधर, विष-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री वृषकेत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री वृषकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

अरहनाथ के नवरंग गणधर, नवाचार आहा।
ओम् ह्रीं श्री नवरंग गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री नवरंग गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

अरहनाथ के शिष्य संभ जी, शंखनाद आहा।
ओम् ह्रीं श्री संभ गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री संभ गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

अरहनाथ के परोपदेशी, परोपकार आहा।
ओम् ह्वीं श्री परोपदेशी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परोपदेशी गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

अरहनाथ के करोत गणधर, कष्ट हरें आहा।
ओम् ह्वीं श्री करोत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री करोत गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

अरहनाथ के जिनदेव गणधर, जयदाता आहा।
ओम् ह्वीं श्री जिनदेव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनदेव गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

अरहनाथ के अर्हंनाथ जी, अतिवीरा आहा।
ओम् ह्वीं श्री अर्हंनाथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंनाथ गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

अरहनाथ के तपनी गणधर, तपश्वी हैं आहा।
ओम् ह्वीं श्री तपनी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री तपनी गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

अरहनाथ के मुक्तिदा जी, मुक्ति दें आहा।
ओम् ह्वीं श्री मुक्तिदा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्तिदा गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

अरहनाथ के शिवगंधर्व जी, शिव सुख दें आहा।
ओम् ह्वीं श्री शिवगंधर्व गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शिवगंधर्व गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

अरहनाथ के परमोजत जी, परम ओज आहा।
ओम् ह्वीं श्री परमोजत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री परमोजत गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

अरहनाथ के शिष्य चलन जी, चाल-चलन आहा।
ओम् ह्रीं श्री चलन गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री चलन गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

अरहनाथ के चिद्रूप गणधर, चिद्रूपी आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिद्रूप गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री चिद्रूप गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

अरहनाथ के हितकर गणधर, हितकारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री हितकर गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री हितकर गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

अरहनाथ के अत्रुद्ध गणधर, आर्त्त हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अत्रुद्ध गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री अत्रुद्ध गणधराय अर्घ्यं...॥२३॥

अरहनाथ के हितकर गणधर, हितकर हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री हितकर गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री हितकर गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

अरहनाथ के स्थिरभूत जी, स्थिर करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्थिरभूत गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री स्थिरभूत गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

अरहनाथ के शिष्य रक्तगण, रक्त नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री रक्तगण गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री रक्तगण गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

अरहनाथ के प्रतंग गणधर, प्रतंग नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रतंग गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतंग गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

अरहनाथ के तिलोक गणधर, तिलोक पूज्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री तिलोक गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री तिलोक गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

अरहनाथ के भूयंग गणधर, भू-पालक आहा।
ओम् ह्रीं श्री भूयंग गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री भूयंग गणधराय अर्घ्यं...॥ २९॥

अरहनाथ के शुद्धांग गणधर, शुद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री शुद्धांग गणधराय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धांग गणधराय अर्घ्यं...॥ ३०॥

पूर्णार्घ्य

(शुद्ध गीता)

अरहप्रभु के प्रथम गणधर, रहे हैं कुंथ ज्ञानी जी।
तथा शुद्धांग अंतिम हैं, सभी हैं तीस स्वामी जी॥
सभी गणधर गुरु भजके, सकल ब्रह्माण्ड गूँजा है।
अतः यह अर्घ्य ले हमने, विनय भक्ति से पूजा है॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथस्य कुन्थ-आदि त्रिंशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

<u>जाप्य मंत्र</u>

ॐ ह्रीं श्री अरनाथस्य कुन्थादि त्रिंशत् गणधरेभ्यो नमः

जयमाला

(दोहा)

अरहनाथ प्रभु के रहे, तीस ये शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरनाथ जिनेश्वर, आप सर्वगुण सुन्दर हैं।
पर भावों में अतः फसे ना, बन गए पूर्ण दिगम्बर हैं॥
षट्-खण्डों के रहे विजेता, फिर भी नित्य निरम्बर हैं।
इसीलिए तो चरण शरण में, झुकते धरती अम्बर हैं॥१॥
तज सर्वार्थसिद्धि विमान को, हस्तिनागपुर लिए जनम।
राज सुदर्शन मित्रा माँ को, खुशियाँ देकर दिए धरम॥
घाति नशाकर बने केवली, शिष्य तीस गणधर शोभें।
प्रथम कुन्थ अंतिम शुद्धांग जी, गुरु शिष्य जोड़ी मोहे॥२॥
गुरु शिष्य की परम्परा ही, धर्म परम्पर चला रही।
परम्परा कर्मों की तोड़ें, नाथ करो बस भला यही॥
हम भक्तों की यही प्रार्थना, हमको शिष्य बना लेना।
गणधर ज्ञानी शिष्यों जैसे, आतम रूप सजा देना॥३॥
किया धर्म-पुरुषार्थ तभी तो, तीन-तीन पद अपनाये।
किया काम-पुरुषार्थ तभी तो, पुत्र रत्न निज घर आए॥
किया अर्थ-पुरुषार्थ तभी तो, चक्र रत्न खुद प्रकटाए।
किया मोक्ष-पुरुषार्थ तभी तो, सिद्धचक्र अर प्रभु पाए॥४॥
कामदेव का जन्म हुआ पर, काम-देव ना जन्म सका।
चक्री के उस चक्ररत्न का, जिन पर चलकर चल न सका॥
तीर्थंकर ने कर्म-चक्र की, चुन-चुन कर चटनी बाँटी।
विधि चोटी पर चोट लगाकर, चढ़े मोक्ष की प्रभु घाटी॥५॥
किया नमोऽस्तु यदि जिनवर को, बिन मन से बिन समझे में।
उतना फल तो अन्य जगह पर, मिल न सकेगा जीवन में॥

फिर 'सुव्रत' ने त्रियोग पूर्वक, किए नमोऽस्तु चरण भजे।
दिवस दशहरा रात दिवाली, फिर क्या ना हो मजे-मजे॥६॥

(दोहा)

अरहनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
कुन्थ शिष्य सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थादि त्रिंशत् गणधर सहित श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य अरह प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

कपूर सम
बिना राख बिखरा
सिद्धों का तन

श्री मल्लिनाथ पूजन

स्थापना

(दोहा)

होकर जो आत्मस्थ भी, रहें चराचर व्याप्त।
दृष्टा हर व्यापार के, फिर भी निःसंग आप्त॥
ऐसे मल्लिनाथ प्रभु, दूजे बाल यतीश।
पुराण पुरुष परमेश को, सविनय टेकें शीश॥

(लय : जीवन है पानी की बूँद...)

मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]
द्रव्यों की थाली (हाँ-हाँ)[२], हम आज सजाए रे॥
नाथ! आप सब देखो पर, कौन आपको देख सके।
नाथ! आप सब जानो पर, कौन आपको जान सके॥
अतः आपकी खुद महिमा, हम भक्तों से तो न हुई।
सो दर्शन पूजा वाली, अन्तस्-भाव वर्गणा हुई॥
काल अनन्त व्यर्थ खोया, पर-तत्परता लौ लागी।
किन्तु आपके दर्शन से वीतरागता सी जागी॥
पूजन में आओ! (हाँ-हाँ)[२], हम भक्त बुलाएँ रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इतने जन्म लिए हमने, पर सम्यक् न जन्म सके।
इतने मरण किए हमने, लेकिन सम्यक् मर न सके॥
जन्म-मरण प्रभु के जैसे, करके शुद्धातम पाएँ।
अतः भक्ति श्रद्धा जल ले, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जीना अरु मरना, (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं...।

खस चंदन से अतिशीतल, कुछ भी मिल ना पाएंगे।
देह ताप को किन्तु वही, और अधिक धधकाएंगे॥
अतः आप सम त्याग इन्हें, समता निज रस को पाएँ।
अतः समर्पित चंदन कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जलना भव तपना (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

सकल विश्व हम जान रहे, पर निज से अनजान रहे।
अक्षयपुरवासी होकर, नश्वर अपना मान रहे॥
हमें भेद-विज्ञान मिले, सिद्ध क्षेत्र प्रभु सा पाएँ।
अतः समर्पित अक्षत कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
तृष्णा भव मूर्च्छा (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कैसे आप विरागी हो, कैसे पर के त्यागी हो।
बनकर बालब्रह्मचारी, मुक्तिवधू के रागी हो॥
कालजयी, हे! कामजयी, तुम पर हम भी ललचाएँ।
अतः समर्पित पुष्प करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
पर की आसक्ति (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर-रस सरस अरस हों पर, आतम सदा रसीला हो।
जले गले ना सड़े कभी, रात्रि त्याग ना इसका हो॥
रस त्यागी निज के रसिया, कैसे तुमको हम पाएँ।
अतः भेंट नैवेद्य करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

काया भव व्याधि (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

नाथ! आपकी निज ज्योति, हम भक्तों से ना होती।
सूरज चंदा की ज्योति, दीप ज्योति से क्या? होती॥
केवल तुम्हें निरख कर हम, अपने नयन सफल पाएँ।
अतः आरती दीप जला, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
मोही भव गलियाँ (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अच्छा बुरा करो कुछ भी, कुछ तो लोग कहेंगे ही।
त्याग तपस्या अतः करो, लोग विरोध करेंगे ही॥
करो साधना चुपके से, शोर आप खुद हो जाएँ।
अतः सुगंधी खेकर हम, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
कर्मों के शत्रु (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

सुख-दुख की परवाह न की,निज-कर्त्तव्य निभाए तुम।
लाख आँधियों संकट में, पथ से चिग ना पाए तुम॥
उपादान को निमित्त से, तुम सम हम भी प्रकटाएँ।
अतः भेट फल निजफल को, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
सुख-दुख भव पीड़ा (हाँ-हाँ)², हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।²
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

भक्ति नमोऽस्तु पूजन में, झुकना धर्म सिखाता है।
झुका-झुकाकर भक्तों को, स्वयं उच्च कहलाता है॥

जो झुकते वे उठते हैं, बिना झुके क्या उठ पाएँ।
अतः मोक्ष तक उठने को, भक्त अर्घ्य ले झुक जाएँ॥
दूरी-मजबूरी (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

चैत्र शुक्ल एकम् पुजी, जब तज स्वर्ग विमान।
प्रभावती के गर्भ में, वसे मल्लि भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनन्द।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नन्द॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाँचें फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री मल्लिनाथ के २८ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

मल्लिनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

मल्लिनाथ के पहले गणधर, विशाख हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री विशाख गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री विशाख गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

मल्लिनाथ के प्रबोध गणधर, प्रबोध दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रबोध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रबोध गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

मल्लिनाथ के नंदन गणधर, नंद भरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री नंदन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नंदन गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

मल्लिनाथ के अधंक गणधर, अंध नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अधंक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अधंक गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

मल्लिनाथ के करनातिच जी, करें न दुख आहा।
ओम् ह्रीं श्री करनातिच गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री करनातिच गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

मल्लिनाथ के चित्रकुवार जी, चित्रकमल आहा।
ओम् ह्रीं श्री चित्रकुवार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री चित्रकुवार गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

मल्लिनाथ के सद्भट गणधर, सद्भावी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सद्भट गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री सद्भट गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥
मल्लिनाथ के शिष्य नवत जी, नवाचार आहा।
ओम् ह्रीं श्री नवत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नवत गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥
मल्लिनाथ के रत्नसार जी, रत्नसार आहा।
ओम् ह्रीं श्री रत्नसार गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नसार गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥
मल्लिनाथ के प्रमत्त गणधर, प्रमत्त ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रमत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री प्रमत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥
मल्लिनाथ के मानकेत जी, मानक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री मानकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मानकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥
मल्लिनाथ के उत्पात गणधर, उत्पात न आहा।
ओम् ह्रीं श्री उत्पात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री उत्पात गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥
मल्लिनाथ के भुजबल गणधर, भुक्त नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री भुजबल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री भुजबल गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥
मल्लिनाथ के युद्धकेत जी, युद्ध हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री युद्धकेत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री युद्धकेत गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

मल्लिनाथ के मघवान गणधर, मघातुल्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री मघवान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मघवान गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

मल्लिनाथ के मोही गणधर, मोही ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री मोही गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मोही गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

मल्लिनाथ के शिवसंग गणधर, शिवसंगी आहा।
ओम् ह्रीं श्री शिवसंग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शिवसंग गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

मल्लिनाथ के बुभुक्षा गणधर, बुराई हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री बुभुक्षा गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री बुभुक्षा गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

मल्लिनाथ के भयदूर गणधर, भय न करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भयदूर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भयदूर गणधराय अर्घ्यं...॥ १९॥

मल्लिनाथ के शिष्य भोगता, भोगी ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री भोगता गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भोगता गणधराय अर्घ्यं...॥ २०॥

मल्लिनाथ के शिष्य मनोरथ, मनवांछित आहा।
ओम् ह्रीं श्री मनोरथ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मनोरथ गणधराय अर्घ्यं...॥ २१॥

मल्लिनाथ के शिष्य अखिल जी, अखिल ज्योति आहा।
ओम् ह्रीं श्री अखिल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अखिल गणधराय अर्घ्यं...॥ २२॥

मल्लिनाथ के निष्कषाय जी, निष्कषाय आहा।
ओम् ह्रीं श्री निष्कषाय गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निष्कषाय गणधराय अर्घ्यं...॥ २३॥

मल्लिनाथ के शिष्य केत जी, केतन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री केत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केत गणधराय अर्घ्यं...॥ २४॥

मल्लिनाथ के सन्मुख गणधर, संस्कारी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सन्मुख गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मुख गणधराय अर्घ्यं...॥ २५॥

मल्लिनाथ के शिष्य महार्णव, महार्णव आहा।
ओम् ह्रीं श्री महार्णव गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महार्णव गणधराय अर्घ्यं...॥ २६॥

मल्लिनाथ के अहमिन्द्र गणधर, अहम हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अहमिन्द्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अहमिन्द्र गणधराय अर्घ्यं...॥ २७॥

मल्लिनाथ के उच्यत गणधर, उच्च पदी आहा।
ओम् ह्रीं श्री उच्यत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री उच्यत गणधराय अर्घ्यं...॥ २८॥

पूर्णार्घ्य

(हरीगीतिक)

जो मल्लिप्रभु के शिष्य पहले, हैं विशाख गणेश जी।
उच्यत रहे अंतिम सभी हैं, पूज्य अट्ठाईस जी॥
कल्याण सुव्रत कर सकें, आशीष ऐसा दीजिए।
पूर्णार्घ्य ले करते नमोऽस्तु, पार हमको कीजिए॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य विशाख-आदि अष्टाविंशति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य विशाखाादि अष्टाविंशति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

मल्लिनाथ प्रभु के रहे, अट्ठाईश शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

ज्यों विशाल-तन गज-झुंडों पर, एक शेर बस कर ले जय।
जैसे घोर अँधेरे को भी, लघु दीपक ही कर दे क्षय॥
नाग-पाश ज्यों मोर-कूक से, ढीले पड़कर हुए विलय।
मल्लिप्रभु त्यों मोह-मल्ल की, शल्य हरें सो बोलो जय॥१॥
अपराजित विमान को तजके, मिथिलापुर में जन्म लिए।
कुम्भराज व प्रभावती को, दे कल्याण धन्य किए॥
बस छह दिन छद्मस्थ बिताकर, अशोक तरु-तल थित होकर।
बेला कर, हर घाति-कर्म को, बने केवली तीर्थंकर॥२॥
अट्ठाईस गणधर से शोभित, समवसरण में दिशा दिए।
पहले विशाख अंतिम उच्यत, शिष्यों को सुख तत्त्व दिए॥
गुरु और शिष्यों ने भू पर, धर्म ध्वजा जो फहराई।
उसी छाँव में आज तलक तो, दुनियाँ झूमी सुख पाई॥३॥
इसीलिए तो हम भक्तों ने, गुरु शिष्यों को ध्याया है।
शिष्यों जैसे शिष्य बनें हम, यही भाव मन आया है॥
मल्लिप्रभु ने देह रूप इस, मगरमच्छ को तज करके।
ध्यान नाव से भवसागर को, तैरा मोक्ष प्राप्त करके॥४॥

धर्मोदय के तप-मधुवन के, आप रहे तोता-मिट्ठू।
काव्य कला के नन्दनवन के, आप रहे कोकिल किट्टू॥
चरित-मल्लिका के तुम भँवरे, पुण्य कमल सरवर हंसा।
तुम्हें पूजकर निज-भूषण हो, हम भक्तों की यह मंसा॥५॥
स्वर्ग मोक्ष सुख के इच्छुक जन, सब वास्तव में दुखी रहें।
मल्लिप्रभु बिन ज्ञानी ध्यानी, कौन तपस्वी सुखी रहें॥
किन्तु भक्त जो मल्लि प्रभु के, वचन सुनें चारित्र धरें।
स्वर्ग मोक्ष यूँ ही पाते वे, जीवन आत्म पवित्र करें॥६॥
अतः आपसे एक प्रार्थना, हम भक्तों की है स्वामी।
सोकर उठें आँख जब खोलें, तो दर्शन देना स्वामी॥
सब मंगल में पहला मंगल, जिन-दर्शन स्वीकारा है।
सर्व सिद्धि 'सुव्रत' की होगी, यदि सान्निध्य तुम्हारा है॥७॥

(दोहा)

मल्लिनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
विशाख सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री विशाखादि अष्टाविंशति गणधर सहित श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य मल्लि प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुए, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन !, हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आई टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिए, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिए।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्!, अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं ...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाए।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चंदन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ...।

कहीं-कहीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाए।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतङ्क हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुए।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुए॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को, प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण दूजा कृष्ण को, तज प्राणत सुर इन्द्र।
सोमा माँ के गर्भ में, आए सुव्रत नंद॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वैशाख कृष्ण दशमी तिथि, जन्मे सुव्रतनाथ।
सुमित्रनृप के आँगने, सुर नर नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दशमी वदि वैशाख को, परिग्रह का गृह छोड़।
मुनिसुव्रत तप से सजे, सो नमोऽस्तु कर जोड़॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवी कृष्ण वैशाख को, हर ली संकट रात।
भज चाहें कैवल्य हम, जय मुनिसुव्रत नाथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फागुन द्वादश कृष्ण को, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु सुव्रतनाथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री मुनिसुव्रतनाथ के १८ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

मुनिसुव्रत तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

सुव्रतप्रभु के मल्लि गणधर, प्रथम शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री मल्लि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लि गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

सुव्रतप्रभु के जगद्वंद्य जी, जगद्वंद्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री जगद्वंद्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जगद्वंद्य गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

सुव्रतप्रभु के प्रभेस गणधर, प्रभापुंज आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रभेस गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभेस गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

सुव्रतप्रभु के श्रुक्रोध गणधर, शुक्र नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रुक्रोध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुक्रोध गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

सुव्रतप्रभु के अनन्तगति जी, अनन्त करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री अनन्तगति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री अनन्तगति गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

सुव्रतप्रभु के सालक गणधर, शल्य हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री सालक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री सालक गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

सुव्रतप्रभु के द्रौपद गणधर, दर्प हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री द्रौपद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री द्रौपद गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

सुव्रतप्रभु के बुध गणधर जी, बोधक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री बुध गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री बुध गणधर गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

सुव्रतप्रभु के तथांगिना जी, तथास्तु हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री तथांगिना गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री तथांगिना गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

सुव्रतप्रभु के शिष्य पोद जी, पोषक हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री पोद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री पोद गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

सुव्रतप्रभु के रविषेण जी, रव-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्लीं श्री रविषेण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री रविषेण गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

सुव्रतप्रभु के कुलकेशे जी, कुलकर सम आहा।
ओम् ह्लीं श्री कुलकेशे गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्लीं श्री कुलकेशे गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

सुव्रतप्रभु के शिष्य अमर जी, अमर-तत्त्व आहा।
ओम् ह्रीं श्री अमर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अमर गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

सुव्रतप्रभु के निष्पात गणधर, निष्पक्षी आहा।
ओम् ह्रीं श्री निष्पात गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निष्पात गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

सुव्रतप्रभु के मतिश्रुति जी, मति शोधक आहा।
ओम् ह्रीं श्री मतिश्रुति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मतिश्रुति गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

सुव्रतप्रभु के शिष्य द्वतीकर, द्योतक हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री द्वतीकर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री द्वतीकर गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

सुव्रतप्रभु के धारण गणधर, धारो तो आहा।
ओम् ह्रीं श्री धारण गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री धारण गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

सुव्रतप्रभु के सूरज गणधर, सूर्य-गुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री सूरज गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सूरज गणधराय अर्घ्यं...॥ १८॥

पूर्णार्घ्य

(सखी)

प्रभु मुनीसुव्रत के पहले, हैं मल्लि अंत में सूरज।
कुल शिष्य अठारह भज के, हे! आतम निज गुण से सज॥
विद्या के 'सुव्रत' चाहें, मुनिसुव्रत प्रभु सम स्वामी।
सो अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, सुख शान्ति मिले आगामी॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य मल्लि-आदि अष्टादश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य मल्लि-आदि अष्टादश गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

मुनिसुव्रत प्रभु के रहे, अठारह शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनको रोगों ने घेरा हो, संकट डालें डेरा हो।
जिनको राह नहीं दिखती हो, चारों ओर अँधेरा हो॥
दुख कष्टों से दुखी जनों को, कहीं सहारा मिले नहीं।
तो मत होना दुखी दरिद्री, मुनिसुव्रत प्रभु भजो सही॥१॥
रोग मिटेंगे स्वास्थ्य मिलेंगे, संकट भी हट जाएंगे।
राह मिलेगी लक्ष्य मिलेगा, तत्त्व प्रकट हो जाएंगे॥
प्राणत स्वर्ग त्यागकर स्वामी, जैसे कुशाग्रपुर आए।
सुमित्र राजा सोमा रानी, खुशी हुए जग हर्षाये॥२॥
समवसरण में हुए सुशोभित, शिष्य अठारह आ बैठे।
दिव्यध्वनि सुन आत्मध्यान धुन, चरणों में माथा टेके॥
पहले मल्लि ज्ञानी गणधर, अंतिम सूरज शिष्य रहे।
गुरु शिष्य की छटा निराली, हम सबको तो इष्ट रहे॥३॥
गुरु शिष्य के सम्बन्धों ने, हर सम्बन्ध सँभाले हैं।
श्रेष्ठ शिष्य बनने को हम भी, सुव्रत हुए हवाले हैं॥
नाथ कृपा इतनी बस करना, हमको चरण शरण देना।
राम लखन रामायण जैसे, संस्कार पावन देना॥४॥

सो रावण सम शनिश्चरों की, लंका हम भी करें विजय।
सीता सी आतम को पा के, मोक्षमहल का खुले निलय॥
फिर संकट उपसर्ग न होंगे, करे प्रजा त्यौहार सदा।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, छूटे न गुरु छाँव कदा॥५॥

(दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
मल्लि शिष्य सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लि-आदि अष्टादश गणधर सहित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य मुनिसुव्रत के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आस्था व बोध
संयम की कृपा से
मंजिल पाते

श्री नमिनाथ पूजन

स्थापना

(दोहा)

मंगलमय नमिनाथ हैं, करें सर्व उपकार।
आत्मज्ञान रस लीन हैं, भव-सागर के पार॥
जिनके चरण सरोज में, विनम्र चारों धाम।
तारण-तरण जहाज को, बारम्बार प्रणाम॥

(शंभु)

हे परम पूज्य नमिनाथ प्रभो! हे परमपूज्य जगनाथ प्रभो!
प्रभु लोक शिखर के तुम वासी, फिर भी घट-घट में वास करो॥
दुनियाँ के बन्धन टूट पड़े, जब नाम ध्यान में आता है।
दर्शन पूजन जप तप करके, हर आत्म बन्ध खुल जाता है॥
जब चरण-शरण तेरी हो तो, भव भोग शरीर रुचें कैसे।
हर पुण्य लगे सार्थक लेकिन, हम रहें आप बिन अब कैसे॥
इसलिए रचाई जिन-पूजन, बस अपनी पूर्ण मिटे दूरी।
नत माथ नमोऽस्तु करते हम, हो मनोकामना झट पूरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सब पूज रहे प्रभु के चरणा, जिनसे मिलता निज रूप घना।
वह आतम का श्रृंगार करें, वह शीघ्र हमें भव पार करें॥
अब जन्म मृत्यु का दुख हरने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, जल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

विपरीत समय में डर न उन्हें, जिन पर करुणा प्रभु बरसाते।

कर चारु चन्द्र सम चिन्तन वो, चैतन्य चिदातम निज ध्याते॥
कारुण्य धार वह पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, शीत् स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

आशीष आपका सब चाहें, जो हर लेता संकट आहें।
चित्-पिण्ड अखण्ड प्रदान करें, दें मोक्षमहल शाश्वत राहें॥
आशीष हाथ तेरा पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुंज स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अनकूल रहें प्रतिकूल रहें, यों रहें खुशी ज्यों फूल रहें।
सम्मान मिले अपमान मिले, बस प्रभु चरणों की धूल मिले॥
वह चरण धूल प्रभु की पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुष्प स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

इन नयन कटोरों में केवल, पकवान वसे भगवान् नहीं।
भगवान् बिना निजज्ञान नहीं, निजज्ञान बिना कल्याण नहीं॥
भगवान् वसो इन नयनों में, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, चरु स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

इस पाप अँधेरे के कारण, निज आत्मज्योति आच्छादित है।
जो करे आरती दीप जला, वह पाता ज्ञान प्रकाशित है॥
वह आत्म ज्योति प्रकटाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, दीप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

निज–निधियों पर शिव–गलियों पर, अत्यन्त ठोस है कर्म शिला।
पर धूप–कुदाल लिया जिसने, निज–वैभव उसको शीघ्र मिला॥
वह कर्म शिला चटकाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, धूप स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भगवान् यही वरदान मिले, प्रभु शीघ्र हमें तुम अपना लो।
जो मोक्षसिंधु तक फैली है, उस जिन–गंगा में नहला लो॥
जिन से निज के प्रक्षालन को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, फल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम अर्घ्य चढ़ाएँ गुण गाएँ, हम करें नमोऽस्तु जिन–सेवा।
क्या? इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥
निज–मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आए प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री नमिनाथ के १७ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

नमिनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

नमिनाथ के शिष्य सोम जी, सौम्य भाव आहा।
ओम् ह्रीं श्री सोम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सोम गणधराय अर्घ्यं...॥१॥

नमिनाथ के जम्बुक्ष गणधर, जम-हर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री जम्बुक्ष गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बुक्ष गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

नमिनाथ के केवली गणधर, केवली हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री केवली गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री केवली गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

नमिनाथ के श्रुतकेवली जी, श्रुत के धन आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रुतकेवली गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री श्रुतकेवली गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥
नमिनाथ के विष्णु गणधर, विष-शोधक आहा।
ओम् ह्रीं श्री विष्णु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णु गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥
नमिनाथ के शिष्य गजानन, गजरथ दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री गजानन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री गजानन गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥
नमिनाथ के आरोधक जी, आरोहक आहा।
ओम् ह्रीं श्री आरोधक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री आरोधक गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥
नमिनाथ के जगतपती जी, जगतपती आहा।
ओम् ह्रीं श्री जगतपती गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जगतपती गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥
नमिनाथ के चिन्तागति जी, चिंतामणि आहा।
ओम् ह्रीं श्री चिन्तागति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चिन्तागति गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥
नमिनाथ के अनेन गणधर, अन्य नहीं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनेन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अनेन गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥
नमिनाथ के नरलोक गणधर, नर-भूषण आहा।
ओम् ह्रीं श्री नरलोक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री नरलोक गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

नमिनाथ के श्रेणी गणधर, श्रेणी सुख आहा।
ओम् ह्रीं श्री श्रेणी गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेणी गणधराय अर्घ्यं...॥ १२॥

नमिनाथ के मुक्तांग गणधर, मुक्त करें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मुक्तांग गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तांग गणधराय अर्घ्यं...॥ १३॥

नमिनाथ के अनुभूत गणधर, अनुभव दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अनुभूत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री अनुभूत गणधराय अर्घ्यं...॥ १४॥

नमिनाथ के चारुषन जी, चारुचंद्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री चारुषन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री चारुषन गणधराय अर्घ्यं...॥ १५॥

नमिनाथ के ऋजम्बू गणधर, ऋजु-धर्मा आहा।
ओम् ह्रीं श्री ऋजम्बू गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री ऋजम्बू गणधराय अर्घ्यं...॥ १६॥

नमिनाथ के जरतु गणधर, जरा हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री जरतु गणधराय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्री जरतु गणधराय अर्घ्यं...॥ १७॥

पूर्णार्घ्य

(विष्णु)

नमिनाथ के शिष्य सोम जी, पहले गणधर हैं।
अंतिम जरतु रहें सभी मिल, सत्रह गणधर हैं॥
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, हमको शिक्षा दो।
आतम 'विद्या' पाने स्वामी, 'सुव्रत' दीक्षा दो॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथस्य सोम-आदि सप्तदश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

<u>जाप्य मंत्र</u>

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथस्य सोमादि सप्तदश गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

नमिनाथ प्रभु के रहे, सत्रह शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहे गुण, रह न सके संसारी वो॥१॥
अपराजित विमान को तजकर, मिथिला नगरी जन्म लिए।
विजय राज वप्रा माता को, देकर उत्सव धन्य किए॥
जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥२॥
सत्रह गणधर की संसद में, दिव्यध्वनि दे धर्म कहे।
प्रथम सोम अंतिम जरतु जी, ज्ञानी गणधर श्रेष्ठ रहे॥
गुरु शिष्य का ये गठबन्धन, भक्तों के बन्धन काटें।
मुक्त करें भव के दुख वन से, खुशियों की माला बाँटें॥३॥
इसीलिए तो हम भक्तों ने, पूजा है गुरु शिष्यों को।
आप परम गुरु बनकर तारो, भक्तों को निज शिष्यों को॥
सो हम भी अपने गुरुवर के, संग मोक्ष में घूमेंगे।
बनकर शिष्य पूज्य गुरुओं को, भाव भक्ति से पूजेंगे॥४॥

लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥५॥

(दोहा)

नमिनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
सोम शिष्य सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य नमि प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

हीरा हीरा है
काँच काँच है किन्तु
ज्ञानी के लिए

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

(दोहा)

निज निर्ग्रन्थ निवास में, जो निरखें निजधाम।
ऐसे नेमिजिनेश को, पूजें करें प्रणाम॥

(लय : माता तू दया करके...)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥
हे! नेमिनाथ जिनवर, चैतन्य विरामी हो।
रह के कण-कण में भी, प्रभु अंतर्यामी हो॥
तुम जीव दया करने, त्यागे अपनी खुशियाँ।
हम भले उजड़ जाएँ, पर सुखी रहे दुनियाँ॥
फिर राज-भोग छोड़े, राजुल भी ना भायी।
तो चेतन की खुशबू, झट मुक्ति वधू लायी॥
हे! दयामूर्ति हम पर, प्रभु एक दया कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, मन-चिदानन्द भर दो॥
श्रद्धा की केशरिया...।

(दोहा)

भक्ति सुमन ये भेंटकर, नाँच उठे मन मोर।
हृदय वसो तो हम चलें, मोक्षमहल की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अपनों ने हि जन्म दिया, अपनों ने हि मार दिया।
फिर भी अपनों से क्यों, हमने तो प्यार किया॥

अपनों का अपनापन, जल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अपनों ने हि ईर्ष्या से, अपनों को जला दिए।
फिर भी ना राख हुए, कितने भव गवाँ दिए॥
अपनों की यह ईर्ष्या, चंदन से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अपनों ने हि घाव दिए, तो आँसू भी झलके।
हम उन्हें मित्र मानें, जो साथी नहिं पल के॥
अपनों की ये पीड़ा, अक्षत से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपनों ने जो जाल रचे, उनमें अपने ही फँसे।
काँटों से बच निकले, पर फूलों में उलझे॥
अपनों की उलझ-सुलझ, पुष्पों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अपनों की तलाश में हम, नित भूख-प्यास सहते।
हम जिनको अमृत दें, वे हमें जहर देते॥

अपनों के विष-अमृत, नैवेद्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अपनों ने ही भटका के, दर-दर की ठोकर दीं।
हम रहें अँधेरे में, अपना सब खोकर भी॥
अपनों की यह भटकन, दीपों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अपनों ने हि धोखे से, अपना सब कुछ छीना।
जीने की आश न थी, फिर भी तो पड़ा जीना॥
अपनों के ये धोखे, प्रभु धूप से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अपनों की मृग-तृष्णा, सपनों को दिखाकर के।
हमको लूटे तो हम, भागे मुँह छिपाकर के॥
अपनों के ये सपने, फल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अपनों ने हि साथ दिया, जब सुख से दिन गुजरे।
सब छोड़ गए हम को, जब भाग्य कमल उजड़े॥

फिर भी अपनों का यह, हम राग न छोड़ सके।
प्रभु सामने हैं पर हम नाता न जोड़ सके॥
प्रभु के रंग में हम भी, अब रंगने को आए।
जो है शाश्वत अपना, वह संग पाने आए॥
अपनों की यह भ्रमणा, प्रभु अर्घ्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
जब हुआ गर्भ कल्याणक था, तब रत्न-दृश्य मनमोहक था।[२]
फिर शौर्यपुरी में आन पधारे नेमि-जिससे दुनियाँ हर्षानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

(दोहा)

कार्तिक षष्ठी शुक्ल में, शिवदेवी के गर्भ।
नेमिप्रभु जी आ वसे, तजकर जयन्त स्वर्ग॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु जन्म लिए तो सुर पहुँचे, नृप समुद्रविजय के घर नाँचे।[२]
अभिषेक मेरु पै देव करें वरदानी, प्रभु पाण्डुकशिला विरामी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बन्धन।[२]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु ध्यान लगाकर जब बैठे, तब घातिकर्म बन्धन टूटे।[२]
फिर समवसरण में दिए देशना ज्ञानी, सबने पूजी जिनवाणी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
शुक्ला एकम् क्वांर को, घाति कर्म जयोऽस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सब कर्म हरे गिरिनारी से, फिर मिले मुक्ति की नारी से।[२]
देवों ने उत्सव करने की फिर ठानी, अब हम तो करें नमामि॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां (सप्तम्यां) मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री नेमिनाथ के ११ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

नेमिनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

नेमिनाथ के वरदत्त गणधर, वरदाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री वरदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वरदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

नेमिनाथ के खड्गानन जी, खड्गासन आहा।
ओम् ह्रीं श्री खड्गानन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री खड्गानन गणधराय अर्घ्यं...॥२॥

नेमिनाथ के मनगत गणधर, मनोविजय आहा।
ओम् ह्रीं श्री मनगत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री गणधराय अर्घ्यं...॥३॥

नेमिनाथ के शिष्य दंत जी, दंश हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री दंत गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री दंत गणधराय अर्घ्यं...॥४॥

नेमिनाथ के शिष्य सकोमल, सकुचित ना आहा।
ओम् ह्रीं श्री सकोमल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सकोमल गणधराय अर्घ्यं...॥५॥

नेमिनाथ के मणिदीप जी, मणिदीप आहा।
ओम् ह्रीं श्री मणिदीप गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मणिदीप गणधराय अर्घ्यं...॥६॥

नेमिनाथ के मदुर्य गणधर, मधुर करें आहा।
ओम् ह्लीं श्री मदुर्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मदुर्य गणधराय अर्घ्यं...॥७॥

नेमिनाथ के मेघनाद जी, मेघ गुणी आहा।
ओम् ह्लीं श्री मेघनाद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मेघनाद गणधराय अर्घ्यं...॥८॥

नेमिनाथ के सुंदरतल जी, सुंदर हैं आहा।
ओम् ह्लीं श्री सुंदरतल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुंदरतल गणधराय अर्घ्यं...॥९॥

नेमिनाथ के शिष्य कदंबक, कंदर्प हरें आहा।
ओम् ह्लीं श्री कदंबक गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री कदंबक गणधराय अर्घ्यं...॥१०॥

नेमिनाथ के शिष्य ज्येष्ठ जी, ज्येष्ठ रहे आहा।
ओम् ह्लीं श्री ज्येष्ठ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ गणधराय अर्घ्यं...॥११॥

पूर्णार्घ्य

(अडिल्ल)

नेमिनाथ के प्रथम शिष्य वरदत्त हैं।
अंतिम गणधर ज्येष्ठ निराले भक्त हैं॥
कुल ग्यारह गणधर हम पूजें अर्घ्य लें।
विद्या के सुव्रत को आतम पर्व दें॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथस्य वरदत्त-आदि एकादश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथस्य वरदत्त-आदि एकविंशति गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

नेमिनाथ प्रभु के रहे, ग्यारह शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके तपश्चरण की चर्चा, तीन लोक में गूँज रही।
जीवदया वैराग्य कथा को, सारी दुनियाँ पूज रही॥
अन्य-सभी तीर्थंकर से भी, जिनके अतिशय भिन्न रहे।
ऐसे नेमिनाथ जिनवर के, गुण गा हृदय प्रसन्न रहे॥ १॥
जयन्त विमान को तजकर स्वामी, नगर द्वारिका अवतारे।
समुद्रविजय शिवदेवी माँ को, देकर स्वप्न जगत तारे॥
छप्पन दिन छद्मस्थ बिता के, गिरिनारी पर्वत पर जा।
बने बाँस के नीचे ध्यानी, केवलज्ञान तभी उपजा॥२॥
ज्ञान पर्व देवों ने करके, समवसरण भी सजा दिया।
ग्यारह गणधर की संसद को, नेमिनाथ ने जगा दिया॥
पहले श्री वरदत्त शिष्य जी, अंतिम रहे ज्येष्ठ गणधर।
गुरु शिष्य के ऐसे रिश्ते, देते हैं सुख भर-भरकर॥३॥
इसीलिए तो हम भी आए, दूर कष्ट दुख करने को।
गुरु शिष्य की परम्परा में, खुद को शामिल करने को॥
हमको अगर आपने अपना, प्रियतम शिष्य बना डाला।
तो विश्वास दिलाते हैं हम, मुक्ति करेगी वरमाला॥४॥
कौरव पाण्डव सम न लड़ेंगे, नहीं महाभारत होगा।
झट हम भी गिरनार चढ़ेंगे, सुखी स्वस्थ भारत होगा॥

बचपन होगा कृष्ण सरीखा, बलदाऊ सा हो यौवन।
पाण्डव सम तप वृद्ध दशा हो, नेमिनाथ सम ब्रह्म रमण॥५॥
सजा-धजा तज विवाह मण्डप, नेंग और दस्तूर तजे।
तजे बराती त्यागी दुल्हन, राजुल को भी नेमि तजे॥
राजुल जैसे हमें न छोड़ो, थामो नाजुक हाथों को।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हर लो गम की रातों को॥६॥

(दोहा)

नेमिनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
वरदत्त सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री वरदत्तादि एकादश गणधर सहित श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य नेमि प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

दर्पण कभी
न रोया न हँसा हो
ऐसा सन्यास

श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

निर्बलता अब छोड़ कर, निर्मल भजो जिनेश।
प्रभु-पूजा वरदायिनी, वर पा बनो महेश॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! उपसर्गजयी।
हे चिंतामणि! अंतर्यामी!, हे पार्श्वनाथ! परिषह विजयी॥
जिनने अपने मानस तल पर, प्रभु! नाम किया अंकित तेरा।
वे अतिशय ऊर्जावान हुए, पा शक्ति, मुक्ति का पथ डेरा॥
तूफान घटा हो या आँधी, तो पार्श्वनाथ के भक्त कभी।
ना चंचल हों ना धैर्य तजें, हैरान नहीं हों दास सभी॥
वे कर्मजयी हों दयामई, जो पार्श्वनाथ को पाते हैं।
हम करें अर्चना कल्याणी, हो विश्वशान्ति यह ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम-मरण का क्या कहना? पर, असमय मरण कभी सोचे।
माँ के आँसू इतने बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे॥
जल से जनम मरण हरने को, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

आपस की टकरार भयंकर, जलें महावन भी इससे।
भवाताप का क्या कहना हो?, भव-भव में जलते इससे॥
चंदन से भव-ताप मिटाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

धरा रहेगी, धरा रहेगा, हमको तो निश्चित जाना।
मुट्ठी बाँधे सब आते पर, हाथ पसारे ही जाना॥
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन बस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

काँटों से हम बचते रहते, तभी फूल ना खिल पाते।
सम्यक् ना पुरुषार्थ करें तो, आत्म शान्ति भी ना पाते॥
पुष्प चढ़ाकर काम नशाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन कर ज्यों मौज उड़ाते, अगर बुराई त्यों खाएँ।
देह-व्याधियाँ लूट-मार सब, तत्क्षण जग से नश जाएँ॥
ये नैवेद्य क्षुधा रुज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप जला आरति करने से, शाम-रात क्या हट सकती?
पर श्रद्धा दीपक से अपनी, शाम-रात भी टल सकती॥
अपना श्रद्धा दीप जलाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले खुद, पर जग महके, उसे पराये राख करें।
ऐसे ही आतम का सौरभ, कर्म कीच रज नाश करे॥
खेकर धूप कर्म-रज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आज सँभालो कल सँभलेगा, हर मुश्किल का हल होगा।
पल मत खोना छल मत करना, मंजिल-पथ समतल होगा॥
विधिफल त्याग मोक्ष फल पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तज प्राणत सुर धाम।
वामा माँ के गर्भ में, वसे पार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायअर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री तपकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री पार्श्वनाथ के १० गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

पार्श्वनाथ तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

पार्श्वनाथ के शिष्य स्वयंभू, स्वयंभुवा आहा।
ओम् ह्रीं श्री स्वयंभू गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभू गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

पार्श्वनाथ के हलि गणधर जी, हलकर्त्ता आहा।
ओम् ह्रीं श्री हलि गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री हलि गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

पार्श्वनाथ के नतबल गणधर, नतमस्तक आहा।
ओम् ह्रीं श्री नतबल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री नतबल गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

पार्श्वनाथ के शिष्य निलंगद, निलय रूप आहा।
ओम् ह्रीं श्री निलंगद गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री निलंगद गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

पार्श्वनाथ के महानील जी, महा नयन आहा।
ओम् ह्रीं श्री महानील गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री महानील गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

पार्श्वनाथ के पुरुषोत्तम जी, पुरुषार्थी आहा।
ओम् ह्रीं श्री पुरुषोत्तम गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुषोत्तम गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

पार्श्वनाथ के भृनान गणधर, भ्रम ना दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री भृनान गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री भृनान गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

पार्श्वनाथ के सम्यक्त गणधर, सम्यक् हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री सम्यक्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

पार्श्वनाथ के देवगने जी, देवगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री देवगने गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री देवगने गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

पार्श्वनाथ के ज्ञानगोचर जी, ज्ञानगुणी आहा।
ओम् ह्रीं श्री ज्ञानगोचर गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगोचर गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

पूर्णार्घ्य

(पद्धड़ी)

श्री पार्श्वनाथ स्वामी जी के, हैं प्रथम स्वयंभू गणधर जी।
हैं अंतिम शिष्य ज्ञानगोचर, कुल शिष्य रहे दस गणधर जी॥
ले अर्घ्य अर्चनाएँ करके, हम देखें स्वप्न बनारस के।
सम्मेदशिखर 'सुव्रत' चाहें, निज 'विद्या' पद प्रभु पारस के॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य स्वयंभू-आदि दश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य स्वयंभू-आदि दश गणधरेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

पार्श्वनाथ प्रभु के रहे, दस श्री शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

संकट उपसर्गों से डरकर, जिनको जीवन दुख लगता।
पाप त्यागने से जो डरते, मोक्षमार्ग से भय लगता॥
अपनी हिम्मत हारे चुके जो, टूट चुके जो बिखर चुके।
वो पाकर पारस का सम्बल, ऋद्धि-सिद्धि पर संवर चुके॥१॥
दुख संकट उपसर्ग उन्हें अब, कभी सता ना सकते हैं।
उनका जीवन कुन्दन सम हो, जो पारस को भजते हैं॥
जी हाँ! ये वो ही पारस जो, जन्म बनारस लेते हैं।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा माँ के बेटे हैं॥२॥
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, तेईसवें तीर्थेश रहे।
आओ! उनकी कथा वाँच लें, जो हम सब के ईश रहे॥
प्राणत स्वर्ग त्यागकर आए, नगर बनारस जन्म लिए।
अश्वसेन वामा देवी को, देकर सपने धन्य किए॥३॥
यूँ छद्मस्थ चार माहों के, बाद कमठ के प्राणी ने।
दस भव के रिपु शम्बर बनकर, कष्ट दिए अभिमानी ने॥
सात दिनों तक महाभयंकर, उपसर्गों को पार्श्व छुए।
पद्मावति ने छत्र लगाया, फणारूप धरणेन्द्र हुए॥४॥
दूर हुआ उपसर्ग कमठ का, प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
दस गणधर की भरी सभा में, दिव्यध्वनि उपदेश हुआ॥

प्रथम स्वयंभू गणधर जिनके, अंत ज्ञानगोचर ज्ञानी।
गुरु शिष्य के रिश्ते नाते, पसंद करती जिनवाणी॥५॥
अतः पूजने हम आए हैं, शिष्य हमें स्वीकार करो।
सो उपसर्ग कमठ के ना हों, सुखी स्वस्थ संसार करो॥
स्वर्णभद्र की कूट शिखरजी, श्रावण शुक्ल सप्तमी को।
किये मोक्ष कल्याणक उत्सव, सबने मोक्ष सप्तमी को॥११॥
तब से अब तक पारस प्रभु के, जय-जयकारे गूँज रहे।
प्रभु जैसे उपसर्ग विजेता, बनने हम सब पूज रहे॥
क्षमा धरें भव पार करें हम, पूजा का फल यह देना।
'विद्या' के 'सुव्रत' को पारस, पारसमणि सम कर देना॥१२॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
स्वयंभू सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभू आदि दश गणधर सहित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य पार्श्व प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री महावीर पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जय महावीर-जय महावीर!,
शासननायक-जय महावीर।

जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनाएँ।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाएँ॥
अष्ट द्रव्य की थाल सजायी, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आए मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥

जय महावीर-जय महावीर!,
शासननायक-जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानन्दन, पाँच नाम को तुम धारो।

वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ाएँ शिव पद पाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ाएँ काम नशाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुए पर, कर्म झुलस भी ना पाए।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आए॥

जगत्-भूप को धूप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाएँ हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री महावीर जी के ११ गणधर अर्घ्यावली

(दोहा)

महावीर तीर्थेश को, करके नमोऽस्तु आज।
गणधर गुरुओं को भजें, मिले धर्म साम्राज्य॥

(अथ अर्घ्यावली प्रारभ्यते पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

महावीर के इंद्रभूति जी, प्रथम शिष्य आहा।
ओम् ह्रीं श्री इंद्रभूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री इंद्रभूति गणधराय अर्घ्यं...॥ १॥

महावीर के अग्निभूति जी, अग्नि हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री अग्निभूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अग्निभूति गणधराय अर्घ्यं...॥ २॥

महावीर के वायुभूति जी, वात हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्री वायुभूति गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री वायुभूति गणधराय अर्घ्यं...॥ ३॥

महावीर के शुचिदत्त जी, शुचि दाता आहा।
ओम् ह्रीं श्री शुचिदत्त गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शुचिदत्त गणधराय अर्घ्यं...॥ ४॥

महावीर के सुधर्म गणधर, सुधर्म दें आहा।
ओम् ह्रीं श्री सुधर्म गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री सुधर्म गणधराय अर्घ्यं...॥ ५॥

महावीर के माण्डव्य गणधर, मंडित हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री माण्डव्य गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री माण्डव्य गणधराय अर्घ्यं...॥ ६॥

महावीर के मौर्यपुत्र जी, मुख्य रहें आहा।
ओम् ह्रीं श्री मौर्यपुत्र गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मौर्यपुत्र गणधराय अर्घ्यं...॥ ७॥

महावीर के शिष्य अकम्पन, अकम्पन हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री अकम्पन गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पन गणधराय अर्घ्यं...॥ ८॥

महावीर के शिष्य अचल जी, अचल यंत्र आहा।
ओम् ह्रीं श्री अचल गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री अचल गणधराय अर्घ्यं...॥ ९॥

महावीर के मेदार्थ गणधर, मेधावी आहा।
ओम् ह्रीं श्री मेदार्थ गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री मेदार्थ गणधराय अर्घ्यं...॥ १०॥

महावीर के प्रभास गणधर, अंतिम हैं आहा।
ओम् ह्रीं श्री प्रभास गणधराय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभास गणधराय अर्घ्यं...॥ ११॥

पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

वर्तमान शासननायक के, इंद्रभूति हैं शिष्य प्रथम।
अंतिम हैं प्रभास गणधर जी, कुल ग्यारह को नमन-नमन॥

महावीर के शिष्य बनें हम, सम्यक् मार्ग दिखा देना।
अर्घ्य चढ़ाकर करें नमोऽस्तु, हम को पास बिठा लेना॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरस्य इंद्रभूति-आदि एकादश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्री महावीरस्य इंद्रभूति-आदि एकादश गणधरेभ्यो नमः

जयमाला

(दोहा)

महावीर प्रभु के रहे, ग्यारह शिष्य महान।
गणधर गुरु हम पूज लें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादिधारा, तीर्थंकर प्रभु चला रहे।
भव्य-जीव तो इस धारा में, निज को धुला रहे॥
तीर्थंकर चौबीस जिनेश्वर, समय-समय पर जन्म धरें।
वृषभनाथ से महावीर तक, जिनशासन को धन्य करें॥१॥
अंतिम प्रभु श्री वर्धमान जी, वर्तमान जिननायक हैं।
जिनके शासन तीर्थकाल में, आज तत्त्व सुख दायक हैं॥
आओ! उनकी कथा कहें जो, पंचम बालयतीश रहे।
माँ त्रिशला सिद्धार्थ राज के, श्री नंदन जगदीश रहे॥२॥
स्वर्ग त्यागकर कुण्डलपुर में, जन्म लिए मुनि पद ध्याये।
बारह वय छद्मस्थ विताकर, केवलज्ञान प्रभु पाए॥
किन्तु हुई ना दिव्यदेशना, तब गौतम को ज्ञान मिला।
मुनि बन प्रथम बने गणधर जो, कुल ग्यारह का साथ मिला॥३॥
अंतिम गणधर प्रभास ज्ञानी, गुरु शिष्य ने आत्म भजी।
बनी चंदना प्रथम आर्यिका, समवसरण की सभा सजी॥

विपुलाचल पर दिव्यध्वनि दे, समवसरण की सभा तजी॥
पावापुर के सरवर से फिर, मोक्ष गए सो मुक्ति भजी॥४॥
कार्तिक कृष्ण आमवस प्रातः, प्रभु निर्वाण पधारे थे।
हुआ मोक्ष कल्याणक उत्सव, लाडू भक्त चढ़ाए थे॥
उसी शाम को गौतम गणधर, केवलज्ञान प्रकट करते।
सो संध्या में दीप जलाकर, घर-घर दीपोत्सव करते॥५॥
तब से चले वीरशासन यह, हम सबका उद्धार करे।
भव-भव तक हम ऋणी रहेंगे, हम पर प्रभु उपकार करें॥
ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि पाएँ, पर्व दशहरा दीवाली।
'विद्या' के 'सुव्रत' यह चाहें, मिले सभी को खुशहाली॥६॥

(दोहा)

महावीर भगवान् के, पूजे गणधर नाम।
गौतम गुरु सम शिष्य हों, सो हम करें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री इंद्रभूति-आदि एकादश गणधर सहित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शिष्य वीर प्रभु के करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

समुच्चय पूर्णार्घ्य

(दोहा)

चौबीसों भगवान के, अलग-अलग वा साथ।
चौदह सौ बावन भजें, गणधर जी विख्यात॥
वृषभसेन को आदि ले, अंतिम रहे प्रभास।
करके नमोऽस्तु पूज लें, सफल करें संन्यास॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर सम्बन्धिनः वृषभसेनादि प्रभासपर्यंत एकसहस्र-चतुशतक-द्विपंचाशत (१४५२) गणधर-ऋषिवरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

वृषभसेन से प्रभास तक, गुरु गणधर को पूज।
जयमाला के नाम से, गूँजे नमोऽस्तु गूँज॥

(ज्ञानोदय)

गुरु-शिष्य की परम्परा तो, चलती आई अनादि से।
इस धारा से बचती आई, भव्यात्मा भव व्याधि से॥
यह सर्वोच्च दशा चलती है, तीर्थंकर वा गणधर से।
सो तीर्थंकर के हर गणधर, हम तो पूजें सिर धर के॥१॥
रागादिक जो विजय कर चुके, जीव श्रेष्ठ वो जिनवर हैं।
जिनवाणी आचरण कराएँ, कुपथ हरें गुरु ईश्वर हैं॥
जाग्रत रहकर जगत जगाएँ, महागुणी जग पूज्य रहे।
पराक्रमी विद्वान जगत के, हरते सब दुख दर्द रहे॥२॥
मनोबली हैं वचनबली हैं, कायबली हैं गुरुवर जी।
तीन लोक में पूज्य पुरुष हैं, वर्द्धमान हैं श्रीधर जी॥

मोक्षमार्ग में श्रेष्ठ रहे हैं, सिद्ध गुणों को प्राप्त हुए।
काम हस्ति को सिंह सरीखे, गुणसागर गुरु प्राप्त हुए॥३॥
गुरु बिन इस संसार जगत में, कहीं सफलता मिले नहीं।
गुरु बिन सुन लो मोक्षमार्ग में, आकुलता भी टले नहीं॥
गुरु-शिष्यों का मिलन अनोखा, हर त्यौहार पर्व देता।
और करूँ क्या अधिक प्रशंसा, हमको खुशी सर्व देता॥४॥
इसीलिए तो गुरु-शिष्यों के, चरणों में हर तीरथ हैं।
गुरु ही हैं भगवान हमारे, गुरु ही तो भागीरथ हैं॥
गुरु-दर्शन है सम्यग्दर्शन, गुरु-ज्ञान हैं सम्यग्ज्ञान।
गुरु चर्या सम्यक्चारित्रा, 'सुव्रत' का कर दो कल्याण॥५॥

(सोरठा)

शिष्यों का कल्याण, होता गणधर ज्ञान से।
सो करके गुणगान, शीघ्र मिलें भगवान से॥

ॐ ह्रीं श्री वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधिनः सकल गणधर-ऋषिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये समुच्चय-जयमाला सम्पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ऋद्धिधारि मुनिवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! गणधर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री विधान महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

आरती

(लय–छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥छूम छूम...
वृषभनाथ के वृषभसेन से, महावीर के प्रभास गणधर।–२
कुल चौदह सौ बावन, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
तीर्थंकर से सुनकर वाणी, करें प्रसारित जग कल्याणी।–२
पाप हरें सुख बाँटें, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
हमको अपना दास बना लो, दासों का अनुदास बना लो।–२
मोक्ष महल तो घुमा दो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
ज्ञान–ज्ञान की महिमा गाएँ, 'सुव्रत' ज्ञान चेतना ध्याएँ।–२
दुख अज्ञान नशाएँ, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

गुरु कृपा से
बाँसुरी बना मैं तो
ठेठ बाँस था